भाद्र मास, कृष्ण पक्ष 20 वर्ष, अंक 268 पृष्ठ 8 मूल्य 1.00

अखंड भारत संदेश

www.akhandbharatsandesh.net

प्रयागराज से प्रकाशित

नगर संस्करण प्रयागराज | बुधवार 22 सितम्बर 2021 | विश्व निर्माण एवं मानव विकास को दुतगति प्रदान करने हेतु क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान आश्रम की अनुपम भेंट

क्रियायोग संदेश

क्रिया योगः साँच (सच Truth) को आँच नहीं। आँच अज्ञानता (अविद्या Ignorance) समय, दूरी व सापेक्षता की अनुभूति है जो समस्त दुःखों का कारण है। अध्यात्मिक वैज्ञानिकों ने यह सिद्ध कर दिया है कि सामान्य तरीके से जीवन जीने पर सच की अनुभूति के लिए व्याधि रहित लगभग दस हजार वर्ष की आवश्यकता होती है, लेकिन क्रियायोग अभ्यास से सच की अनुभूति एक ही जन्म में सम्भव है।

1. प्राचीन उच्च मानव सभ्यता मे वर्णित यज्ञ, वर्तमान में विश्व विख्यात 'क्रियायोग' है।
2. क्रियायोग अभ्यास वेदपाठ है, पूर्ण ज्ञान की अनुभूति है।
3. क्रियायोग अभ्यास ईश्वर अनुभूति है।
4. क्रियायोग अभ्यास अतीत, वर्तमान व भविष्य से जुड़ना है।
5. क्रियायोग अभ्यास जीवन मृत्यु पर विजय है।

स्वामी श्री योगी सत्यम्
क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान संस्थान
प्रयागराज
10 मिनट का अभ्यास 20 वर्ष का विकास

बाघंबरी मठ में भावुक हुए सीएम योगी, बोले दोषियों को बख्शा नहीं जाएगा

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने बाघंबरी मठ पहुंचकर महंत नरेंद्र गिरि को श्रद्धांजलि अर्पित की। इस दौरान उनके साथ प्रदेश भाजपा अध्यक्ष स्वतंत्रदेव सिंह भी मौजूद रहे। सीएम योगी ने कहा कि उनका जाना संत समाज के लिए अपूरणीय क्षति है। उन्होंने कहा कि नरेंद्र गिरि के निधन से बेहद दुखी हूं। संत समाज की ओर से श्रद्धांजलि देने आया हूं।इस दुखद घटना से हम सब व्यथित हैं यह हमारे आध्यात्मिक और धार्मिक समाज की अपूरणीय क्षति है। मान अपमान की चिंता के बगैर उन्होंने प्रयागराज कुंभ को भव्यता के साथ आयोजित करने में योगदान दिया था। समाज और देश के हित में

किए जाने वाले हर निर्णय में उनका सहयोग प्राप्त होता था।

सीएम योगी ने कहा कि इस दुखद घटना से हम सभी दुखी हैं। कुंभ के सफल आयोजन में नरेंद्र गिरि का बड़ा योगदान था। इस दौरान सीएम योगी ने कहा कि पुलिस के चार बड़े अफसर मामले की जांच कर रहे हैं। एक-एक घटना का पर्दाफाश होगा। जो भी जिम्मेदार होगा, उसे सजा मिलेगी। दोषियों को कठोर सजा मिलेगी। दोषियों को बख्शा नहीं जाएगा। दोषी बचेगा नहीं, हर हाल में सजा मिलेगी। नरेंद्र गिरि मौत मामले की जांच जारी है इसलिए बेवजह की बयानबाजी से बचना चाहिए।

कोर्ट का समय बर्बाद नहीं होने देने के लिए झूठे मुकदमों पर रोक लगाने की जरूरत : सुप्रीम कोर्ट

नई दिल्ली (एजेंसी)। ऐसा मुकदमा आगे बढ़ाने की अनुमति नहीं दे सकती है जो कानूनी कार्रवाई करने की जरूरत नहीं पैदा करता हो। दरअसल, झूठे मुकदमों पर रोक लगाने की जरूरत है ताकि अदालतों का वक्त बर्बाद नहीं हो। जस्टिस एल नागेश्वर राव और न्यायमूर्ति बी आर गवई की पीठ ने अदालतों में दीवानी मुकदमे खारिज करने के मुद्दे से जुड़ी दीवानी दंड संहिता के ऑर्डर सात नियम 11 की व्याख्या पर आर बजोरिया नाम के व्यक्ति द्वारा दायर अपील पर महत्वपूर्ण फैसला सुनाते हुए यह कहा। न्यायालय ने कहा कि किसी दीवानी मुकदमे को खारिज करने का एक आधार यह है कि यह कानूनी कार्रवाई की जरूरत नहीं पैदा करता हो।

बच्चों के लिए जल्द आ सकती है कोरोना की वैक्सीन

भारत बायोटेक ने टीके के दूसरे-तीसरे चरण का ट्रायल किया पूरा

हैदराबाद (एजेंसी)। भारत में जल्द ही बच्चों के लिए कोरोना वायरस की वैक्सीन आ सकती है। मंगलवार को भारत बायोटेक ने कहा कि कंपनी के 18 साल से कम उम्र के बच्चों पर इस्तेमाल के लिए कोविड रोधी टीके कोवैक्सीन के दूसरे-तीसरे चरण का परीक्षण पूरा हो गया है और अगले हफ्ते तक भारत के औषधि महानियंत्रक (डीसीजीआई) को आंकड़े सौंपने की उम्मीद है। भारत बायोटेक इंटरनेशनल लिमिटेड के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक कृष्ण एल्ला ने कहा कि कोवैक्सीन का उत्पादन अक्टूबर में 5.5 करोड़ खुराकों तक पहुंच जाएगा, जो सितंबर में 3.5 करोड़ खुराक है। उन्होंने यह भी कहा कि कंपनी के कोविड-19 रोधी इंट्रानैज़ल टीके (नाक से दिया जाने वाला टीका) के दूसरे चरण का

परीक्षण अगले महीने तक पूरा होने की उम्मीद है। एल्ला ने कहा, बच्चों के कोवैक्सीन के दूसरे-तीसरे चरण का परीक्षण पूरा हो गया है। आंकड़ों का विश्लेषण किया जा रहा है। हम अगले हफ्ते तक आंकड़ों को (नियामक को) सौंप देंगे। स्वयंसेवकों की संख्या करीब एक हजार है। उन्होंने कहा कि इंट्रानैज़ल टीका नाक में ही प्रतिरक्षा प्रतिक्रिया दे सकता है जो कोरोना वायरस का प्रवेश द्वार है और इस तरह बीमारी, संक्रमण और संचरण से सुरक्षा प्राप्त हो सकती है।

एल्ला के मुताबिक, इंट्रानैज़ल टीके का परीक्षण तीन समूहों पर किया जा रहा है, जिनमें से एक समूह को पहली खुराक के तौर पर कोवैक्सीन टीका दिया गया और दूसरी खुराक के तौर पर इंट्रानैज़ल टीका दिया गया है यानी नाक से टीका दिया गया।

अब सरदार हुए खालिस्तानी, हमें बताते हैं पाकिस्तानी; बीजेपी पर महबूबा मुफ्ती ने बोला हमला

नई दिल्ली (एजेंसी)। पीडीपी चीफ महबूबा मुफ्ती ने एक बार फिर केंद्र सरकार पर तीखा हमला किया है। उन्होंने कहा कि अब सरदार खालिस्तानी हो गए, हम पाकिस्तानी हो गए, लगता है केवल भाजपा ही यहां हिंदुस्तानी बची है। महबूबा ने कहा कि दिल्ली में बैठे लोग जम्मू-कश्मीर को एक प्रयोगशाला की तरह से इस्तेमाल कर रहे हैं। केंद्र सरकार यहां पर केवल प्रयोग कर रही है। महबूबा मुफ्ती ने कहा कि नेहरू और वाजपेयी जैसे नेताओं में जम्मू-कश्मीर को लेकर एक विजन था। लेकिन वर्तमान सरकार किसी भी तरह से इस राज्य का भला करने में नाकाम रही है। उन्होंने केंद्र सरकार पर आरोप लगाते हुए कहा कि यह केवल हिंदू और मुसलमानों के बीच बंटवारा कर रही है। उन्होंने कहा कि अब सरदारों को खालिस्तानी बताया जा रहा है। हम लोगों को पाकिस्तानी बताया जा रहा है। तो क्या भारतीय जनता पार्टी ही हिंदुस्तानी रह गई है। इसके साथ ही उन्होंने राज्य में चल रहे परिसीमन पर भी सवाल उठाया। महबूबा ने यह भी कहा कि केंद्र सरकार केवल नाम बदल रही है। वह स्कूलों के नाम शहीदों के नाम पर रख रखी है, लेकिन नाम बदलने से बच्चों को रोजगार नहीं मिलेगा। पीडीपी चीफ ने कहा कि केंद्र सरकार तालिबान के बारे में बात कर रही है। वह अफगानिस्तान के बारे में बात कर रही है, लेकिन उसके पास इतनी फुरसत नहीं है कि वह किसानों या बेरोजगारों के बारे में भी बात कर ले।

यूके का रवैया भेदभावपूर्ण, हम भी लेंगे जवाबी एक्शन, कोविशील्ड पर भारत की चेतावनी

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत सरकार का कहना है कि ब्रिटेन ने कोरोना वैक्सीन कोविशीलड को मान्यता नहीं देकर भेदभावपूर्ण रवैया अपनाया है। साथ ही यह भी कहा कि अगर इसका कोई समाधान नहीं निकाला जाता है तो जवाबी कार्रवाई की जाएगी। विदेश सचिव हर्षवर्धन श्रृंगला ने आज कहा कि यूके सरकार का कोविशील्ड को मान्यता नहीं देने का निर्णय भेदभावपूर्ण है। उन्होंने यह भी कहा कि यह भारत के पारस्परिक उपाय करने के अधिकार के भीतर आता है। उन्होंने आगे कहा, 'कोविशील्ड की गैर-मान्यता एक भेदभावपूर्ण नीति है और यूके की यात्रा करने वाले हमारे नागरिकों को प्रभावित करती है। विदेश मंत्री ने ब्रिटेन के नए विदेश सचिव के समक्ष इस मुद्दे को मजबूती से उठाया है। मुझे

बताया गया है कि कुछ आश्वासन दिए गए हैं कि इस मुद्दे को सुलझा लिया जाएगा।'

आपको बता दें कि ब्रिटेन ने अपने कोविड-19 यातायात नियमों में बदलाव किए हैं लेकिन इसके साथ ही एक नए विवाद को जन्म भी दे दिया है। ब्रिटेन पर आरोप लग रहे हैं कि वह भारत के साथ भेदभाव कर रहा है। ब्रिटेन सरकार पर अब भारत से आने वाले यात्रियों के लिए तय नियमों समीक्षा करने का दबाव भी बढ़ता जा रहा है। ऐसा इसलिए क्योंकि ब्रिटेन ने नए नियमों के तहत 'कोविशील्ड' वैक्सीन लेने वालों को टीका लिया हुआ नहीं माना जाएगा, जबकि ऑक्सफोर्ड एस्ट्राजेनेका वैक्सीन पाए लोगों को

एयूकेयूएस बनने के बाद फ्रांस के राष्ट्रपति ने पीएम मोदी को लगाया कॉल, कहा- हिंद महासागर में साथ करेंगे काम

नई दिल्ली (एजेंसी)। फ्रांस के राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रॉन ने 21 सितंबर को पीएम नरेंद्र मोदी के साथ बातचीत की है। दोनों नेताओं ने हिंद-प्रशांत क्षेत्र में सहयोग को लेकर बातचीत की है। ब्रिटेन, ऑस्ट्रेलिया और अमेरिका द्वारा ऑकस ग्रुप बनाने के बाद मैक्रॉन ने पहली बार पीएम मोदी से बातचीत की है। न्यूज एजेंसी रॉयटर्स के मुताबिक मैक्रॉन और मोदी ने अफगानिस्तान में संकट जैसे मसलों पर भी चर्चा की है।

दोनों नेताओं ने एक खुले और समावेशी हिंद-प्रशांत क्षेत्र में संयुक्त रूप से कार्य करने की अपनी सामान्य इच्छा की पुष्टि की। इस दृष्टिकोण का उद्देश्य किसी भी तरह के आधिपत्य को खारिज करते हुए क्षेत्रीय स्थिरता और कानून के शासन को बढ़ावा देना है। दोनों नेताओं ने जलवायु परिवर्तन, कोरोना वायरस, आतंकवाद आदि को लेकर भी बातचीत की है। बता दें कि पिछले हफ्ते, ऑस्ट्रेलिया द्वारा फ्रांस के साथ अपने पिछले परमाणु पनडुब्बी सौदे को रद्द करने के बाद फ्रांस ने संयुक्त राज्य अमेरिका और ऑस्ट्रेलिया से अपने राजदूतों को वापस बुला लिया था।

मान्यता दी गई है। भारत में अधिकांश लोगों को कोविशील्ड टीका ही लगा है। यह ब्रिटेन के एस्ट्राजेनेका वैक्सीन का ही भारतीय वर्जन है। इसे भारत में सीरम इंस्टिट्यूट ऑफ इंडिया ने बनाया है, इसके बावजूद भारत को सूची से बाहर रखा गया है। ब्रिटेन में नेशनल इंडियन स्टूडेंट एंड एलुमनाई यूनियन (एआईएसएयू) की अध्यक्ष सनम अरोड़ा ने कहा, 'भारतीय छात्र इस बात से परेशान हैं कि उन्हें लगता है कि यह एक भेदभावपूर्ण कदम है क्योंकि अमेरिका और यूरोपीय संघ के उनके समकक्षों की तुलना में उनके साथ अलग व्यवहार किया जा रहा है।

आजादी की कीमत से युवा पीढ़ी को रूबरू कराने की जरूरत : योगी आदित्यनाथ

लखनऊ (एजेंसी)। नेपाल सीमा पर तैनात सशस्त्र सीमा बल (एसएसबी) के अदम्य साहस और सूझबूझ की प्रशंसा करते हुए उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि देश की युवा पीढ़ी को आजादी की कीमत से परिचित कराने की जरूरत है। अपने सरकारी आवास पर स्वतंत्रता के 75वें स्वर्णिम वर्ष में आजादी के अमृत महोत्सव की श्रृंखला में सीएम योगी ने मंगलवार को एसएसबी द्वारा आयोजित साइकिल रैली को लखनऊ से दिल्ली के लिए झण्डी दिखाकर रवाना करते हुये कहा कि सशस्त्र सीमा बल एक फोर्स के रूप में नहीं, बल्कि राष्ट्र के प्रति अपने उत्तरदायित्वों के निर्वहन के साथ-साथ स्थानीय नागरिकों के साथ आत्मीय सम्बन्ध बनाए जाने के लिए जाना जाता है।

नेपाल की संवेदनशील सीमा पर वर्ष 2001 से एसएसबी द्वारा निरन्तर निगरानी और पेट्रोलिंग की कार्यवाही की जा रही है। एसएसबी ने सदैव भारत-नेपाल व भूटान के ऐतिहासिक व पौराणिक सम्बन्धों को बेहतर बनाने का कार्य किया है।

सीएम ने कहा कि उत्तर प्रदेश की लगभग 600 किलोमीटर की सीमा नेपाल से जुड़ी हुई है। एसएसबी ने एक दक्ष फोर्स के रूप में अपनी पहचान बनाई है। परम्परागत व पेशेवर इंटेलीजेंस तो महत्वपूर्ण होती ही है, लेकिन ह्यूमन इंटेलीजेंस का अपना अलग महत्व है क्योंकि आम नागरिक स्थानीय स्तर पर सटीक व सही जानकारी रखता है, जो आन्तरिक व वाह्य सीमा सुरक्षा के लिए अत्यन्त आवश्यक है।

यूपी सीएम योगी आदित्यनाथ ने किया ऐलान

सही समय पर धूमधाम से आएगा जनसंख्या नियंत्रण कानून

लखनऊ (एजेंसी)। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने मंगलवार को कहा कि राज्य सरकार सही समय पर जनसंख्या नियंत्रण के लिए कानून लाएगी। उन्होंने हर चीज का एक सही समय होता है और इसे सही जगह पर करना होता है। जब जनसंख्या कानून लाया जाएगा, तो यह मीडिया के ज्ञान में धूमधाम से किया जाएगा क्योंकि हम चुपचाप कुछ भी करने में विश्वास नहीं करते हैं। सीएम योगी आदित्यनाथ ने कहा कि बीते जुलाई में जनसंख्या नियंत्रणो पर एक मसौदा बिल उत्तर प्रदेश विधि आयोग की वेबसाइट पर डाला गया था, जिसमें महीने की 19 तारीख तक जनता से सुझाव मांगे गए थे। इसमें कहा गया है कि उत्तर प्रदेश में दो से अधिक बच्चे वाले लोगों को स्थानीय निकाय चुनाव लड़ने, सरकारी नौकरियों के लिए आवेदन करने या किसी भी प्रकार की सब्सिडी प्राप्त करने से रोक दिया जाएगा।

दिल्ली से गिरफ्तार कपल अफगानिस्तान से तस्करी करके लाया था हेरोइन? ईडी ने शुरू की पड़ताल

नई दिल्ली (एजेंसी)। गुजरात के पोर्ट से बरामद हुई 3000 किलो हेरोइन को लेकर जांच-पड़ताल तेज हो गई है। गुजरात के मुंद्रा बंदरगाह से दो कंटेनरों में रखी करीब 3,000 किलोग्राम हेरोइन जब्त किए जाने के मामले में प्रवर्तन निदेशालय ने मनी लांड्रिंग की जांच शुरू की है। गौरतलब है कि जब्त मादक पदार्थ की कीमत अंतरराष्ट्रीय बाजार में 21,000 करोड़ रुपये आंकी गई है। बताया जा रहा है कि यह भारत में अभी तक हेरोइन की सबसे बड़ी जब्ती है। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी इस तरह का यह पहला मामला है। वहीं इस मामले में दिल्ली से एक कपल की गिरफ्तारी हुई है। अधिकारियों ने बताया कि ईडी जांच एजेंसी हाल ही में हुई रिकॉर्ड जब्ती के मामले का अध्ययन कर रही है। साथ ही पीएमएलए के तहत प्रक्रिया आगे बढ़ा रही है। एजेंसी ने मादक पदार्थ की जब्ती के संबंध में राजस्व खुफिया निदेशालय (डीआरआई) द्वारा दर्ज की गयी शिकायत की प्रति भी मांगी है।

राफेल डील को परवान चढ़ाने वाले वीआर चौधरी होंगे नए वायुसेना प्रमुख, 30 सितंबर को रिटायर हो रहे भदौरिया

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत सरकार ने एयर मार्शल वीआर चौधरी को वायुसेना का अगला अध्यक्ष नियुक्त करने का फैसला लिया है। वीआर चौधरी वर्तमान में वाइस चीफ ऑफ एयर स्टाफ की जिम्मेदारी संभाल रहे हैं। बता दें कि मौजूदा वायुसेना प्रमुख एयर चीफ मार्शल आरकेएस भदौरिया 30 सितंबर 2021 को सेवा रिटायर हो रहे हैं। वायुसेना के डिप्टी चीफ होने के नाते वीआर चौधरी राफेल प्रोग्राम से भी काफी करीब से जुड़े थे। वह फ्रांस में लड़ाकू विमान परियोजना की प्रगति की निगरानी करने वाले द्विपक्षीय उच्च स्तरीय ग्रुप के प्रमुख भी थे। एयर मार्शल वीआर चौधरी, पीवीएसएम, एवीएसएम, वीएम, को 29 दिसंबर 1982 को भारतीय वायु सेना के फाइटर स्ट्रीम में कमीशन किया गया था। उन्होंने वर्तमान में वाइस चीफ ऑफ एयर स्टाफ सहित विभिन्न स्तरों पर विभिन्न कमांड, स्टाफ की जिम्मेदारी संभाल चुके हैं।वीआर चौधरी 1 अगस्त, 2020 से पश्चिमी वायु कमान के प्रमुख थे। उन्हें एक लड़ाकू पायलट के रूप में 29 दिसंबर, 1982 को भारतीय वायुसेना के फाइटर स्ट्रीम

में शामिल किया गया था और उन्होंने लगभग 39 वर्षों की सेवा की है। वीआर चौधरी के पास 3800 घंटे से अधिक के उड़ान का अनुभव है और वे विभिन्न प्रकार के लड़ाकू और प्रशिक्षक विमान उड़ाए हैं।

एयर मार्शल विवेक राम चौधरी की नियुक्ति के बारे में जानकारी देते हुए, भारत सरकार के रक्षा मंत्रालय के प्रधान प्रवक्ता, ए भारत भूषण बाबू ने आज अपने आधिकारिक ट्विटर हैंडल पर कहा कि सरकार ने एयर मार्शल वीआर चौधरी, पीवीएसएम, एवीएसएम, वीएम को वर्तमान में वाइस चीफ ऑफ एयर स्टाफ के रूप में अगले वायुसेनाध्यक्ष के रूप में नियुक्त करने का निर्णय लिया है।

युवाओं के जरिए खुद को बदलेगी कांग्रेस, नए तेवर का हिस्सा होंगे कन्हैया, जिग्नेश, हार्दिक और पीके

नई दिल्ली (एजेंसी)। एक के बाद एक चुनाव हार चुकी कांग्रेस अब खुद को बदलने की तैयारी कर रही है। पार्टी की नजर विधानसभा के साथ लोकसभा चुनाव पर है। चुनाव में जीत की दहलीज तक पहुंचने के लिए पार्टी जातीय समीकरणों के साथ युवाओं पर दांव लगाएगी। ताकि, 2024 के चुनाव में जीत हासिल की जा सके। कांग्रेस के सामने सबसे बड़ी चुनौती कमजोर संगठन है। इसके साथ पार्टी की जीत का सवर्ण, दलित और मुसलिम फार्मूला बिखर चुका है। इसलिए, पंजाब में जहां चरणजीत सिंह चन्नी को मुख्यमंत्री बनाकर पार्टी दलितों को फिर राजनीतिक बहस के केंद्र में लाई है। वहीं, पीढीगत बदलाव भी किया है। युवाओं को साथ जोड़ने के लिए कांग्रेस हर राज्य में महाअभियान चलाने की तैयारी कर रही है। इसके तहत पार्टी ऐसे युवाओं को जोड़ने की कोशिश करेगी, जो आंदोलन और संघर्ष से निकले हों। कन्हैया कुमार और जिग्नेश मेवाणी ऐसे ही युवा है।

खबर संक्षेप

घूरपुर में अज्ञात महिला का मिला शव हड़कंप

घूरपुर। इलाके के बोंगी गाव के नहर के बगल एक कुटी के पास एक अज्ञात महिला का शव देख लोगों मे हड़कंप हो गया। सूचना पर पहुंची पुलिस जांच पड़ताल कर शव को पीएम के लिए भेज दिया। मंगलवार की शाम बोंगी गांव के नहर के बगल एक कुटी के समीप एक 65 वर्षीय अज्ञात महिला का शव पड़ा देख लोगों में हड़कंप हो गया। सूचना पर पहुंची पुलिस जांच पड़ताल कर शिनाख्त की कोशिश करवाई लेकिन शिनाख्त नहीं हो सका। एसओ राकेश राय ने बताया कि आस पास के लोगो ने बताया कि महिला बीमारी हालत में थी। उसे वहां पर काफी देर तक बैठे देखी गई थी। उसके पास से कुछ दवा भी मिली है। पुलिस जांच पड़ताल कर रही।

एजे पैसेंजर ट्रेन चलाये जाने की मांग

जंघई। प्रयागराज से जौनपुर आने जाने वाली एजे पैसेंजर को पूर्व की भांति चलाये जाने के लिए जंघई क्षेत्र के लोगों ने मांग की है ।गौरतलब है कि इस ट्रेन का आवागमन कोविड 19 के कारण से रेलवे ने बन्द कर दिया है। जिससे जंघई जरौना सहित आसपास के लोगों को जनपद जौनपुर व प्रयागराज आने जाने में कठिनाई का सामना करना पड़ रहा है।

मण्डलायुक्त ने नैनी में बन रहे इलेक्ट्रानिक बसों के चार्जिंग स्थल का किया स्थलीय निरीक्षण

- कार्य की प्रगति धीमी पाये जाने पर व्यक्त की नाराजगी कार्यदायी संस्था सीएनडीएसव पीएमआईको गुणवत्ता के साथ कार्यों में तेजी का दिया निर्देश

अखंड भारत संदेश

नैनी में बन रहे इलेक्ट्रानिक बसों के चार्जिंग स्थल का स्थलीय निरीक्षण करते मण्डलायुक्त व अन्य।

नैनी। मण्डलायुक्त संजय गोयल मंगलवार को नैनी में बन रहे इलेक्ट्रानिक बसों के चार्जिंग स्थल का स्थलीय निरीक्षण किया। स्थलीय निरीक्षण में कार्य की प्रगति संतोषजनक न पाये जाने पर उन्होंने कड़ी नाराजगी व्यक्त करते हुए कार्यदायी संस्था सीएनडीएस व पीएमआई को श्रमिकों सहित अन्य संसाधनों की संख्या बढ़ाते हुए कार्यों में तेजी लाये जाने का निर्देश दिया है। साथ ही साथ उन्होंने यह भी कहा है कि जब तक कार्य की प्रगति संतोष जनक न पायी जाये, तब तक सम्बंधित ठेकेदार के पैसे का भुगतान न किया जाये। उन्होंने दोनों कार्यदायी संस्थाओं को समय सारिणी बनाकर उसी के अनुसार कार्य कराये जाने का निर्देश दिया है। उन्होंने कहा है कि कार्य की गुणवत्ता में किसी भी प्रकार की कमी नहीं होनी चाहिए। उन्होंने इण्टर लाकिंग, पार्किंग, पानी निकासी, लेवलिंग तथा अन्य कार्यों को श्रमिकों की संख्या को बढ़ाते हुए शीघ्रता से कराये जाने का निर्देश दिया है। मण्डलायुक्त ने विद्युत ट्रांसफार्मरों की भी जांच कराये जाने का निर्देश दिया है। उन्होंने दोनों कार्यदायी संस्थाओं के वरिष्ठ अधिकारियों को वहां पर स्वयं रहते हुए कार्य को गुणवत्ता के साथ शीघ्रता से पूर्ण कराये जाने के लिए कहा है। इस अवसर पर आरएम रोडवेज तथा सीएनडीएस एवं पीएमवाई कार्यदायी संस्थाओं के अधिकारीगण, स्मार्ट सिटी के अधिकारीगण के अलावा अन्य सम्बंधित लोग मौजूद रहे।

न्यूज झरोखा

मोटरसाइकिल चोरी वारदात : सीसीटीवी फुटेज के जरिए पुलिस चोरों के करीब

करछना। थाना के अंतर्गत साधु कुटी चौराहा नियर अंकित ऑटोमोबाइल की दूकान से सुजीत कुमार तिवारी पुत्र त्रिभुवन नाथ तिवारी निवासी सेमरी मंगलवार को अंकित ऑटोमोबाइल्स की दुकान पर सामान लेने आया था जहां पर चोरों ने उसकी मोटरसाइकिल पार कर दिया ,जिसकी सूचना पीडित ने करछना पुलिस को दी। जिस पर राकेश सिंह थानाध्यक्ष, कमलेश यादव,कृष्णा, राजीव यादव और अन्य साथी मौके पर जाकर देखा कि दूकान के बाहर सीसीटीवी कैमरा लगा है उसका फुटेज खगाले जाने पर पुलिस के हाथ सुराग लगें जिस पर पुलिस चोरों तक जल्द पहुचने का दावा कर रही हैं । इसके दो दिन पूर्व भी एक और मोटरसाइकिल करछना बाजार से राहुल चौरसिया की चोरी चली गई थी जिसका आज तक पता नहीं चल पाया है कि आज दूसरी घटना को चोरों ने अंजाम दिया।

डॉक्टर की लापरवाही से चली गई महिला की जान

उतरांव। उतराव थाना क्षेत्र के फरीदपुर गांव में डाक्टर की लापरवाही से एक महिला की जान चली गई। नाराज लोगों ने प्रदर्शन कर तहरीर देकर कार्रवाई की मांग की है। फरीदपुर गांव निवासी मजदूर उमेश कुमार की पत्नी सुनीता देवी 22 वर्ष जो गर्भवती थी मई महीने में पेट दर्द होने पर घर के लोग सुनीता को रहीमापुर स्थित अस्पताल ?मे लेकर भागे । वहां आपरेशन के बाद महिला को बेटी पैदा हुई। उसके बाद डाक्टरों की लापरवाही से महिला के पेट में कपड़ा छुट गया। जिससे महिला की 20 सितंबर की रात मौत हो गई। महिला के दो मासूम बच्चे हैं। मौत से बच्चों का रो रो कर बुरा हाल हाल हो गया है। मंगलवार को नाराज ग्रामीणों ने ग्राम प्रधान रामचन्द्र फांसी की अगुवाई में प्रदर्शन कर लापरवाह डाक्टरों के खिलाफ कार्रवाई की मांग की है।

चोरी के मुकदमे में वांछित अभियुक्त को किया गिरफ्तार

मेजा रोड। थाना मेजा पुलिस द्वारा चोरी के मुकदमे में वांछित अभियुक्त संजय यादव को गिरफ्तार किया गया पुलिस उपमहानिरीक्षक/ वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक प्रयागराज सर्वश्रेष्ठ त्रिपाठी द्वारा अपराध एवम अपराधियो के विरुद्ध चलाये गये अभियान व वांछित अभियुक्तो की गिरफ्तारी के सम्बन्ध में दिये गये निर्देश व पुलिस अधीक्षक यमुनापार सौरभ दीक्षित व सीओ मेजा डॉक्टर भीम कुमार गौतम के पर्यवेक्षण में प्रभारी निरीक्षक थाना मेजा अरुण कुमार चतुर्वेदी के कुशल नेतृत्व में गठीत पुलिस टीम उपनिरीक्षक पंकज त्रिपाठी चौकी प्रभारी मेजारोड व का0 प्रांशु ने रामनगर तिराहे थाना मेजा से चोरी के मुकदमे में वांछित अभियुक्त संजय यादव पुत्र विनेन्द्र कुमार यादव ग्राम शिव वंश राय थाना मेजा जनपद प्रयागराज उम्र लगभग18 वर्ष को गिरफ्तार कर आवश्यक विधिक कार्यवाही करते हुये जेल भेजा गया।

डाक्टर गंगेश दीक्षित हिन्दी विभाग के विभागाध्यक्ष बने

जंघई। नागरिक पीजी कालेज जंघई के असिस्टेंट प्रोफेसर डाक्टर गंगेश दीक्षित नागरिक पीजी कालेज जंघई में हिन्दी विभाग के विभागाध्यक्ष बनाये गए हैं। प्राचार्य डाक्टर प्रमोद कुमार तिवारी ने वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय जौनपुर की सूची में वरिष्ठता के आधार पर उनको विभागाध्यक्ष नियुक्त किया है ।अपनी नियुक्ति पर डाक्टर गंगेश दीक्षित ने सभी के प्रति आभार प्रकट करते धन्यवाद ज्ञापित किया है। इस अवसर हिन्दी विभाग में ममता यादव, विकाश यादव, कुलदीप सोनी, सुनील कुमार, डॉ वंदना श्रीवास्तव, डॉ रत्नेश शुक्ल, शोध छात्रा मंजू यादव, पूजा वर्मा आदि लोग मौजूद रहे।

सड़कों की खस्ता हाल से कांग्रेसियों ने जताया रोष

अखंड भारत संदेश

सड़क पर हुई गड्ढे के पास बैठ कर रोष जताते कांग्रेसी।

सहसों। आम जनमानस के हितों का ध्यान रखते हुए। कांग्रेस पार्टी के कार्यकताओं का एक समूह का नेतृत्व करते हुए पूर्व जिला उपाध्यक्ष अशफाक अहमद ने सभी के साथ ग्राम सभा कनौजा, आटा आदि गांव में जाकर किसानों, मजदूरों, बेरोजगार नवयुवकों से मिलकर उनकी समस्याओं से अवगत होते हुए कांग्रेस पार्टी की नीतियों और सिद्धांतों के बारे में विस्तार से चर्चा की। ग्रामीणों ने एक स्वर से सड़कों की खस्ताहाल स्थिति के बारे में बताते हुए कहा कि आए दिन सड़कों पर बड़े-बड़े गड्ढों के कारण आकस्मिक दुर्घटनाएं होती रहती हैं। जिस पर रोष व्यक्त करते हुए अशफाक अहमद ने कहा शासन प्रशासन द्वारा इस पर कोई भी ध्यान नहीं दे रहा है। भाजपा सरकार बनने के बाद सरकार ने वादा किया था कि एक माह के भीतर सड़कों को गड्ढा मुक्त कर दिया जाएगा परन्तु दूसरा चुनाव नजदीक आ गया है फिर भी सड़कों की स्थिति बद से बदतर हो गई है। मौके पर मौजूद कांग्रेस के वरिष्ठ नेता एवं अधिवक्ता देवराज उपाध्याय ने कहा सहसों से फूलपुर के मध्य कई जगह बहुत बड़े-बड़े गड्ढे हो गए हैं जिससे आए दिन दुर्घटनाएं घट रही हैं। इलाहाबाद से गोरखपुर मार्ग पर रात दिन आवागमन चलता रहता है जिससे दुर्घटनाएं और भी होने की संभावनाएं रहती हैं। सरकार से मांग की जाती है कि सहसों से फूलपुर तक के बीच में बड़े-बड़े गड्ढों को अभिलंब पैकिंग किया जाए अन्यथा कांग्रेस पार्टी के कार्यकर्ता जिलाधिकारी कार्यालय पर घेराव और अनशन करने के लिए बाध्य होंगे। इस अवसर पर प्रमुख रूप से अमन मिश्रा उर्फ भीम, डॉ मजहर आलम, मोहम्मद हबीब, जय सिंह, दिलीप दुबे, इरफान, कृष्ण चंद्र शुक्ला, मोहम्मद इकराम, कन्हैया लाल मौर्या, गौरव, मोहम्मद अरमान, साधू बिंद, मुन्ना बिंद, बैजनाथ दुबे आदि उपस्थित रहे।

करछना विधायक के गांव की दलित महिला की जमीन व मकान पर दबंग का कब्जा

करछना। गांव की जनता सांसद और विधायक को इस लिए वोट देकर चुनती हैं कि गांव देश की भलाई के साथ साथ गरीबों को सुख सुविधाओं का मोहताज न होना पडे । लेकिन यह दिलचस्प होगा कि विधानसभा करछना के विधायक उज्वल रमण सिंह व विधायक के पिता राज्य सभा सांसद हैं इनके पैतृक गांव बरांव स्टेट करछना हैं उक्त गांव की एक आदिवासी बृद्ध महिला ललिता देवी पत्नी दुर्गा प्रसाद के पास रहने केलिए जमीन नहीं थी, किसी तरह मेहनत मजदूरी करके पांच साल पहले बरांव गांव में ही छह विघ्वा आराजी 1075 जमीन का बैनामा कराया था, जिस पर एक आशियाना बना कर अपने परिवार के साथ अपनी एक बिधवा बेटी उषा देवी के साथ रहते आ रहे थें । जिस पर पडोसी गांव नौवां का चंद्रमा प्रसाद वर्तमान में वह करछना थाने में चौकीदारी की नौकरी करता है ।दबंगई और शातिराना अंदाज मे ललिता देवी की जमीन को कब्जा लिया और उसे बेघर कर दिया है, अभी हाल में तहसील प्रशासन व करछना थाना पुलिस टीम ने पीड़ित महिला की जमीन की पैमाइश कर चिन्हीत कर दिया था लेकिन दबंग द्वारा कब्जे वाली जमीन व मकान पर पीड़िता को कब्जा नही दिलाया गया।

जमीन विवाद में दलित विधवा की पिटाई , दी तहरीर

करछना। थाना क्षेत्र के नौवा गांव की एक आदिवासी विधवा को एक पडोसी दंबग ने अपने पत्नी और बेटियों के साथ मिलकर लाठी डंडे और लात घूसो से जम कर पिटाई कर दी ।पीड़िता ने नाम जद आरोपियों के खिलाफ कार्रवाई केलिए लिखित शिकायत दर्ज कराई है, लेकिन करछना पुलिस पीडित महिला की न तों डाक्टरी कराया और नहीं आरोपियों के खिलाफ कार्रवाई करने की जहमत उठाया हैं ।घटना मंगलवार सुबह नौ बजे की हैं, जब पीडिता उषा देवी पुत्री दुर्गा प्रसाद अपनी माँ ललिता देवी के नाम भूमि धरी जमीन पर बनें गौशाला में मवेशियों को चारा डालने गयी थी तभी, पडोसी चंद्रमा प्रसाद उसकी पत्नी श्याम कली व उसकी बेटियों में रुक्मणी, सुषमा आदि कयी महिलाओं ने मिल कर उषा देवी को लाठी डंडे से से जम कर पिटाई कर दी ।जिससे बह बुरी तरह से घायल हो गई , और गंभीर चोटें आई हैं, मामले की शिकायत पीडिता ने करछना थाने में लिखित शिकायत की हैं ।देर शाम तक पुलिस द्वारा कार्रवाई न करने पर दोनों पक्षो में तनाव की स्थिति बनी हुई है ।

श्रीमद् भागवत सप्ताह कथा यज्ञ संपन्न

हंडिया। सैदाबाद विकास खंड के ग्राम सभा खपटिहा में समाजसेवी वरिष्ठ भाजपा नेता विद्या कांत सांवरे लाल तिवारी के आवास पर चल रहे श्रीमद् भागवत कथा कार्यक्रम का समापन मंगलवार को किया गया। कथा समाप्ति पर विधि विधान के साथ हवन पूजन किया गया तत्पश्चात प्रसाद का भी वितरण कराया गया जहां पर भक्तों ने जमकर प्रसाद का आनंद लिया ।स्वामी हरिहरानंद जी महाराज द्वारा भक्तों को मनोहारी कथा का प्रवचन सुनाया गया कथा सुनकर भक्त गण भाव विभोर हो उठे। वहीं पर आयोजक विद्या कांत सांवरे लाल तिवारी ने सभी भक्तों के प्रति आभार जताया। वहीं पर चंदौहा से आए प्रभाकर शुक्ला ने उद्बोधन एवं भजन गाकर भक्तों को भाव विभोर कर दिया।

मेजा ऊर्जा निगम हिन्दी में कार्य करने के लिए कृत संकल्प : राकेश कुमार

अखंड भारत संदेश

- हिन्दी पखवाड़ा दिवस समारोह में सुप्रसिद्ध कवियों ने बांधा समां, आतंरिक काव्य सम्मेलन में प्रतिभावान कर्मचारियों ने बिखेरा जलवा
- राजेन्द्र सिंह राज्य विश्व विद्यालय विभागाध्यक्ष ने किया हिन्दी व्याख्यान
- मेजा ऊर्जा निगम 6 सितम्बर से 18 सितम्बर तक मनाया गया हिन्दी पखवाड़ा, समय-समय पर निगम में होती रहती है हिन्दी प्रतियोगिताए

हिन्दी पखवाड़ा दिवस में लोगों को सम्बोधित करते निगम के मु.का.अ. राकेश कुमार एवं काव्य पाठ करते मशहूर कवि

मेजा। हिन्दी न केवल हमारी राजभाषा है बल्कि पूरे देश को एकता के सूत्र में बाँधने वाली सम्पर्क भाषा भी है। हिन्दी भाषा का अधिकाधिक प्रयोग हमारा नैतिक एवं संवैधानिक दायित्व है। मेजा ऊर्जा निगम कार्यक्षेत्र में शत प्रतिशत हिन्दी में कार्य करने के लक्ष्य प्राप्ति के लिए कृत संकल्प है। उक्त उद्गार मेजा ऊर्जा निगम के मुख्य कार्यकारी अधिकारी राकेश कुमार ने बीते 6 सितम्बर से 18 सितम्बर तक निगम में हर्षोउल्लास पूर्ण महौल मनाये जाने वाले हिन्दी पखवाड़ा दिवस कार्यक्रम के दौरान उपस्थित लोगों को सम्बोधित करते हुए व्यक्त किया। उन्होनें कहा कि हिन्दी एक सरल सहज एवं समृद्ध भाषा है और इसमें सभी भावनाओं को अभिवक्त करने की पूर्ण क्षमता है। मुख्य कार्यकारी अधिकारी ने हिन्दी पखवाड़ा दिवस के दौरान मेजा ऊर्जा निगम में कर्मचारियों उनके परिजनों और सहयोगी संस्थाओं के विभिन्न प्रकार की हिन्दी प्रतियोगितायें जैसे हिन्दी प्रश्नोत्तरी आन लाइन क्विज, स्लोगन प्रतियोगिता तथा निबंध प्रतियोगिता इत्यादि समय-समय पर आयोजित की जाती रही है। जिसमें निगम के अलावा कई अन्य सहयोगी संस्थायें काफी बढ़ चढ़ कर अपनी भागीदारी करती रही है। उन्होनें कहा कि पखवाड़े के दौरान हिन्दी दिवस अवसर पर प्रोफेसर राजेन्द्र सिंह राज्य विश्वविद्यालय प्रयागराज के हिन्दी विभाग के विभागाध्यक्ष डा0 आशुतोष सिंह द्वारा एक हिन्दी व्याख्यान के अलावा राजभाषा प्रतिज्ञा लेने के साथ - साथ सुलेख व हस्ताक्षर प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया। श्री राकेश कुमार ने बताया कि इस दौरान राष्ट्र ख्याति प्राप्त कवियों द्वारा प्रस्तुत किया गया कवि सम्मेलन हिन्दी पखवाड़े का मुख्य आकर्षण रहा जिसमें अरूण जैमिनी, भुवन, मोहिनी, अनिल चैबे, राजेन्द्र व प्रियांशु, जैसे ख्याति प्राप्त कवियों ने सराहनीय काव्य पाठ किया जिससे मेजा ऊर्जा निगम के स्रोत सुधी, श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। इतना ही नही हिन्दी पखवाड़ा दिवस के दौरान आंतरिक काव्य सम्मेलन का भी आयोजन किया गया जिसमें प्रतिभावान कर्मचारियों ने काव्य पाठ करके उपस्थित श्रोताओं को भाव विभोर कर दिया। निगम के मुख्य कार्यकारी अधिकारी राकेश कुमार ने अपील जारी करते हुए कहा कि हम सभी लोगों को अपने कार्यक्षेत्र में सत प्रतिशत हिन्दी में कार्य करने के लक्ष्य को प्राप्त करना है। हिन्दी पखवाड़ा दिवस कार्यक्रम के अंत में उपस्थित लोगों का आभार प्रकट करते हुए मुख्य कार्यकारी अधिकारी ने हिन्दी पखवाड़ा दिवस में सहभागिता के लिए धन्यवाद दिया और कहा कि मेजा ऊर्जा निगम कार्यक्षेत्र में सत प्रतिशत हिन्दी में कार्य करने के लिए कृत संकल्प है। उन्होने हिन्दी पखवाड़े के सफल आयोजन के लिए मानव संसाधन विभाग एवं राजभाषा अनुभाग को विशेष रूप से धन्यवाद दिया है।

सप्ताह भर से फूंका ट्रांसफॉर्मर नाराज ग्रामीणों ने एक्सईएन कार्यालय का किया घेराव

अखंड भारत संदेश

मेजा रोड। मेजारोड बाजार के जानकीगंज कस्बे का ट्रांसफार्मर पिछले एक सप्ताह से फूंका पड़ा है। जिससे ग्रामीणों को बिजली व पानी की एक-एक बूंद के लिए तरसना पड़ रहा है। मंगलवार को नाराज ग्रामीण एक्सईएन कार्यालय का घेराव कर जल्द ट्रांसफार्मर लगाने की मांग किया है। बता दें कि जानकीगंज के ग्रामीण पिछले एक सप्ताह से बिना बिजली के उमस भरी गर्मी के चलते बेहाल हैं। ग्रामीणों का आरोप है कि संबंधित बिजली विभाग के अधिकारियों को कई बार इस मामले से अवगत कराया गया लेकिन कोई जवाब नहीं मिला। समाजसेवी आनंद केशरी सहित दर्जनों ग्रामीणों ने जेई लवकुश बिंद के ऊपर आरोप लगाते हुए कहा कि जब ट्रांसफार्मर फूंकने की बात बताई गई तो उन्होंने कहा कि ग्रामीण क्षेत्र मे फूंका ट्रांसफार्मर महीनों मे लगता है। देखा जाए तो प्रदेश सरकार 24 घंटे के अंदर ट्रांसफार्मर लगाने एवं व्यवस्था को चुस्त-दुरुस्त रखने की बात करती है तो वहीं विभागीय अधिकारी उनके आदेशों का पलीता लगाने मे कोई कोताही नही बरत रहे हैं। वहीं नाराज ग्रामीण एक्सईएन कार्यालय पर कहा कि तीन दिन के अंदर ट्रांसफार्मर नही लगता है तो ग्रामीण सड़क पर उतरने को बाध्य होंगे। जिसकी जिम्मेदारी विभागीय अधिकारियों की होगी। वहीं जब इस विषय पर एक्सईएन से फोन के माध्यम से वार्ता करने की कोशिश की गई तो उनका फोन नही उठा।

भाजपा महिला मोर्चा जिला कार्यसमिति की बैठक संपन्न

अखंड भारत संदेश

मुख्य अतिथि सहित अतिथियों का स्वागत करतीं महिला मोर्चा की कार्यकर्ता।

मुख्य अतिथि द्वारा करोना योद्धाओं को सम्मान प्रशस्ति पत्र दिया गया।

सहसों। सहसों के स्थित सुखदेव सिंह महाविद्यालय कसेरूआ कला में मंगलवार को भाजपा महिला मोर्चा की जिला कार्यसमिति की बैठक आयोजित की गई। बैठक में सर्वप्रथम प्रयागराज में गोलोक वासी महंत नरेंद्र गिरी की आत्मा की शांति के लिए उपस्थित महिलाओं ने दो मिनट का मौन रखकर ईश्वर से प्रार्थना की। तत्पश्चात कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। जिसमें जिला अध्यक्ष महिला मोर्चा आरती अग्रवाल के नेतृत्व में मुख्य अतिथि प्रदेश कार्यालय प्रभारी रमा सिंह का 51 किलो की माला पहनाकर सम्मानित किया गया। मुख्य अतिथि ने अपने संबोधन में कहा भाजपा सरकार में महिलाओं का सम्मान बढ़ा है।उन्होंने कहा मोदी तथा योगी सरकार ने महिलाओं के उत्थान के लिए जनधन खाता, उज्जवला योजना ,कन्या सुमंगला योजना ,बिजली के मुफ्त कनेक्शन के लिए सौभाग्य योजना, इज्जत घर ,आवास योजना ,प्रधानमंत्री सुरक्षित मातृत्व योजना के अतिरिक्त स्वयं सहायता समूह को अनुदान तथा रोजगार के लिए कई महत्वपूर्ण योजनाएं चलाकर उनकी आर्थिक रूप से समृद्ध साली बनाने का कार्य किया। उन्होंने कहा आगामी 2022 के चुनाव के लिए महिलाएं अभी से घर घर जाकर परिवार में महिलाओं को भाजपा की योजनाओं को बताकर उन्हें संगठन से जोड़ने के कार्य में जुट जाएं। उन्होंने कहा 50 लाख महिलाओं को जोड़ने का लक्ष्य हासिल करना है। जिसे कर्मठ महिलाओं व कार्यकताओं को पूरा करना है। क्षेत्रीय महामंत्री बबिता तिवारी, जिला कार्यसमिति प्रभारी कुसुम केसरवानी तथा जिला अध्यक्ष आरती अग्रवाल ने अपने सम्बोधन में कहा महिलाओं के उत्थान व विकास के लिए भाजपा सरकार कृत संकल्प है। आगामी विधानसभा चुनाव के लिए सभी महिला कार्यकर्ता एकजुट होकर बूथ स्तर पर मतदाताओं को जोड़ने के लिए अभी से लग जाएं। भाजपा सदस्यता अभियान में 4 करोड़ सदस्य बनाने हैं जिसमें अभी डेढ़ करोड़ सदस्य बनना बाकी है जिसमें 50 लाख महिलाओं को जोड़ने का लक्ष्य रखा गया है। जिससे हम लोगों को हर हाल में शीघ्र ही पूर्ण करना है ताकि आगामी विधानसभा चुनाव में भाजपा पूर्ण बहुमत में सरकार बनाकर महिलाओं की हर क्षेत्र मे अधिक से अधिक भागीदारी सुनिश्चित हो। जिला कार्यसमिति की बैठक में कोरोना संक्रमण काल मे महिलाओं के अभूतपूर्व सेवा व कार्य के लिए 71 महिलाओं एवं पत्रकारों को सम्मान प्रशस्ति पत्र एवम अंगवस्त्रम भेंट कर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का संचालन रूपन त्रिपाठी ने किया। कार्यक्रम के समापन पर भूमि विकास बैंक के अध्यक्ष वीरेन्द्र बहादुर सिंह ने मुख्य अतिथि सहित सभी महिला कार्यकताओं का हौसला बढ़ाते हुए अधिक से अधिक महिला कार्यकताओं को जोड़कर संगठन को मजबूत बनाने का आह्वान किया। इस मौके पर साधना तिवारी, रंजना परिहार, गीता पांडे, संजू शुक्ला तथा जमुनापार महिला मोर्चा जिला अध्यक्ष सरिता शर्मा सहित गंगापार जिले की सैकड़ों कार्यकर्ता एवं पदाधिकारी प्रमुख रूप से मौजूद रहे।

खबर संक्षेप

महंत नरेंद्र गिरि के निधन से मुस्लिम समुदाय दुःखी

प्रयागराज। महंत नरेंद्र गिरि महाराज की आकस्मिक निधन पर अल्पसंख्यक समुदाय भी दुख प्रकट किया। बहादुरगंज में नरेंद्र गिरि महाराज को श्रद्धांजलि देते हुए उनके चित्र पर माल्यार्पण किया। कांग्रेस नेता इरशाद उल्ला ने दुःख प्रकट करते हुए कहा उनकी मृत्यु से आध्यात्मिक जगत मे गहरी ठेस पहुंची है और उनकी पूर्ति असंभव है। श्रद्धांजलि व माला अर्पित करने वालों में मुख्य रूप से कांग्रेस सेवा दल के पूर्व नगर अध्यक्ष लाल बाबू साहू, मोहम्मद रऊफ, आफताब अहमद, मोहम्मद सलीम, मोहम्मद आमिर, फहद खान, मोहम्मद अमान, मोहम्मद अमन, ननकू सरदार, राजू जायसवाल आदि लोग उपस्थित रहे।

महंत के निधन पर सहसों व्यवसायी एवं भाजपा नेता ने जताया शोक

सहसों। अखाड़ा परिषद के अध्यक्ष तथा हनुमान जी के अनन्य भक्त ब्रह्म लीन महंत नरेंद्र गिरि का सहसों से गहरा लगाव रहा। महंत जी के अनन्य भक्तों में सहसों निवासी स्वर्गीय शिवपूजन केसरवानी से गहरा लगाव रहा। उन्हीं की प्रेरणा से शिवपूजन केसरवानी वर्ष में कई सामाजिक कार्य करते रहे। जिसका शुभारंभ महंत नरेंद्र गिरि द्वारा किया जाता रहा। सर्वप्रथम उन्हीं की प्रेरणा से 2016 में विशाल नेत्र चिकित्सा शिविर आयोजित किया गया। जिसका उद्घाटन उन्ही के कर कमलों द्वारा किया गया था। तत्पश्चात लगातार प्रतिवर्ष विशाल चिकित्सा शिविर के अलावा श्री रामचरितमानस कथा पाठ के अतिरिक्त अन्य सामाजिक कार्यों का शुभारंभ उन्हीं के कर कमलों द्वारा किया जाता रहा। शिवपूजन केसरवानी के दिवंगत हो जाने के पश्चात उनके पुत्र व्यवसायी एवं भाजपा के जिला कोषाध्यक्ष आशीष केसरवानी द्वारा सामाजिक कार्य किया जाता रहा। जिसका शुभारंभ महंत नरेंद्र गिरि के कर कमलों द्वारा किया जाता रहा। आशीष केसरवानी ने महंत के निधन से गहरा शोक व्यक्त करते हुए बताया कि पांच वर्षों से लगभग दस बार सहसों में आगमन हुआ जिससे क्षेत्र के अतिरिक्त आसपास के लोगों को उनका आशीर्वाद व मार्गदर्शन प्राप्त होता रहा। उनके अचानक चले जाने से सहसों क्षेत्र के गणमान्य व्यक्तियों सहित सभी भक्त स्तब्ध एवं अत्यधिक दुखी हैं।

संत समाज की बड़ी क्षति : सुभाष सिंह पटेल

घूरपुर। अखिल भारतीय अखाड़ा परिषद के अध्यक्ष महंत नरेंद्र गिरि महराज के निधन से भारतीय जनता पार्टी यमुनापार के कार्यकर्ताओ और साधू-संतो महत्माओ मे शोक की लहर व्याप्त हो गई। भाजपा किसान मोर्चा काशी प्रांत के क्षेत्रीय उपाध्यक्ष रमा कांत विश्वकर्मा, यमुनापार जिलाध्यक्ष विभवनाथ भारती, पिछड़ा वर्ग मोर्चा यमुनापार के जिला अध्यक्ष सुभाष सिंह पटेल, जिला उपाध्यक्ष जय सिंह पटेल, जिला मंत्री प्रकाश शुक्ल प्रंचड,जिला मंत्री कमलेश त्रिपाठी, ने ब्रम्हलीन महंत नरेन्द्र गिरी महराज के निधन पर गहरा शोक व्यक्त करते हुए कहा विश्वास नही हो रहा कि ऐसा महात्मा महापुरूष का अल्पकाल मे निधन हो गया। सनातन धर्म के आस्था के तारे का अस्त संत समाज की बडी क्षति है। भाजपा जिला प्रभारी ओंकार केसरी,जिला उपाध्यक्ष शोभनारायण द्विवेदी,संतोष त्रिपाठी,दिलीप कुमार चतुवेर्दी, आर के शर्मा, शिवम सिंह, रत्नाकर सिंह, अभिषेक शुक्ल, शंकर लाल गुप्ता,सुधाकर पांडेय,अजीत प्रताप सिंह,राजेश शुक्ला,इं.जगदीश सिंह यादव,त्रिवेणी प्रसाद पांडेय,राजेश्वरी तिवारी,पुष्पराज सिंह पटेल,विक्रमा जीत मौर्य, विजय शंकर शुक्ला आदि पदाधिकारी ने शोक व्यक्त करते हुए श्रष्दाजंलि अर्पित किया।

ब्रम्हलीन महंत नरेन्द्र गिरि महाराज को मुख्यमंत्री ने श्रद्धासुमन अर्पित करते हुए दी श्रद्धांजलि

● डिप्टी सीएम केशव मौर्य व पूर्व मुख्य मंत्री अखिलेश यादव ने भी अर्पित किये श्रद्धासमुन

ब्रह्मलीन महंत श्री नरेंद्र गिरी जी महाराज को श्रद्धा सुमन अर्पित करते मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ

महंत नरेंद्र गिरि को श्रद्धांजलि देते उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य

अखाड़ा परिषद अध्यक्ष को पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव ने दी श्रद्धांजलि

पुलिस लाइन में प्रेस वार्ता करते मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ

(सुनील गिरि)

प्रयागराज। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ मंगलवार को मठ बाघम्बरी गद्दी पहुंचकर अखाड़ा परिषद के अध्यक्ष एवं बाघम्बरी पीठ के महंत नरेन्द्र गिरि महाराज के पार्थिव शरीर के दर्शन करते हुए पुष्पांजली अर्पित की तथा संत समाज एवं प्रदेश सरकार की तरफ से विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित की। मुख्यमंत्री ने कहा कि यह हमारे आध्यात्मिक और धार्मिक समाज के लिए अपूर्णीय क्षति है। कहा कि अखाड़ा परिषद और संत समाज की जो सेवा उन्होंने की है, वह अविस्मरणीय है। मुख्यमंत्री ने दिवंगत आत्मा की शांति की कामना एवं प्रार्थना करते हुए प्रभु श्री राम ब्रम्हलीन महंत श्री नरेन्द्र गिरि महाराज को अपने श्री चरणों में स्थान प्रदान करें। इसी प्रकार उपमुख्यमंत्री तथा अन्य मंत्रीगणों के साथ-साथ सांसदगण, विधायकगण तथा अन्य जनप्रतिनिधियों के अलावा साधु-महात्माजनों एवं अन्य महानुभावों ने अखाड़ा परिषद के अध्यक्ष महंत नरेन्द्र गिरि महाराज के पार्थिव शरीर पर पुष्पांजलि अर्पित कर श्रद्धांजलि दी। उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य ने मंगलवार को बाघम्बरी मठ पहुंच कर अखिल भारतीय अखाड़ा परिषद के अध्यक्ष नरेन्द्र गिरि महाराज के अन्तिम दर्शन कर, उन्हे पुष्पांजलि अर्पित की। अपनी आत्मिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हुये उप मुख्यमंत्री ने कहा मैं निःशब्द हूं इस दुःख को शब्दों में व्यक्त नहीं कर सकता हूं। उन्होंने कहा कि उनका दुःखद अवसान पूरे देश के लिये खासकर आध्यात्मिक जगत के लिये अपूरणीय क्षति है। ईश्वर से प्रार्थना की कि वह दिवंगत पूण्य आत्मा को अपने श्री चरणों में स्थान दें तथा शोकाकुल भक्तों व अनुयायियों को यह असीम दुःख सहन करने की शक्ति प्रदान करें। केन्द्रीय राज्यमंत्री भारत सरकार साध्वी निरंजन ज्योति, सांसद प्रो0 रीता बहुगुणा जोशी, सांसद फूलपुर केशरी देवी पटेल, प्रदेश भाजपा अध्यक्ष स्वतंत्र देव सिंह, महापौर अभिलाषा गुप्ता नंदी, मंत्री नंद गोपाल गुप्ता नंदी, मंत्री बृजेश पाठक, मंत्री सिद्धार्थ नाथ सिंह, विधायकगणों तथा अन्य जन प्रतिनिधियों के अलावा साधु-महात्माजन एवं अन्य महानुभावों ने ब्रम्हलीन अखाड़ा परिषद के अध्यक्ष महंत नरेन्द्र गिरि महाराज के पार्थिव शरीर पर पुष्पांजलि अर्पित करते हुए श्रद्धांजली दी।

बागांबरी मठ में साधु संतों से बात करते मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ

अखिलेश यादव ने श्रद्धांजलि अर्पित कर हाईकोर्ट के जज से जांच कराने मांग की

प्रयागराज। सपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष व पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव ने महंत नरेंद्र गिरि की संदिग्ध मौत की हाईकोर्ट के सिटिंग जज से जांच कराने की मांग की है। संत के अंतिम दर्शन के लिए बाघंबरी गद्दी मठ पहुंचे अखिलेश ने प्रदेश की कानून व्यवस्था पर भी सवाल उठाए।पूर्व मुख्यमंत्री दिन में करीब सवा 12 बजे मठ में पहुंचे और महंत को श्रद्धासुमन अर्पित किए। उन्होंने कहा कि नरेंद्र गिरि का निधन आहत करने वाला है। वह साधु-संतों ही नहीं, आम जन मानस में भी लोकप्रिय और पूजनीय थे। ऐसे में उनका निधन स्तब्ध करने वाला है। पूर्व मुख्यमंत्री ने कहा कि ऐसा सुनने में आया है कि महंत नरेंद्र गिरि कई दिनों से परेशान थे। वह एक मंत्री और वरिष्ठ अफसरों से मिलना चाहते थे। ऐसे में संदिग्ध स्थिति में उनका निधन होना कई सवाल खड़े करता है।

आश्रम में महंत नरेंद्र गिरि से पूर्व दो अन्य महंतों की हो चुकी है संदिग्ध परिस्थितियों में मौत

प्रयागराज। अखाड़ा परिषद के अध्यक्ष एवं महंत आचार्य नरेंद्र गिरि की मौत से पूर्व दो अन्य महंतों की भी संदिग्ध परिस्थितियों में इसी आश्रम में मौत हो चुकी है। उन दोनों मौत का राज आज तक नहीं खुल पाया है और एक पहेली बन कर रह गई है। हालांकि पुलिसिया जांच पड़ताल में दोनों मौतों की फाइल को बंद कर दिया गया है। महंत नरेंद्र गिरि की संदिग्ध परिस्थितियों में मौत होने के बाद पूर्व में इसी आश्रम में हुए उक्त कथित आत्महत्या की चर्चा मंगलवार को लोगों के बीच केंद्र का विषय दिन भर बना रहा। बताया जाता है कि बीते कुछ वर्षों से आश्रम की जमीनों को औने-पौने में बेचने को लेकर बहुत सी बातें सामने आ रही थी। इसी सिलसिले में कुछ महीने पूर्व निरंजनी अखाड़े से निष्कासित किए गए योग गुरु महंत आनंद गिरि ने अखाड़ा परिषद के अध्यक्ष महंत नरेंद्र गिरि पर बड़े आरोप लगाते हुए बेची गई जमीनों की जांच की मांग उठाई थी। आनंद गिरि ने पूर्व सचिव आशीष गिरि की मौत का जिक्र कर सनसनी मचा दी थी। साथ ही उन्होंने एक और महंत गंगापुरी की भी मौत का जिक्र किया था। पुलिस को भेजी शिकायत में उन्होंने कहा था कि महंत आशीष गिरि की तरह ही अखाड़े के युवा संत दिगंबर गंगापुरी की भी संदिग्ध मौत हुई थी। महंत गंगापुरी की मौत को भी आत्महत्या बताकर हकीकत पर परदा डाल दिया गया था। बता दें कि पंचायती अखाड़ा श्री निरंजनी के सचिव महंत आशीष गिरि नवंबर 2019 में आश्रम के भीतर मृत पाए गए थे। पुलिस ने उस मौत को भी खुदकुशी ही बताया था। सुबह नौ बजे के करीब आश्रम में बने कमरे में संदिग्ध हालत में गोली लगने से उनकी मौत हो गई थी। वह बिस्तर पर मृत पड़े मिले थे। पुलिस का दावा था कि उनकी हथेली में पिस्टल फंसी मिली और बगल में ही खोखा भी मिला था। जिसके आधार पर मामले को खुदकुशी बताया गया। सूत्रों पर यदि हम यकीन करें तो मौके वारदात की हालत ने पुलिस की इस थ्योरी पर कई सवाल भी खड़े कर दिए थे। मसलन मौके पर दो खोखों का मिलना और घटना के वक्त आश्रम में मौजूद लोगों का गोली चलने की आवाज न सुनना और उन्हें घटना की जानकारी काफी देर बाद होना आदि समेत कई ऐसे सवाल थे, जिनका जवाब नहीं मिल सका था। सवाल उठता है कि जैसे उक्त दो केस में कोई स्पष्ट नतीजा नहीं निकला। कहीं वैसे ही महंत नरेंद्र गिरि की मौत भी राज बनकर न रह जाए। क्योंकि यह सवाल इसलिए उठ रहा है कि महंत नरेंद्र गिरि एक बहुत हाईप्रोफाइल बाबा थे, जिनकी तूती बसपा, सपा सरकार के बाद भाजपा सरकार में बोलती थी। बताया जाता है कि प्रयागराज के कई आला अफसर उनका दरबार करते थे। बताते हैं कि महंत नरेंद्र गिरि इतना रसूख था कि वे संविधानेत्तर केंद्र के रूप में उभर रहे थे।

हत्या या आत्महत्या, एसआईटी टीम करेगी जांच

प्रयागराज। अखाड़ा परिषद के अध्यक्ष एवं महंत आचार्य नरेंद्र गिरि की संदिग्ध हालत में हुई मौत की जांच गठित एसआईटी टीम करेगी। उत्तर प्रदेश सरकार ने महंत नरेंद्र गिरि की अनसुलझी मौत से पदाफाश करने के लिए डीएसपी के नेतृत्व में एसआईटी टीम को जिम्मा सौंप दिए हैं।

वीडियो से खुल सकते हैं कई राज

महंत नरेंद्र गिरि के मौत मामले में पुलिस को मोबाइल की कॉल डिटेल रिपोर्ट (सीडीआर) से अहम सुराग मिले हैं। महंत नरेंद्र गिरि की मौत से पहले 6 से 10 घंटे के बीच जिन -जिन लोगों से बात हुई है, उन सभी के नंबर निकाल कर पुलिस उनसे पूछताछ करेगी। सूत्र बताते हैं कि पुलिस को वीडियो भी हाथ लगा है। जिसकी जांच पुलिस कर रही है। महंत नरेंद्र गिरि की मौत को उनके शिष्य आनंद गिरि से चल रहे विवाद से भी जोड़कर देखा जा रहा है।

अखाड़ा परिषद के पंच परमेश्वर ने फैसला लिया है कि कल

महंत नरेंद्र गिरि का पोस्टमार्टम होगा। पुलिस अपने ढंग से कानूनी कार्रवाई करे। गुरुवार को भू-समाधि दिए जाने की घोषणा की गई है। समाधि से पहले संगम स्नान,नगर भ्रमण कराएंगे। गुरुवार को 11 से 3 बजे के बीच दी जाएगी समाधि औरतीन दिनों तक अपने स्तर से अखाड़ा परिषद जांच करेगी।

हरि गिरि
अखाड़ा परिषद महामंत्री

आगामी माघ मेले में संतों को खलेगी बाबा की कमी

प्रयागराज। अखाड़ा परिषद के अध्यक्ष एवं महंत आचार्य नरेंद्र गिरि ब्रह्मलीन हो चुके हैं। मंगलवार को उनके अंतिम दर्शन करने के लिए प्रदेश के मुखिया योगी आदित्यनाथ सहित कई गणमान्य व्यक्ति प्रयागराज पहुंचे और श्रद्धांजलि अर्पित की। वहीं इस बार आगामी माघ मेले में महंत नरेंद्र गिरि की कमी संतो को खलेगी। बता दें कि महंत नरेंद्र गिरि संतो की समस्याओं को शासन प्रशासन के सम्मुख रखते चले आ रहे थे। बताया जाता है कि बीते कुछ महीने के बाद माघ माह में प्रयागराज जिले के संगम तट पर बालू की रेत में लगने वाले प्रत्येक वर्ष की भांति माघ मेले में ब्रह्मलीन हो चुके महंत नरेंद्र गिरि की कमी संतो को जरूर खलेगी।

क्या नेता, क्या अफसर सभी थे बाबा के भक्त...

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। प्रयागराज संगम नगरी के नाम से विश्व विख्यात है, संगम तट के किनारे बड़े हनुमान जी की मंदिर स्थापित है। जहां भक्तों की दिनभर कतार लगी रहती है। मंगलवार व शनिवार को हनुमान जी के भक्तों की अपार भीड़ लगती है और लेटे हुए हनुमान जी के दर्शन कर पुण्य कमाते हैं। अखाड़ा परिषद के अध्यक्ष एवं महंत नरेंद्र गिरि मंदिर की सेवा सत्कार करते चले आ रहे थे। बाघमबारी गद्दी के भी देखरेख वह स्वयं करते चले आ रहे थे। क्या नेता, क्या अफसर सभी उनके दरबार में पहुंचते थे और घंटों दरबार लगाते थे। बाबा से मिलने के लिए हर कोई व्यक्ति पहुंचता था और उनका आशीर्वाद लेते थे। अचानक 20 सितंबर दिन सोमवार शाम को बाबा के शिष्यों ने उन्हें कथित तौर पर फांसी के फंदे पर लटकते हुए देखा तो हड़कंप मच गया। आनन-फानन में किसी प्रकार बंद कमरे के दरवाजे को खोला और नायलॉन की रस्सी को काटकर उन्हें नीचे उतारा गया। जब तक शिष्यों का दल कुछ कर पाते, वह ब्रह्मलीन हो चुके थे। जिससे शिष्ऐ में कोहराम मच गया। आनन-फानन में प्रयागराज जिले से जुड़े आला अफसर दलबल के साथ पहुंचे और जांच पड़ताल के बाद शव को कब्जे में ले लिए। साथ ही कमरे से सुसाइड नोट को भी बरामद किया गया। जिसमें महंत नरेंद्र गिरि के द्वारा लिखा गया सुसाइड नोट बताया गया और उसमें उनके परम शिष्य योग गुरु आनंद गिरि समेत मंदिर के पुजारी पिता-पुत्र के खिलाफ आत्महत्या करने के लिए प्रेरित बताया गया। हालांकि बरामद सुसाइड नोट की जांच पड़ताल फॉरेंसिक विभाग की टीम कर रही है।

डीएम प्रयागराज को तालाब से अवैध कब्जा हटाने का निर्देश

प्रयागराज। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने जिलाधिकारी प्रयागराज को आदेश के पालन का एक और मौका देते हुए चार हफ्ते में सोरांव के नगदिलपुर गांव के तालाब से अतिक्रमण हटाने का निर्देश दिया है। कोर्ट ने कहा कि प्रथमदृष्टया जिलाधिकारी संजय कुमार खत्री के खिलाफ अवमानना का केस बनता है। यह आदेश न्यायमूर्ति प्रकाश पाडिया ने ग्राम प्रधान अखिलेश कुमार की अवमानना याचिका को निस्तारित करते हुए दिया है।याची का कहना था कि हाईकोर्ट ने प्लाट संख्या 287 तालाब से जांच कर अवैध कब्जा हटाने का निर्देश दिया है। जिसकी सूचना जिलाधिकारी को दी गई है। फिर भी आदेश की अवहेलना की जा रही है। याचिका में जिलाधिकारी को अवमानना में दंडित करने की मांग की गई थी।

चार वर्ष की बच्ची के पेट से सर्जरी कर निकाला 400 ग्राम बालों का गुच्छा

प्रयागराज। पीडियाट्रिक सर्जन की टीम ने एक चार वर्षीया बच्ची का ऐसा ऑपरेशन किया, जिसको सुनने वाले हैरत में हैं। इस तरह की बीमारी के लक्षण और परेशानी मानसिक रोग ग्रसित वयस्क महिलाओं में पाई जाती है, लेकिन सामान्य से कम उम्र की इस बच्ची में यह अनोखी बीमारी सामने आई। फिलहाल जटिल सर्जरी के बाद बच्ची स्वस्थ है। इस मामले को वर्ल्ड मेडिकल जर्नल में दर्ज कराने की तैयारी है।करेली की रहने वाली चार वर्षीया अलीमा करीब दो वर्ष से पेट दर्द से परेशान थी। इन दिनों उसका पेट काफी फूल गया था। कई अस्पतालों में इलाज कराने के बाद वह किसी की सलाह पर वह टैगौर टाउन स्थित फिनिक्स हॉस्टिल परिजनों के साथ पहुंची। वहां पिडियाट्रिक सर्जन डॉ. धनेश अग्रहरि ने बच्ची की सोनोग्राफी, सीटी स्कैन कराया तो पता चला कि खाने की थैली में बालों का गुच्छा भरा है। छोटी आंत में बाल करीब दो फीट लंबी पूंछ की तरह भरे हैं। दो स्थानों पर आंतों में छेद हो गए गए, जिससे रुकावट हो गई थी। डॉ. धनेश के मुताबिक एक सितंबर को गंभीर हालत में बच्ची को भर्ती कर पांच अन्य डॉक्टरों की टीम के साथ उसके पेट का ऑपरेशन किया गया। खाने की थैली खोली गई तो उसमें से करीब चार सौ ग्राम बालों का गुच्छा निकला। छोटी आंत से करीब दो फीट लंबी पूंछ निकाली गई। फटी आंतों की सर्जरी की गई। दो हफ्ते की गहन देखभाल के बाद बच्ची शनिवार को डिस्चार्ज की गई। डॉ. धनेश के मुताबिक बच्ची ट्रैकोविजोजिल विथ रिपुंजल सिंड्रोम नामक बीमारी से पीड़ित थी। यह एक मानसिक बीमारी है, जिसमें मानसिक रोग से पीड़ित महिलाएं अपने बाल नोच कर खा लेती हैं। चूंकि बाल पचते नहीं सो वह पेट में एकत्र हो जाते हैं। यह बाल पेट में गुच्छे के रूप में होकर परेशानी बढ़ाते हैं। डॉ. धनेश का दावा है कि मेडिकल जर्नल में बिना मानसिक रोग ग्रसित किसी छोटी बच्ची का इस बीमारी से पीड़ित होने का मामला दर्ज नहीं है। संभवतः यह पहला और अनोखा मामला है।

किसान पंचायत जुटेंगे देश के कई दिग्गज किसान नेता

अखंड भारत संदेश

23 को घूरपुर सब्जी मंडी में होगा आयोजित

प्रेस वार्ता को संबोधित करते हुएअखिल भारतीय किसान मजदूर सभा के महासचिव डॉ आशीष मित्तल जानकारी देते

घूरपुर। घूरपुर में एक प्रेस वार्ता को संबोधित करते हुए अखिल भारतीय किसान मजदूर सभा के महासचिव डॉ आशीष मित्तल ने बताया कि यह कानून पूर्वी उत्तर प्रदेश के लघु व सीमांत किसानों व खेत मजदूरों के लिए खास तौर से घातक है।

आगे उन्होंने कहा कि अनुबंध खेती अधिनियम को लागू करके, सरकार और उसकी प्रशासनिक - पुलिस मशीनरी, निर्दिष्ट क्षेत्रों के किसानों को केवल उन्हीं फसलों को बोने के लिए मजबूर करेंगी। जो बहुराष्ट्रीय कंपनियों सहित बड़ी कंपनियों के लिए व्यावसायिक मूल्य की हैं। इस इलाके के किसान जीवित रहने के लिए अनाज पैदा करते हैं। वे अनाज नहीं उगा पाएंगे। उन्हें कंपनी से उच्च लागत पर इनपुट और मशीनीकृत सेवाएं खरीदनी होंगी। जिससे इनपुट लागत बढ़ेगी और कृषि अलाभकारी हो जाएगी। ठेके में शामिल खेत बटाईदारी के लिए उपलब्ध नहीं बचेंगे। पूर्वी उत्तर प्रदेश में 20 से 30% खेती बटाईदारी से होती है। मशीनीकृत सेवाओं से खेती मे श्रम कार्य घट जाएगा और पशुपालन के काम पर प्रतिकूल असर पड़ेगा। इस इलाके के आधे ग्रामीण खेत मजदूरी व पशुपालन पर निर्भर है। नया मंडी अधिनियम लागू करके, सरकार एमएसपी पर फसल खरीद बंद कर देगी और ये कंपनियां केवल सबसे कम उपलब्ध ऑनलाइन कीमतों की पेशकश करेंगी जिससे सबसे ज्यादा असर सब्जी उगाने वाले छोटे किसानों पर पड़ेगा। सरकारी खरीद समाप्त होने से राशन में अनाज मिलना भी बंद हो जाएगा।

आवश्यक वस्तु संशोधन अधिनियम भोजन को जीवन के लिए आवश्यक होने की सूची से हटा देता है, उनकी कीमतों को हर साल 1.5 गुना बढ़ाने की अनुमति देता है और कॉरपोरेट्स को खाद्य वस्तुओं की जमाखोरी और कालाबाजारी करने की अनुमति देता है। पंचायत के मुख्य वक्ता राजिंदर सिंह दीपसिंहवाला, कीर्ति किसान यूनियन, पंजाब के उपाध्यक्ष और 40 सदस्य एसकेएम कमेटी के सदस्य, भारतीय किसान यूनियन (टिकैत) के उपाध्यक्ष श्री राजेश चौहान और डॉ आशीष मित्तल महासचिव अखिल भारतीय किसान मजदूर सभा, एआईकेएमएस होंगे।

विभिन्न किसान यूनियनों के नेता, रेत खदान श्रमिक नेता, ट्रेड यूनियन और अन्य संगठन सभा को भी संबोधित करेंगे।

प्रभाकर साहित्य सम्मान से किया गया विभूषित

कोराव। समतावादी कलमकार शोध साहित्य संस्थान भारत के अगुवाई में पेरियार ई. वी.रामासामी के अवतरण दिवस पर ऑनलाइन काव्य सृजन का आयोजन किया गया। आयोजित बेबीनार में देश भर के साहित्यकार बंधुओं ने बढ़ चढ़कर भाग लियो प्रभाकर की स्वरचित रचना"निडर बनो, परियार बनो" नामक कविता पर उत्कृष्ट सृजन एवं समीक्षा के लिए "पेरियार रामासामी नायकर साहित्य सम्मान" से ऋषि कुमार 'प्रभाकर' को विभूषित किया गया। प्रभाकर जी के द्वारा अनेकानेक विषयों पर लिखी गई कविता कहानी निरंतर प्रकाशित हो रही है देश विदेश के प्रतिष्ठित दैनिक व साप्ताहिक अखबारों ने स्थान दिया है।

एसडीएम शाहगंज के खिलाफ विभागीय जांच का जिलाधिकारी को निर्देश

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने जिलाधिकारी जौनपुर को एसडीएम शाहगंज के खिलाफ जांच कर विभागीय कार्रवाई करने का निर्देश दिया है। कोर्ट ने एसडीएम के एकपक्षीय आदेश 13 व 14 जून 2021 को मनमाना व अवैध करार देते हुए रद्द कर दिया है। यह आदेश न्यायमूर्ति अजय भनोट ने नर्गिस बानो व अन्य की याचिका को स्वीकार करते हुए दिया है। याची का कहना था कि उसने नक्शा पास कराकर भवन निर्माण शुरू किया। रंजिश वश कमलेश कुमार ने शिकायत की, जबकि विवादित जमीन से उनका कोई सरोकार नहीं है। एसडीएम ने याची को नोटिस जारी कर हाजिर होने का निर्देश दिया, लेकिन वह हाजिर नहीं हो सकी। इसके बावजूद एसडीएम ने यथास्थिति बनाए रखने का आदेश दिया। आदेश में ओवर राइटिंग है और विरोधाभास भी है। एसडीएम ने लिखा कि याची कमलेश कुमार व अन्य बनाम मोहम्मद अमीन व अन्य केस के लंबित होने के तथ्य बताने में विफल रही। तथ्य छिपाकर नक्शा पास करा लिया। जबकि याची हाजिर ही नहीं हो सकी। कोर्ट ने कहा कि एसडीएम का आदेश नैसर्गिक न्याय के विपरीत है।

कांग्रेस सरकार बनाने के लिए प्रियंका के मिशन को बनाएं प्रभावी : राजेश तिवारी

रामपुर खास विधानसभा स्तरीय समीक्षा बैठक मे शामिल हुए एआईसीसी सचिव

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। एआईसीसी के सचिव एवं यूपी प्रभारी राजेश तिवारी ने कांग्रेस कार्यकर्ताओं से संगठन की मजबूती के लिए कड़ी मेहनत का आहवान किया है। राजेश तिवारी सोमवार की शाम नगर स्थित पीजी कालेज के खचाखच भरे सभागार मे रामपुर खास विधानसभा क्षेत्र के पार्टी कार्यकर्ताओं की वृहद समीक्षा बैठक में शामिल हुए।

उन्होंने कार्यकर्ताओ से ब्लाक एवं न्याय पंचायत तथा ग्राम पंचायतो के साथ बूथ कमेटियो को भी सशक्त बनाए जाने का आहवान किया। उन्होनें पार्टी की राष्ट्रीय महासचिव एवं यूपी प्रभारी प्रियंका गांधी के निर्देशन मे कांग्रेस की शुरू होने वाली प्रतिज्ञा यात्रा की सफलता को लेकर भी रणनीतिक चर्चा की। विशिष्ट अतिथि प्रदेश सचिव एवं जिले के प्रभारी जयकरन वर्मा ने कहा कि समग्र विकास को मजबूत बनाने की क्षमता का पार्टी कार्यकर्ता सरकार बनाने मे पूरी ऊर्जा के साथ सदुपयोग करें। एआईसीसी सदस्य राजेन्द्र शुक्ल ने कांग्रेस के राष्ट्रीय चिंतन पर प्रकाश डाला। क्षेत्रीय विधायक आराधना मिश्रा मोना की ओर से प्रतिनिधि भगवती प्रसाद तिवारी ने विधानसभा स्तरीय पार्टी की संचालित हो रही गतिविधियो पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम की अध्यक्षता जिला कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष डा. लालजी त्रिपाठी तथा संचालन मीडिया प्रभारी ज्ञानप्रकाश शुक्ल ने किया। सम्मेलन को चेयरपर्सन प्रतिनिधि संतोष द्विवेदी, लालगंज प्रमुख अमित प्रताप सिंह पंकज, सुधाकर पाण्डेय, सांगीपुर प्रमुख अशोक सिंह बब्लू ने भी संबोधित किया।

महंथ नरेश गिरि भी हुए भाजपा की राजनीति के शिकार : नरेश उत्तम

समाजवादी पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष ने भाजपा व कांग्रेस पर बोला जमकर हमला

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। समाजवादी पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष नरेश उत्तम आज मंगलवार को खेत खलिहान बचाओ, रोजगार दो की मांगों को लेकर किसान नौजवान यात्रा लेकर प्रतापगढ़ पहुंचे जहां उनका कार्यकर्ताओं ने भव्य स्वागत किया।

इस अवसर पर उन्होंने कहा कि भाजपा शासन में संत समाज भी सुरक्षित नहीं है। महंथ नरेश गिरि इसी राजनीति के शिकार हुए। इसके अलावा कोरोना काल में दवाओं और आक्सीजन का जमकर घोटाला हुआ। उन्होंने कार्यकर्ताओं से कहा कि वह अभी से जुट जाएं। प्रदेश में समाजवादी पार्टी की सरकार बनेगी और अखिलेश यादव उसमें मुख्यमंत्री होंगे। इसकी तैयारी कार्यकर्ताओं को अभी से करनी होगी। सपा के प्रदेश अध्यक्ष अमेठी से होते हुए आज दोपहर में बाबूगंज पहुंचे थे। बाबूगंज के एक मैरिज हाल में उन्होंने भारतीय जनता पार्टी और कांग्रेस पार्टी पर जमकर निशाना साधा। उन्होंने कहा कि भाजपा हिन्दू मुस्लिम की राजनीति करती है। बेरोजगारी व भ्रष्टाचार चरम पर है। प्रतापगढ़ की धरती राजा महाराजाओं की नहीं, बल्कि किसानों की है जिनका इस राज में उत्पीड़न हो रहा है। बाद में जिला मुख्यालय पर पत्रकारों से बात करते हुए उन्होंने कहा कि ठोंक दो, मार दो, ऊपर पहुंचा दो, यह आरएसएस की राजनीति है, जिसे भाजपा लागू कर रही है। कांग्रेस पर हमला बोलते हुए उन्होंने कहा कि कांग्रेस ने किसानों को छला है। मुंशीगंज में कांग्रेस शासन में किसानों पर लाठियां और गोलियां चली है। आज उनकी हमदर्द बनने की कोशिश कर रही है। इस अवसर पर जिलाध्यक्ष छविनाथ यादव ने कहा कि उन्हें फर्जी मुकदमे में फंसाया गया है लेकिन वह इससे डरे नहीं हैं बल्कि भाजपा की नीतियों के विरुद्ध जमकर संघर्ष कर रहे हैं। बाबूगंज व पत्रकारवार्ता में पूर्व मंत्री प्रो0 शिवाकांत ओझा, पूर्व विधायक नागेन्द्र सिंह यादव मुन्ना, जिलाध्यक्ष छविनाथ यादव, पूर्व जिलाध्यक्ष भइयाराम पटेल, शक्ति सिंह, प्रमोद मौर्या, महिमा गुप्ता, सुषमा पाल, शांति सिंह, इरशाद सिद्दीकी, नरेन्द्र पाल, उमेश वर्मा, मनीष पाल आदि रहे। पत्रकारवार्ता के बाद सपा के प्रदेश अध्यक्ष का काफिला विश्वनाथगंज विधान सभा क्षेत्र के नौबस्ता व अपरान्ह रामपुर खास विधान सभा क्षेत्र के लालगंज तहसील में जनसभाएं की और भाजपा व कांग्रेस को जमकर खरी-खोटी सुनाई।

उत्तर प्रदेश में पुनः बनेगी भाजपा की सरकार : सांसद विनोद

बाबागंज में कमल खिलने से कोई रोक नहीं सकता : दयाशंकर सिंह

अखंड भारत संदेश

कुण्डा, प्रतापगढ़। जिस आशा उम्मीद के साथ उत्तर प्रदेश की जनता ने 2017 में उत्तर प्रदेश में भाजपा की सरकार बनाई थी। उसी उम्मीद से 2022 में भी प्रचण्ड बहुमत के साथ भाजपा फिर से सरकार बनाएगी। उक्त उद्गार कौशांबी सांसद/ भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय सचिव/संसदीय आचार समिति के सभापति एवं त्रिपुरा राज्य के प्रभारी विनोद सोनकर ने सोमवार को बाबागंज विधानसभा के अमर बहादुर शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान बहोरीकपुर में आयोजित प्रबुद्ध सम्मेलन में उपस्थित जनसमूह के बीच कहीं।

सांसद विनोद सोनकर ने आगे कहा केंद्र व प्रदेश सरकार द्वारा जो विकास कार्य पूरे देश में किया जा रहा है। उससे कुंडा एवं बाबागंज विधानसभा अछूता नहीं है। कुंडा बाबागंज की खराब सड़क यहां की पहचान हुआ करती थी। प्रदेश उपाध्यक्ष दयाशंकर सिंह ने कहा कि मुझे पूर्ण रुप से विश्वास है कि 2022 में बाबागंज से भी कमल खिलेगा। यहां के कार्यकर्ता जब भी मुझे बुलाएंगे मैं आपके बीच खड़ा मिलूंगा। बाबागंज के पूर्व प्रत्याशी पवन गौतम ने कार्यक्रम में आए हुए सभी लोगों के प्रति आभार प्रकट किया। सांसद विनोद सोनकर कुंडा नगर में भाजपा कार्यकर्ता ओम प्रकाश मिश्र के आवास पहुंच कर उनका कुशल क्षेम पूछा। सैनिक प्रकोष्ठ के सह संयोजक महेश सिंह मार्ग दुर्घटना में घायल हुये थे। सांसद ने घर पहुंच कर स्वास्थ्य की जानकारी ली। बछरौली में सुनील दत्त त्रिपाठी के पिता के प्रथम पुण्यतिथि पर पुष्पांजलि अर्पित की। कार्यक्रम में पूर्व प्रत्याशी त्रिभुवन नाथ मिश्र टंडन, केशव पासी, जिला उपाध्यक्ष राजन मिश्रा, कमलेश सोनकर, पूर्व जिला पंचायत सदस्य अभय प्रताप सिंह पप्पन, भाजपा नेता अखिलेश द्विवेदी, सांसद मीडिया प्रभारी भूपेंद्र पांडेय, कार्यक्रम संयोजक मनोज पाण्डेय, छेदीलाल सरोज, उदय शंकर पांडेय, पूर्व नगर निगम पार्षद सतेंद्र सोनकर, मंडल अध्यक्ष अमरजीत सिंह, भूपेंद्र तिवारी, सुनील मिश्रा, उदय शंकर मिश्रा, प्रमोद पटेल, राम कुमार कोरी, संतोष तिवारी, बड़े लाल मौर्या, अशोक मिश्रा, रामबाबू नामदेव व पवन ओझा समेत बड़ी संख्या में लोग मौजूद रहे।

किशोरी के साथ छेडछाड़, आरोपी के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज

लालगंज, प्रतापगढ़। कोतवाली पुलिस ने आरोपी के खिलाफ पीड़िता किशोरी के साथ छेडछाड को लेकर केस दर्ज किया है। कोतवाली के कौड़ियाडीह के चंद्रमपुर निवासी जमुना धुरिया के पुत्र कल्लू धुरिया ने दी गई तहरीर मे कहा है कि बीती उन्नीस सितम्बर को सुबह साढ़े चार बजे उसकी पुत्री शौच के लिए गई थी। इस बीच गांव के आरोपी करन ने पुत्री अंजली 16 के साथ छेडछाड किया। पीडिता के शोर मचाने पर आरोपी ने उसे गाली देते हुए शिकायत करने पर जानलेवा धमकी दी। तहरीर के आधार पर पुलिस ने मंगलवार को आरोपी करन के खिलाफ छेडछाड तथा गालीगलौज व जानलेवा धमकी का केस दर्ज किया है।

हाईकोर्ट की निगरानी मे हो महंत नरेन्द्र गिरि की मौत के घटनाचक्र की जांच

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। प्रयागराज मे अखाड़ा परिषद के अध्यक्ष महन्त नरेन्द्र गिरि के निधन पर अधिवक्ताओं ने दुख जताया है। मंगलवार को तहसील परिसर मे बैठक के जरिए महंत की स्मृति को नमन करते हुए ऑल इण्डिया रूरल बार एसोशिएसन के राष्ट्रीय अध्यक्ष ज्ञानप्रकाश शुक्ल ने कहा कि महंत नरेन्द्र गिरि ने सनातन भारतीय संस्कृति के संवर्धन मे आजीवन प्रेरणास्पद महनीय भूमिका का निर्वहन किया।

उन्होनें सरकार से महंत नरेन्द्र गिरि के निधन को लेकर वर्तमान स्थिति को स्पष्ट करने के लिए हाईकोर्ट की निगरानी मे पूरे घटनाक्रम की सीबीआई जांच अविलम्ब कराए जाने की मांग की है। बैठक का संचालन महासचिव हरिशंकर द्विवेदी ने किया। इस मौके पर अनिल त्रिपाठी महेश, शिव नारायण शुक्ल, सत्येंद्र श्रीवास्तव, संतोष पाण्डेय, शैलेन्द्र शुक्ल, राजेश तिवारी, अनूप पाण्डेय, विभाकर शुक्ल, राकेश शुक्ल, शेष तिवारी, संजय द्विवेदी, सिंटू मिश्र आदि रहे।

महंत नरेंद्र गिरि की मौत से बागरा में शोक

अखंड भारत संदेश

बाघराय, प्रतापगढ़। प्रयागराज के महंत नरेंद्र गिरी की मौत की सूचना मिलने पर रोर तक्षकधाम के प्रमुख पुजारी हरिशंकर शुक्ला ने कहा कि महंत नरेंद्र गिरि की कुछ स्वार्थी तत्वों ने हत्या करके शव को फांसी पर लटका कर आत्महत्या देने का रूप दिया है। इस मामले की निष्पक्ष जांच होनी चाहिए इसी क्रम में संत बटुकनाथ ने भी इस घटना की कड़ी निंदा की है। इस मौके पर संत घनश्याम दास, संत जयराम दास आदि ने घटना की सच्चाई से जांच किए जाने की मांग सरकार की है।

संचारी रोग तथा टीवी नियंत्रण पर दी गई जागरूकता

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। संचारी रोग नियंत्रण तथा क्षय रोग को लेकर मंगलवार को स्वास्थ्यकर्मियों ने जागरूकता अभियान चलाया। स्थानीय ब्लाक सभागार मे आंगनबाड़ी कार्यकत्रियों की बैठक मे प्रशिक्षकों ने संचारी रोग नियंत्रण के लिए गांव गांव जागरूकता का संकल्प जताया गया। प्रशिक्षक शिवम ने कार्यकत्रियों से कोविड गाइडलाइन के तहत अभियान की उपयोगिता को प्रभावी बनाए जाने पर जोर दिया। वहीं सांगीपुर सीएचसी मे चिकित्साधीक्षक डा. आनंद त्रिपाठी के निर्देशन मे क्षय रोग नियंत्रण को लेकर जागरूकता अभियान का शुभारंभ किया गया। ग्रामीण क्षेत्रो मे पहुंची चिकित्सा टीम ने लोगों को समय पर क्षय रोग का लक्षण समझाते हुए निकटतम स्वास्थ्य केंद्र मे स्वास्थ्य परीक्षण की सलाह दी। अधीक्षक डा. आनंद त्रिपाठी ने बताया कि टीबी के रोग पर नियंत्रण करने के लिए यह अभियान लगातार संचालित किया जाएगा।

उन्नत प्रजाति पर प्रक्षेत्र दिवस का हुआ आयोजन

अखंड भारत संदेश

परियावां, प्रतापगढ़। कृषि विज्ञान केन्द्र ऐंठू द्वारा संचालित कार्यक्रम समूहबद्ध अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन के अन्तर्गत उर्द की उन्नत प्रजाति शेखर-3 तथा मूँग की उन्नत प्रजाति आई0पी0एम0 2-3 का प्रदर्शन विकास खण्ड कालाकांकर के आलापुर गॉव में तथा सांगीपुर के पचखरा गॉव में 20 हे0 क्षेत्रफल में 50 किसानों के खेत पर किया गया है। उर्द-मूँग की इन उन्नत प्रजातियों को किसानों तक पहुँचाने तथा प्रचार प्रसार के लिए प्रक्षेत्र दिवस का आयोजन किया गया जिसमें आस-पास के किसानो को प्रक्षेत्र पर बुलाकर फसलों को दिखाया गया। शस्य वैज्ञानिक डा0 नवीन कुमार सिंह ने बताया कि इस फसल की देखरेख कृषि विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा मौसम अनुसार विभिन्न वैज्ञानिक संस्तुतियों के बारे में बताया। किसानों ने वैज्ञानिक से इस फसल के बारे में विधिवत जानकारी प्राप्त की। किसानों के खेत पर लगी फसल पर आयोजित प्रक्षेत्र दिवस में वीरेन्द्र सिंह, विजय नाथ मिश्र, रामआसरे सरोज, अनिल कुमार सिंह, दिनेश बहादुर सिंह, शिव शरण मिश्र, विजय सिंह आदि जागरूक किसान उपस्थित रहे।

बहला-फुसलाकर भगाने के आरोप में मुकदमा दर्ज

पट्टी, प्रतापगढ़। एक पिता ने नाबालिग लड़की को भगा ले जाने का आरोप लोगों पर लगाया है। पिता की तहरीर पर पुलिस ने आरोपियों पर मामला दर्ज कर लिया। तहसील क्षेत्र के सुखऊ दुबौली गांव की रहने वाली एक लड़की को गांव की फुलारा, रवि सिंह, आरती तथा दो अज्ञात लोग बहला-फुसलाकर भगा ले जाएंगे। पीड़ित ने मामले में आरोपियों पर नामजद तहरीर दिया। पुलिस ने सभी आरोपियों पर मामला दर्ज कर मामले की छानबीन में जुटी हुई है।

विधान सभा चुनाव की तैयारी में प्रशासन हुआ सजग

महुली मण्डी के ईवीएम गोदाम के आसपास हुई सफाई

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। विधान सभा सामान्य निर्वाचन-2022 के क्रम में प्रशासन सजगता दिखा रहा है। मंगलवार को महुली मण्डी स्थित ईवीएम गोदाम के आसपास उगी घासों व फैली गंदगी को साफ करने के लिये नगर पालिका के सफाई गैंग लगाया गया। बता दें कि छह माह बाद विधान सभा चुनाव के दौरान यहां ईवीएम को निकालने व रखने के लिये अधिकारियों व कर्मचारियों की दौड़-भाग होगी। ऐसे में पूरे क्षेत्र को साफ-सुथरा रखने की जिम्मेदारी जिला निर्वाचन अधिकारी/जिलाधिकारी डा0 नितिन बंसल ने नगर पालिका को दी है। इसके तहत नगर पालिका के अधिशाषी अधिकारी मुदित सिंह के निर्देशन में आज नगर पालिका ने सफाई शुरु कर दी है। यह जानकारी देते हुए नगर पालिका के सफाई निरीक्षक संतोष कुमार सिंह ने बताया कि मंगलवार को घासों को हटाकर सफाई करने का कार्य किया गया। ईवीएम गोदाम के चारों तरफ इसी तरह की साफ-सफाई सुनिश्चित की जाएगी।

रानीगंज विधायक ने विकास परियोजनाओं का किया लोकार्पण

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में प्रदेश सरकार के सफलतम साढे चार वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में विधायक रानीगंज अभय कुमार उर्फ धीरज ओझा ने डाक बंगला परिसर रानीगंज में आयोजित लोकार्पण एवं शिलान्यास कार्यक्रम में जिला पंचायत प्रतापगढ़, नगर पंचायत रानीगंज, सुवंसा व पृथ्वीगंज, लोक निर्माण विभाग तथा ग्रामीण अभियंत्रण विभाग की करोड़ो रूपये की विभिन्न विकास परियोजनाओं का शिलान्यास एवं लोकार्पण किया। इस दौरान उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री एवं मुख्यमंत्री की प्रेरणा से उन्होंने अपने साढ़े 4 वर्ष के अब तक के कार्यकाल में जनकल्याण में समर्पित रहते हुए सम्पूर्ण विधानसभा में लगभग 1100 करोड़ रुपये का सतत एवं चहुमुखी विकास सबका साथ एवं सबका विकास हासिल करते हुए बिना किसी भेद भाव के किया है। इस दौरान भाजयुमो के जिलाध्यक्ष अंशुमान सिंह, प्रमुख शिवगढ़ सत्यम ओझा, निवर्तमान प्रमुख गौरा राकेश सरोज, मण्डल अध्यक्ष प्रशांत श्रीवास्तव, विजय कौशल, बृजेश पटेल व कृपा गिरि, एसडीएम रानीगंज वी.के. प्रसाद, ईओ रानीगंज राजभान शुक्ल, ईओ पृथ्वीगंज सुभाष सिंह इत्यादि उपस्थित रहे।

न्यायालय के आदेश पर धोखाधड़ी का मामला दर्ज

पट्टी, प्रतापगढ़। पहली बार पिता और दूसरी बार पुत्र ने अलग-अलग लोगों के नाम एक ही जमीन का बैनामा कर दिया तो पीड़ित ने इस मामले में अदालत की शरण लिया। अदालत ने मामले में सभी आरोपियों पर धोखाधड़ी, गाली-गलौज और जान से मारने की धमकी का मामला दर्ज कर लिया। पट्टी कोतवाली क्षेत्र के बेलारामपुर गांव के रहने वाले विजय चौरसिया ने न्यायालय ने आरोप लगाया था कि गांव के रहने वाले प्रशांत भूषण के पिता ने 2004 में किसी एक व्यक्ति के नाम जमीन को बैनामा कर दिया था लेकिन 2019 में शशांक ने उसे जमीन का बैनामा फिर से विजय के नाम कर दिया इस मामले में पीड़ित ने पुलिस को शिकायत दिया था शिकायत के बाद भी मामला दर्ज नहीं हुआ तो पीड़ित ने न्यायालय की शरण लिया।

चेकिंग के दौरान तीन वांछित अभियुक्त गिरफ्तार

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। थाना कन्धई से उ0नि0 महेन्द्र सिंह मय हमराह द्वारा देखभाल क्षेत्र/चेकिंग के दौरान मुखबिर खास की सूचना पर थाना स्थानीय के मु0अ0सं0 366/2020 धारा 323, 504, 506, 307 भादंवि, से संबंधित वांछित अभियुक्त शकील पुत्र मो0 रज्जाक नि0 ग्राम जोगीपुर थाना कन्धई को थाना क्षेत्र कन्धई के दीवानगंज कर्माही मोड़ के पास से गिरफ्तार किया गया। उधर थाना कन्धई से उ0नि0 राहुल कुमार मय हमराह द्वारा देखभाल क्षेत्र/चेकिंग के दौरान मुखबिर खास की सूचना पर थाना स्थानीय के मु0अ0सं0 228/2021 धारा 498ए, 304बी, भादंवि व 3/4 डीपी एक्ट से संबंधित वांछित अभियुक्त लल्लन वर्मा पुत्र स्व0 रामकिशोर वर्मा नि0 नेवादा गहरीचक थाना कन्धई को थाना क्षेत्र कन्धई के ग्राम नेवादा गहरीचक से गिरफ्तार किया गया। उधर थाना कुण्डा से प्रभारी निरीक्षक राकेश कुमार भारती मय हमराह द्वारा देखभाल क्षेत्र/चेकिंग के दौरान मुखबिर खास की सूचना पर थाना स्थानीय के मु0अ0सं0 305/2021 धारा 376 भादवि व 3/4 पॉक्सो एक्ट से संबंधित वांछित अभियुक्त अजीत पटेल पुत्र बुधई पटेल नि0 बरगधा थाना कुण्डा को थाना क्षेत्र कुण्डा के मबई तिराहे के पास से गिरफ्तार किया गया।

बलात्कार के आरोपी को दस वर्ष का कारावास

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। अपर जनपद न्यायाधीश/विशेष न्यायाधीश पास्को एक्ट के न्यायाधीश पंकज कुमार श्रीवास्तव ने अभियुक्त अमर कुमार सरोज सुत नत्थू सरोज निवासी मोहम्मदपुर सोहाग, थाना संग्रामगढ़ को बलात्कार के आरोप में दस वर्ष के कारावास तथा 30 हजार रुपये के अर्थदण्ड से दण्डित करने का आदेश पारित किया। तथा धमकाने के आरोप में सात वर्ष का कारावास और दस हजार रुपये के अर्थदण्ड से दण्डित किया। अर्थदण्ड का भुगतान न करने पर दो माह का अतिरिक्त कारावास भुगतना होगा। बता दें कि वादी मुकदमा ने 8 सितम्बर 2014 को प्रार्थना पत्र दिया कि अमर कुमार सरोज 8 सितम्बर 2014 को मिला जिसको मैं पहले से जानती थी, मुझको साथ चलने के लिये कहा तो मैं अपने भाई को घर जाने के लिये कहकर अमर कुमार के साथ साइकिल पर बैठकर वापस मोहम्मदपुर सोहाग तालाब के पास ले गया जहां पर मेरे मना करने के बाद जबरन बलात्कार किया। बलात्कार के बाद जान से मारने की धमकी देते हुए भाग गया। सरकार की ओर से पैरवी सहायक शासकीय अधिवक्ता निर्भय सिंह ने किया।

खबर संक्षेप

तमंचा व कारतूस के साथ अभियुक्त गिरफ्तार

कौशाम्बी। थाना कड़ाधाम पुलिस उपनिरीक्षक मनोज कुमार यादव मय हमराह पुलिस बल द्वारा अभियुक्त विरेन्द्र कुमार पुत्र रामभवन निवासी रामपुर बढ़नावा थाना कड़ाधाम के कब्जे से एक अदद तमंचा 12 बोर व दो अदद जिंदा कारतूस 12 बोर बरमाद होने पर अभियुक्त को गिरफ्तार कर कार्यवाही के पश्चात न्यायालय भेज दिया है।

वांछित का अभियुक्त गिरफ्तार

कौशाम्बी। थाना मोहब्बतपुर पाइंस पुलिस प्रभारी निरीक्षक रमेश चंद्र मय हमराह पुलिस बल द्वारा वांछित अभियुक्त शैलेन्द्र उर्फ नानक पुत्र स्व0 कामता प्रसाद निवासी कुण्ड्रावी थाना मोहब्बतपुर पाइंस को गिरफ्तार कर कार्यवाही के पश्चात न्यायालय भेज दिया है।

चोरी की मोटरसाइकिल के साथ अभियुक्त गिरफ्तार

कौशाम्बी। जिले में अपराध एंव अपराधियो के विरुद्ध चलाये जा रहे अभियान के क्रम में पुलिस अधीक्षक के निर्देशन में थाना पश्चिम शरीरा पुलिस उपनिरीक्षक मुनेश कुमार गौतम मय फोर्स द्वारा अभियुक्त देवराज पुत्र भुवनेश्वर नोनिया निवासी तीन पहाड़ बाबूपुर थाना राजमहल जिला साहिबगंज झारखंड को मुखबिर की सूचना पर चोरी के पांच मोबाइल एंव चोरी की मोटरसाइकिल के साथ गिरफ्तार कर कार्यवाही के पश्चात न्यायालय भेज दिया है।

कोविड 19 के दृष्टिगत की गई चेकिंग

कौशाम्बी। पुलिस अधीक्षक के निर्देशन में जिले में विभिन्न थानों द्वारा कोविड 19 का पालन न करने वाले व यातायात के नियमो को न मानने वालों के विरुद्ध जांच अभियान चलाकर कर चेकिंग की गई व दो पहिया व चार पहिया वाहनों की जांच की गई जिसमे 240 वाहनों का ई चालान कर दिया गया व सात वाहन का चालान कर 3750 रुपए शुल्क वसूल किया गया व कोविड 19 का उलंघन करने वाले 16 व्यक्तियों से 2100 रुपए जुमार्ना वसूल किया गया।

शरीर को स्वस्थ रखने हेतु व्यायाम आवश्यक

टेडीमोड कौशाम्बी। आजादी का अमृत महोत्सव फिट इंडिया फ्रीडम के तहत प्राथमिक विद्यालय शीतला धाम कड़ा में राष्ट्रीय युवा स्वयंसेवक विनय पाण्डेय एवं दीपेन्द्र अग्रहरि ने हो रहे टीकाकरण में अधिक से अधिक लोगों को जागरूक कर टीकाकरण में सहयोग किया एवं शरीर को स्वस्थ रखने हेतु प्रतिदिन व्यायाम करने, योगा करने एवं दौड़ने के लिए प्रेरित किया। कार्यक्रम में प्राथमिक विद्यालय के प्रधानाचार्य नितेश कुमार त्रिपाठी एवं उत्क्ष कड़ा अधीक्षक डॉक्टर नीरज सिंह उपस्थित रहे।

दिनदहाड़े युवक की गला घोटकर हत्या

● परिजनों ने लगाया आत्महत्या का आरोप चौकी इंचार्ज अलापने लगे परिजनों की भाषा

अखंड भारत संदेश

कौशांबी। कोखराज थाना क्षेत्र के टेडीमोड चौकी अंतर्गत एक युवक की दिनदहाड़े गला घोट कर मुंह नाक दबाकर बेरहमी से हत्या कर उसे आत्महत्या का रूप देने का प्रयास किया गया है युवक की हत्या में शामिल लोग दो दिन पहले पुलिस के साथ वातालाप करते देखे सुने गए हैं लोगों का कहना है कि युवक की हत्या के पूर्व हत्या का ठेका चौकी पुलिस से हुआ है और ठेका लेने के बद पुलिस के सहयोग से युवक की हत्या की गई है हत्या करने के बाद आत्महत्या किए जाने की कहानी का राग परिजनों के साथ चौकी इंचार्ज ने भी अलापना शुरू कर दिया है लेकिन किसी ने भी युवक को फंदे से लटकते नहीं देखा है मौके पर स्टूल और डोरी नहीं मिली है युवक के शरीर में चोट के निशान है सूत्र बताते हैं कि नाक मुँह दबा कर गला घोंटकर युवक की हत्या की गई है।

घटना स्थल पर छान बिन करती पुलिस

जानकारी के मुताबिक कोखराज थाना क्षेत्र के अंतर्गत टेडीमोड पुलिस चौकी के टड़ाहर पर गांव निवासी जवाहर लाल पटेल उम्र 30 वर्ष पुत्र मिठाई लाल पटेल का अपनी पत्नी से विवाद चल रहा था आए दिन पति पत्नी के बीच विवाद होता था दोनों का विवाद कई बार स्थानीय पुलिस चौकी तक भी पहुंचा लेकिन पुलिस ने मामले के निस्तारण में तेजी नहीं दिखाई मंगलवार को दिन दहाड़े युवक के घर में कुछ बाहरी लोग आए ग्रामीणों ने घर के भीतर हो हल्ला झगड़ा भी सुना है ग्रामीणों की माने तो जवाहरलाल मदद की गुहार लगा रहा था ग्रामीणों को आशंका है कि युवक की हत्या कर दी गई है परिजनों ने हो हल्ला मचाना शुरू कर दिया कि युवक ने आत्महत्या कर लिया है मामले की जानकारी मिलते ही चौकी इंचार्ज टेडीमोड मौके पर पहुंचे और परिजनों के आत्महत्या के बयान पर तमाम साक्ष्य को नजरअंदाज कर चौकी इंचार्ज भी युवक के आत्महत्या करने का राग अलापने लगे हैं युवक की लाश को कब्जे में लेकर पुलिस ने पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है अब सवाल उठता है कि मौके पर हत्या के तमाम साक्ष्य मौजूद होने के बाद चौकी इंचार्ज ने उसे आत्महत्या कहकर क्यों हत्या के मामले को दबाने का प्रयास किया है सूत्र बताते हैं कि दो दिन पहले पुलिस से इस घटना में शामिल लोगों की वार्ता भी हुई है युवक की हत्या की कही सौदेबाजी तो पहले से नही हो गयी है चौकी इंचार्ज नित्यानंद सिंह के कार्यकाल में इस क्षेत्र में कई लोगों की हत्याएं हो चुकी है किसी मामले का चौकी इंचार्ज ने खुलासा नहीं किया है हत्या के मामले को आत्महत्या और दुर्घटना बताकर चौकी इंचार्ज नित्यानंद सिंह को हत्यारों को बचाने में महारत हासिल है इनके पूर्व के चौकी इंचार्ज के कार्यकाल में भी टेडीमोड चौकी क्षेत्र में कई लोगों की हत्याएं हो चुकी है लेकिन किसी भी मामले का खुलासा नहीं हो सका है इलाके के लोगों ने आला अधिकारियों का ध्यान आकृष्ट कराते हुए पुलिस चौकी टेडीमोड क्षेत्र में कई हत्याओं के मामले की फिर से जांच कराए जाने और संपूर्ण मामले की पोस्टमार्टम रिपोर्ट को नजर अंदाज कर विवेचना के मामले को गंभीरता से लेते हुए सच्चाई उजागर कर दोषी चौकी इंचार्ज पर कठोर कार्रवाई करने की मांग की है।

मौके पर नहीं मिली रस्सी

कौशांबी टेडीमोड। पुलिस चौकी क्षेत्र में जवाहरलाल की हत्या को आत्महत्या बता कर इस हत्याकांड के आरोपियों को बचाने का प्रयास करने वाले चौकी इंचार्ज को घटनास्थल से रस्सी नहीं मिली है जब मौके पर ग्रामीण पहुंचे हैं तो लाश कमरे के अंदर रक्खी थी बिना रस्सी के कैसे युवक ने फांसी का फंदा लगाकर आत्महत्या कर लिया है मौके पर कोई स्टूल भी नहीं मिला है युवक की जीभ भी बाहर नहीं निकली है इस गंभीर बिंदु पर चौकी इंचार्ज का नजरअंदाज करना या तो उनकी संलिप्तता की ओर इशारा कर रहा है या फिर उन्हें घटनाओं के खुलासे का ज्ञान नहीं है दोनों मामले में उन्हें निलम्बन का रास्ता दिखाया जाना और दूसरे चौकी इंचार्ज से संपूर्ण प्रकरण की जांच कराया जाना आवश्यक होगा।

एसपी ने किया स्थानांतरण नहीं छोड़ सके पुलिस चौकी

कौशांबी टेढ़ी मोड़। पुलिस चौकी में तैनात नित्यानंद सिंह को पुलिस अधीक्षक ने नारा पुलिस चौकी स्थानांतरण कर दिया है लेकिन एसपी के स्थानांतरण आदेश को कई दिन बीत जाने के बाद भी नित्यानंद सिंह टेडीमोड पुलिस चौकी से नारा पुलिस चौकी नहीं पहुंच सके हैं आखिर इन्हें टेढ़ी मोड़ पुलिस चौकी से क्या लगाव है जिसके चलते उन्होंने आला अधिकारियों के आदेशों का पालन नहीं किया है तमाम हत्या के खुलासे में फिसड्डी टेडी मोड़ चौकी इंचार्ज नित्यानंद सिंह को निलंबित कर इनके कार्यकाल की घटनाओं की पुनः जांच कराए जाने की लोगों ने मांग की है।

अलग-अलग थानों द्वारा पांच अभियुक्त गिरफ्तार

कौशाम्बी। जिले में अपराध एंव अपराधियो के विरुद्ध चलाये जा रहे अभियान के क्रम में अलग अलग थानों द्वारा पांच अभियुक्तो को गिरफ्तार किया गया है और न्यायालय के सुपुर्द कर दिया है जानकारी के मुताबिक थाना कौशांबी पुलिस उपनिरीक्षक जयंत गुप्ता मय हमराह पुलिस बल द्वारा वारंटी अभियुक्त सत्य नारायण पुत्र बंशी रैदास निवासी बिंदाव थाना कौशांबी को गिरफ्तार कर कार्यवाही के पश्चात न्यायालय भेज दिया है। इसी प्रकार थाना कोखराज पुलिस उपनिरीक्षक महेंद्र प्रताप सिंह मय हमराह पुलिस बल द्वारा वारंटी अभियुक्त अंशु उर्फ रवि शंकर पुत्र सूरज प्रताप थाना कोखराज को गिरफ्तार कर कार्रवाई के पश्चात न्यायालय भेज दिया है। इसी प्रकार थाना कौशांबी पुलिस उपनिरीक्षक मुन्ना सिंह यादव मय हमराह पुलिस बल द्वारा दो वारंटी अभियुक्त बुद्ध पासी पुत्र राम पासी और काशी पासी पुत्र बजरंग निवासी दुकसहा थाना कौशांबी को गिरफ्तार कर कारवाई के पश्चात न्यायालय भेज दिया है। इसी प्रकार थाना पिपरी पुलिस उपनिरीक्षक अमित कुमार मय हमराह पुलिस बल द्वारा वारंटी अभियुक्त राजकुमार उर्फ लाला पुत्र गुलाब पासी निवासी डाहीनुमाया थाना पिपरी को गिरफ्तार कर कार्यवाही के पश्चात न्यायालय भेज दिया है।

समस्याओ का निस्तारण करते जिलाधिकारी

डीएम ने भूतपूर्व सैनिकों की समस्यायें सुन तत्काल निस्तारण के दिये निर्देश

अखंड भारत संदेश

कौशाम्बी। जिलाधिकारी सुजीत कुमार की अध्यक्षता में कलेक्ट्रेट स्थित सम्राट उदयन सभागार में जिला सैनिक बन्धु की बैठक आयोजित की गयी बैठक में कुल 13 भूतपूर्व सैनिकों ने अपनी समस्याओं से जिलाधिकारी को प्रार्थना पत्र देकर अवगत कराया जिस पर

जिलाधिकारी की अध्यक्षता में जिला सैनिक बन्धु की बैठक संपन्न

जिलाधिकारी ने संबंधित अधिकारियों को तत्काल समस्या के निस्तारण करने के निर्देश दिये इस अवसर पर जिला सैनिक कल्याण एवं पुनर्वास अधिकारी कैप्टन नजमुल हुदा सहित अन्य संबंधित अधिकारीगण उपस्थित रहे।

गाली गलौज मारपीट कर पिस्टल लगा कर दी गोली मारने की धमकी

कौशांबी। चरवा थाना क्षेत्र समसपुर निवासी शंकरलाल पुत्र ननकू 17 सितंबर की सुबह चरवा चौराहे पर बैंक के पास किराने की दुकान में चीनी खरीदने गए थे किराने की दुकान से चीनी खरीदने के बाद उन्होंने साइकिल में चीनी के बोरे को रख दिया इसी बीच मदूकी निवासी बाइक सवार राजेश्वर पहुँचा और शंकरलाल से विवाद करने लगा राजेश्वर का कहना था कि उसके पिता की मौत पर शंकरलाल ने अफवाह फैलाई है कि राजेश्वर ने अपने पिता की हत्या कर दी है और पिता की समस्त संपत्ति पर कब्जा कर लिया है इस बात से भन्नाए राजेश्वर ने शंकरलाल को गाली गलौज कर मारपीट की है इतना ही नहीं आरोप है कि राजेश्वर ने शंकर लाल के कनपटी में पिस्टल लगाकर गोली मारने की धमकी दी है जिससे शंकरलाल भयभीत होकर मदद की गुहार लगाने लगा राजेश्वर का कहना है कि बहुत न्याय बोलते हो तुम्हारी हत्या कर देंगे मौके की स्थिति देखकर बैंक में लगे सुरक्षाकर्मी और अन्य लोगों ने बीच-बचाव कर शंकरलाल की जान बचाई है मामले की सूचना पीड़ित ने स्थानीय थाना पुलिस को दिया है।

ग्रामीणों ने विधायक से फरियाद कर समस्याओं के निस्तारण की मांग की

कार्यक्रम को संबोधित करते विधायक शीतला प्रसाद पटेल व उपस्थित आम जनमानस

अखंड भारत संदेश

टेडीमोड कौशाम्बी। कड़ा ब्लाक के उच्च प्रथमिक विद्यालय आंदावा मे सोमवार को चौपाल लगाकर सिराथू विधायक शीतला प्रसाद पटेल ने आमजन मानस की तमाम समस्याओं को सुना और जनता की समस्याओं के समाधान के लिए उन्होंने संबंधित अधिकारियों को निर्देशित किया। ग्रामवसियो ने पानी की समस्या आवास दिलाए जाने की मांग के साथ आवासीय योजना में भ्रष्टाचार की शिकायत विधायक से की जनसुनवाई में ग्रामीणों ने विधायक से शौचालय निर्माण की रकम ना मिलने की शिकायत की बारिश मे तमाम गरीब ग्रामीणों के कच्चे मकान गिर गए है जिस पर पीड़ित ब्यक्तियो ने मकान गिरने पर मुआवजे की रकम दिलाने की और आवास की रकम स्वीकृति कराने की विधायक से फरियाद की। सिराथू विधायक शीतला प्रसाद पटेन ने संबंधित अधिकारियों को तत्काल समस्याओं के निस्तारण का निर्देश दिया है विधायक की जनसुनवाई के दौरान ग्राम प्रधान एकता राज सहित तमाम गणमान्य व्यक्ति और भाजपा पार्टी नेता आमजनता फरियादी मौजूद रहे।

मेहता कॉलेज में योगासन प्रतियोगिता का हुआ आयोजन

अखंड भारत संदेश

भरवारी कौशाम्बी। भवंस मेहता विद्याश्रम भरवारी में योगासन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया प्रतियोगिता का शुभारंभ विद्याश्रम के निदेशक संदीप सक्सेना ने किया योगासन प्रतियोगिता के अवसर पर उन्होंने कहा कि छात्र-छात्राओं ने इतना सुन्दर ढंग से योगासन कर मुझे मन्त्र मुग्ध कर दिया।

प्रधानाचार्य संजय कुमार श्रीवास्तव ने बताया कि योग करने से बच्चों मे शारीरिक सुन्दरता और फिटनेस बड़ती है योगासन के परिणाम इस प्रकार रहे बालक वर्ग 2 से 5श्रेयान्स, अली वारिश, अनमोल केशरवानी प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय रहे ।कार्तिक एवं अदित्या को सांत्वना पुरस्कार मिला। बालिका वर्ग-सादमा, आर्य श्री प्रथम इच्छा यादव द्वितीय एवं रिद्धी

योगासन करते मेहता कालेज के बच्चे

तृतीय एवं पुष्पान्जली को सांत्वना पुरस्कार से सम्मानित किया गया। बालक वर्ग 6 से 8 आशुतोष शाश्त्री,कृष्णानंद,एवं अनमोल क्रमशः प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय रहे बालिका वर्ग में-स्मृति , एन्ज्लीना सिंह एवं अनन्या सिंह को प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय रही। सीनियर बालिका वर्ग अपने ग्रुप में सोविया इरशाद प्रथम एवं सताक्षी दिवाकर भी अपने ग्रुप में प्रथम रही। सुधाकर सिंह निर्णायक की भूमिका में रहे सुशील श्रीवास्तव,विवेक एवं दीपाली सिंह आदि ने भी बच्चों का उत्साह वर्धन किया।

मजदूरी करने दिल्ली गया युवक रहस्यमय परिस्थितियों में गायब

कौशांबी। चरवा थाना क्षेत्र के बलीपुर टाटा गांव की सुमन देवी पत्नी जितेंद्र कुमार रैदास ने चरवा थानेदार को तहरीर देकर आरोप लगाया है कि उसका 20 वर्षीय लड़का दुर्गेश कुमार कुछ माह पूर्व बनारस काम करने गया था लेकिन वहां काम ठीक से ना मिलने पर वह दिल्ली रोजगार की तलाश में जाने लगा पीड़ित महिला का कहना है कि गांव के लाला पुत्र जीत बहादुर के साथ दुर्गेश 8 अगस्त को काम करने दिल्ली चला गया दुर्गेश ने अपनी माता को लाला के मोबाइल फोन से दिल्ली जाने की सूचना दी लेकिन 8 अगस्त के बाद लाला के साथ गया दुर्गेश अचानक रहस्यमय परिस्थितियों में गायब हो गया है उसका कहीं पता नहीं चल रहा है काफी खोजने के बाद भी ठेकेदार लाला कुछ बताने को तैयार नहीं है गायब युवक के परिजनों का आरोप है कि जब लाला से युवक के बारे में पूछताछ की जाती है तो वह गाली गलौज कर अभद्रता करने लगता है पीड़ित ने थाने में तहरीर देकर आरोपी पर कार्रवाई करने की मांग की है।

नरेंद्र मोदी एप पर सभी कार्यकर्ता करें अपना रजिस्ट्रेशन : अनीता त्रिपाठी

अखंड भारत संदेश

कौशाम्बी। भारतीय जनता पार्टी कार्यालय मंझनपुर में आईटी एवं सोशल मीडिया विभाग की संगठनात्मक बैठक संपन्न हुई, बैठक में सोशल मीडिया के क्षेत्रीय सह संयोजक पुंडरीक मिश्रा ने कहा कि आने वाले 27 तारीख को एवं सोशल मीडिया का कमिश्नरी प्रयागराज का सम्मेलन प्रयागराज में मैं होगा आईटीएम सोशल मीडिया के सभी कार्यकर्ता बंधु अधिक से अधिक संख्या में पहुंच कर कार्यक्रम को सफल बनाएंगे उन्होंने कहा कि आप सभी की गतिविधियां संगठन के पदाधिकारियों के द्वारा निरंतर देखी जाती है। जिला अध्यक्ष अनीता त्रिपाठी ने बैठक को संबोधित करते हुए कहा कि विचार करता पूरी तन्मयता के साथ कार्य करते हैं सूचना सोशल मीडिया के कार्यकताओं के कंधों पर है करने और संगठन ने सेवा के बहुत ही सारे काम किए हैं जिनका प्रचार और प्रसार सोशल मीडिया के कार्यकर्ता आम लोगों तक करें संजय जयसवाल ने बैठक को संबोधित करते हुए कहा कि नरेंद्र मोदी एप पर सभी कार्यकर्ता अपना रजिस्ट्रेशन जरूर कराएं उन्होंने कहा कि आईटी और सोशल मीडिया विभाग भारतीय जनता पार्टी की आंख नाक और कान है जिला संयोजक आईटी सत्यम केशरवानी ने संबोधित करते हुए कहा कि संगठन के द्वारा दिए गए कार्यों को हम सभी मिलकर तय समय सीमा के अंदर संपन्न करें अध्यक्ष और संगठन के द्वारा दिए गए निदेशों का पालन करें, जिला संयोजक सोशल मीडिया जितेन साहू जिला महामंत्री भारतीय जनता पार्टी जय प्रकाश विश्वकर्मा भारतीय जनता पार्टी युवा मोर्चा के जिला अध्यक्ष प्रताप मौर्य रिंकू मौर्य सह संयोजक शिवम केसरी राम कुमार साहू मंझनपुर के आईटी संयोजक विकास गुप्ता सोशल मीडिया विधानसभा संयोजक मंझनपुर अभिषेक गुप्ता सिराथू के विधानसभा संयोजक आईटी कृष्णा तिवारी सोशल मीडिया के विधानसभा संयोजक निखिल कुशवाहा के साथ संगठन द्वारा बनाए गए सभी 15 मंडलों से मंडल के संयोजक एवं सहसंयोजक आईटीएम सोशल मीडिया के कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

कार्यक्रम में उपस्थित अनीता त्रिपाठी व अन्य

कार्यक्रम में उपस्थित भगवा रक्षा परिषद के पदाधिकारी

कौशाम्बी मे बढ़ रहा भगवा रक्षा परिषद का कारंवा

तिल्हापुर मोड कौशाम्बी। जिले में भगवा रक्षा परिषद के बढ़ते कारवां से जिला प्रवक्ता कृष्ण कुमार राजू केशरवानी ने बधाई दी उन्होंने कहा कि भगवा रक्षा परिषद में जुड़ने के लिए सनातन धर्म मानने वाले जिसमे गौ रक्षा मठ मन्दिर रक्षा,सनातनधर्म रक्षा, करना ही परिषद के उद्देश्य है जनपद में जिला मंत्री शिवदत्त शुक्ला अरविंद पांडेय, विधान सभा मंझनपुर,मंत्री शिव भूषण शुक्ला, विधान सभा चायल से एडोकेट पवन कुमार,और सरसैंवा ब्लाक अध्यक्ष जयप्रकाश द्विवेदी को जिला प्रवक्ता ने जनपद कार्यालय कौशाम्बेस्वर संकट मोचन आश्रम जोटका कौशाम्बी में मनोनयन पत्र दिया वही जिला अध्यक्ष रोहित मिश्रा ने सदस्यता अभियान चलाने व ज्यादा से ज्यादा लोगो को जोड़ने की अपील किया जिला महामंत्री संजय शुक्ला ने सभी के दायित्व के महत्व को बताया बैठक में जिला प्रवक्ता तरुण तिवारी ने कहा कि मानव सेवा ही सच्ची सेवा है इसलिए गरीब असहाय की मदद के लिए भगवा रक्षा परिषद के सभी सदस्य आगे आयें कार्यक्रम में जिला कार्यकरणी सदस्य सुरेंद्र कुमार पाल, कमलेश कुमार, अमित शुक्ला, शुशील कुमार, बच्चा लाल, सोनू सहित विभिन्न लोग उपस्थित रह।

समर्थकों समेत ग्राम प्रधान समर्थ किसान पार्टी में शामिल

अखंड भारत संदेश

कौशाम्बी। समर्थ किसान पार्टी की ताकत में दिन प्रति दिन इजाफा हो रहा है। रोज दर रोज लोगों का समर्थ किसान पार्टी में शामिल होने का सिलसिला जारी है। इसी कड़ी में समर्थ किसान पार्टी के उदहिन बुजुर्ग कार्यालय में सोमवार को देवखरपुर ग्राम प्रधान रतन त्रिपाठी अपने तमाम समर्थकों समेत समर्थ किसान पार्टी में शामिल हो गए और तमाम लोगों के साथ समर्थ किसान पार्टी की सदस्यता ग्रहण की। इस अवसर पर पार्टी नेता अजय सोनी ने उनको सदस्यता कराई और माला पहनाकर पार्टी में उनका स्वागत किया। साथ में कई और लोगों की भी सदस्यता कराई गई और माला पहनाकर पार्टी में उनका स्वागत किया गया। इस अवसर पर पार्टी नेता अजय सोनी ने कहा कि समर्थ किसान पार्टी गांव, गरीब, किसान, मजदूर, श्रमिक, कामगार, बेरोजगार युवा और आम जनता की पार्टी है। इस पार्टी के प्रति लोगों में भारी विश्वास पैदा हो रहा है और लोगों को सही मायने में यह प्रतीत हो रहा है कि आम जनता के हित के लिए यह पार्टी बहुत सही पार्टी है जो लोगों के विकास एवं खुशहाली के लिए संघर्ष करती है। इस अवसर पर अजय सोनी ने कहा कि जनपद कौशांबी के करीब एक दर्जन से अधिक ग्राम प्रधान समर्थ किसान पार्टी की लोकप्रियता एवं विचारधारा से प्रभावित होकर पार्टी में शामिल होने को तैयार हैं और जल्द ही उन्हें पार्टी में शामिल किया जाएगा। इस अवसर पर ग्राम प्रधान रतन त्रिपाठी ने कहा कि समर्थ किसान पार्टी की किसानवाद की विचारधारा से प्रभावित होकर हमने अपने समर्थकों समेत समर्थ किसान पार्टी में शामिल होने का फैसला किया है। आगे कहा कि जब भी पार्टी द्वारा हमें कोई जिम्मेदारी सौंपी जाएगी, हम पूरी निष्ठा के साथ पार्टी द्वारा दी गई जिम्मेदारी का निर्वाहन करेंगे। इस अवसर पर अखिलेश पटेल, अजित सरोज, सुरजीत वर्मा, प्रमोद कुमार, गोविंद मिश्रा, सोनी मौर्य, पुष्पा सोनकर, रुक्मिणी देवी समेत कई लोग मौजूद रहे।

कार्यक्रम में उपस्थित समर्थ किसान नेता

भाजपा सरकार ने किया प्रदेश का चौमुखी विकास : जितेन्द्र सोनकर

कौशाम्बी। सरसवां विकास खण्ड क्षेत्र के देवरी बड़हरी ग्राम पंचायत में जन चौपाल का आयोजन किया गया। जन चौपाल में पार्टी पदाधिकारी व गांव के लोगो ने जिला पंचायत अध्यक्ष प्रतिनिधि जितेन्द्र कुमार सोनकर पूर्व ब्लाक प्रमुख का फूल माला से भव्य स्वागत किया है। उन्होने सरकार के साढ़े चार साल में सरकार की उपलब्धियां गिनाई है। सरसवां ब्लाक के देवरी बड़हरी गांव में जन चौपाल के कार्यक्रम का आयोजन सोमवार को किया गया, जिसके मुख्य अतिथि जिला पंचायत अध्यक्ष प्रतिनिधि जितेन्द्र कुमार सोनकर का पार्टी कार्यकर्ता व गांव के लोगो ने भव्य स्वागत किया है। जितेन्द्र कुमार सोनकर ने मंच के माध्यम से लोगो को आभार व्यक्त किया साथ ही गांव के लोगो को भाजपा सरकार में साढ़े चार साल की उपलब्धियां गिनाई उन्होने कहा कि भाजपा सरकार ने सभी माताओं बहनों को उज्जवला योजना का लाभ दिया एवं किसानों को किसान सम्मान निधि का लाभ पात्रों तक पहुँचा रही है। उन्होने सरकार के तमाम योजनाओं को लोगो को गिनाया है। इस मौके पर मण्डल अध्यक्ष पश्चिम शरीरा भास्कर सिंह, शक्ति केन्द्र अध्यक्ष शैलेन्द्र सिंह, बूथ अध्यक्ष रमेश सिंह सहित क्षेत्र के सैकड़ों लोग मौजूद रहे।

जन चौपाल में भाजपा की उपलब्धियां बताते ब्लाक प्रमुख जितेन्द्र सोनकर

सम्पादकीय

बुखार से मर रहे बच्चे

उत्तराखंड, छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश, बिहार, झारखंड, राजस्थान और कर्नाटक से भी इस तरह से बच्चों की मौत की खबरें आ रही हैं। कुछ राज्यों में बुखार से मरने वालों की संख्या अभी भले ही कम है, लेकिन इसका यह मतलब निकालना गलत होगा कि वहां हालात गंभीर नहीं हैं। कोरोना महामारी के बीच देश के विभिन्न हिस्सों में अलग-अलग तरह के बुखार का प्रकोप राज्य सरकारों का नया सिरदर्द बन गया है। सबसे गंभीर स्थिति यूपी की है। यहां फिरोजाबाद जिले में बच्चों की मौत का सिलसिला थमने का नाम नहीं ले रहा। वायरल फीवर और डेंगू जैसे लक्षणों वाले 61 बच्चों की इस जिले में मौत हो चुकी है। आगरा जिले में भी हालात बिगड़ने लगे हैं। पिछले चार दिनों में वहां तेज बुखार से आठ बच्चों की जान चली गई। उत्तराखंड, छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश, बिहार, झारखंड, राजस्थान और कर्नाटक से भी इस तरह से बच्चों की मौत की खबरें आ रही हैं। कुछ राज्यों में बुखार से मरने वालों की संख्या अभी भले ही कम है, लेकिन इसका यह मतलब निकालना गलत होगा कि वहां हालात गंभीर नहीं हैं। उदाहरण के लिए, बिहार में अभी तक 15 बच्चों की मौत बताई जा रही है, लेकिन इस महीने तेज बुखार और फ्लू जैसे लक्षणों के साथ 7000 से ज्यादा बच्चे स्वास्थ्य केंद्रों पर लाए गए। साफ है कि बीमारी फैली हुई है। अगर इससे निपटने में लापरवाही हुई तो कहीं अधिक बच्चों की मौत हो सकती है। कोरोना के चलते पिछले करीब डेढ़ साल से देशवासियों की जो मनःस्थिति बनी हुई है, उसे देखते हुए इन बीमारियों की गंभीरता को समझना होगा।

निस्संदेह इन मौसमी बीमारियों की तुलना कोरोना से नहीं की जा सकती। लेकिन सर्दी-खांसी का ठीक न होना और तेज बुखार से पीड़ित बच्चों का दम तोड़ना, प्रभावित आबादी को ट्रॉमा में डालने के लिए काफी है। और कोरोना के खतरे से भी हम मुक्त कहां हुए हैं। आज भी रोजाना इसके लगभग 30 हजार नए मामले आ ही रहे हैं। भूलना नहीं चाहिए कि पिछले डेढ़ साल में देश के स्वास्थ्य ढांचे पर असाधारण बोझ रहा है। स्वास्थ्यकर्मियों ने इस दौरान अद्भुत धैर्य और क्षमता का परिचय दिया है। लेकिन और ज्यादा बोझ इस ढांचे को बैठा भी सकता है।

लिहाजा, जरूरी है कि चाहे कोरोना हो या अन्य मौसमी बीमारियां, इनके इलाज की व्यवस्था करने के साथ ही ध्यान इस बात पर केंद्रित किया जाए कि ये फैलें ही नहीं। यहां भी सरकारी तंत्र की अहम भूमिका है, लेकिन यह भी समझना होगा कि जन-स्वास्थ्य साझा जिम्मेदारी है। चाहे साफ-सफाई रखने और पानी न इकट्ठा होने देने की बात हो या दूरी बरतने, मास्क पहनने और अन्य सावधानियां बरतने की, इन मोर्चों पर जरा सी चुस्ती चमत्कार कर सकती है, जबकि जरा सी लापरवाही किए कराए पर पानी फेर सकती है।

दलित सीएम से क्या कांग्रेस को फायदा होगा

अनिल सिन्हा

अगले साल होने वाले विधानसभा चुनावों की आहट से संबंधित राज्यों में राजनीतिक उठापटक तेज हो गई है। बीजेपी ने उत्तराखंड में चार महीने में तीन मुख्यमंत्री दे दिए। कर्नाटक में (हालांकि वहां चुनाव 2023 में है) येदियुरप्पा को सीएम की कुर्सी से हटाया और गुजरात में तो मुख्यमंत्री के साथ उनका पूरा मंत्रिमंडल ही बदल डाला। मुख्यमंत्रियों की छुट्टी करने की इस लहर की चपेट में पंजाब भी आ गया है। वहां नए मुख्यमंत्री चरणजीत सिंह चन्नी ने शपथ ले ली है। वह राज्य के पहले दलित मुख्यमंत्री हैं। वहां दलितों की आबादी करीब एक तिहाई है, लेकिन उन्हें राज्य का नेतृत्व संभालने का मौका अभी तक नहीं मिल पाया था। अगर सामाजिक प्रगति के लिहाज से देखें तो यह एक क्रांतिकारी घटना है। पंजाब की राजनीति में संपन्न किसानों का, बल्कि कहें जाट समुदाय का वर्चस्व रहा है। सिखों और हिंदुओं, दोनों में वे ही नेतृत्व में रहे हैं।

भारत-पाक विभाजन में सबसे ज्यादा नुकसान पंजाब ने ही उठाया। यह इसके बावजूद हुआ कि वहां मुस्लिम लीग की राजनीति का कोई असर नहीं था और बड़े किसानों ने एक सेकुलर गठबंधन बना रखा था। विभाजन ने राज्य की राजनीति और जीवन, दोनों को बदल दिया। बंटवारे के बाद दोनों ओर सामूहिक कत्लेआम हुए और इसका नतीजा है कि पाकिस्तान वाले हिस्से में हिंदुओं-सिखों की आबादी ना के बराबर रह गई। यही हाल भारत वाले हिस्से का हुआ। यहां भी डेढ़ प्रतिशत मुसलमान रह गए। पंजाब में हिंदुओं, सिखों और मुसलमानों की आपस में गुंथी हुई जिंदगी थी। विभाजन से सब कुछ टूट गया। विभाजन के बाद वहां की राजनीति नए सिरे से शुरू हुई। इस नई राजनीति में अकाली दल और कांग्रेस के अलावा वाम दल प्रमुख भूमिका में थे।

खालिस्तानी आतंकवाद भी विभाजन से कम बड़ी परेशानी लेकर नहीं आया। इसने भी वहां के जन-जीवन को अस्त-व्यस्त किया। ऑपरेशन ब्लू स्टार जैसी घटनाएं हुईं। इसके बाद प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी और मुख्यमंत्री बेअंत सिंह की हत्या कर दी गई। राज्य के लोग इस दौर से भी निकल गए। ध्यान देने लायक बात है कि इस कठिन दौर में भी खेती और औद्योगिक उत्पादन नीचे नहीं आया। सामाजिक-आर्थिक हिसाब से देखें तो देश के बाकी हिस्सों की तरह यहां भी दलित हाशिए पर ही हैं। करीब 32 प्रतिशत की आबादी होने के बावजूद जमीन और संपत्ति में उनका न्यूनतम हिस्सा है। सिख धर्म के कारण उन्हें उस तरह के सामाजिक उत्पीड़न का शिकार नहीं होना पड़ता है, जो देश के बाकी हिस्सों में दिखाई देता है, लेकिन उनका आर्थिक शोषण कम नहीं है। शिक्षा और अन्य क्षेत्रों में भी उनकी भागीदारी काफी कम है। यह भी समझना गलत होगा कि समुदाय के रूप में दलित आपस में एक हैं। उनका एक तिहाई हिस्सा सिख है और मजहबी सिख कहलाता है। वे खेती से जुड़े हैं और ज्यादातर भूमिहीन किसान और खेतिहर मजदूर हैं। चर्मकार और वाल्मिकी समाज की तादाद भी अच्छी है। वे क्षेत्रीय आधार पर भी आपस में बंटे हुए हैं। उनकी राजनीतिक भागीदारी क्षेत्रीय आधार पर भी तय होती है।

कांशीराम ने अस्सी के दशक में दलितों को एक करने की कोशिश की थी और उनके प्रयासों का असर 1992 के चुनावों में दिखाई पड़ा। बीएसपी ने तब विधानसभा की नौ सीटें जीत ली थीं और उसे कुल 16 प्रतिशत वोट मिले। पार्टी ने 1996 का लोकसभा चुनाव शिरोमणि अकाली दल के साथ मिलकर लड़ा और तीन सीटों पर कब्जा किया। कांशीराम भी चुने गए। लेकिन कांशीराम के बाद बीएसपी का फोकस उत्तर प्रदेश पर ही रहा और पंजाब में पार्टी का आधार कमजोर होता गया। 2017 के चुनावों में उसे सिर्फ डेढ़ प्रतिशत वोटों से संतोष करना पड़ा।

परंपरागत रूप से दलित कांग्रेस के साथ रहे हैं। उसके जनाधार में बीएसपी की ओर से सेंध लगी थी, लेकिन अब दलित वापस इस ओर आ गए हैं। कांग्रेस ने 2017 के चुनावों में अनुसूचित जातियों के लिए आरक्षित 34 में से 22 सीटें जीती थीं। इसे ध्यान में रख कर ही अकाली दल ने आने वाले चुनावों के लिए मायावती से गठबंधन किया है। उसने बीएसपी को बीस सीटें दी हैं। अकाली दल ने यह वादा भी किया है कि उसकी सरकार आई तो वह दलित को उपमुख्यमंत्री पद देगा। यह कांग्रेस के लिए एक बड़ी चुनौती थी कि दलित समुदाय को वह किस तरह संतुष्ट करे। सत्ता-विरोधी भावना से डरी हुई कांग्रेस के लिए दलित समुदाय का वोट काफी मायने रखता है। कांग्रेस के इस दांव ने अकाली दल के उपमुख्यमंत्री पद के वादे को तो निरर्थक बना ही दिया है, लेकिन क्या दलित समुदाय का दिल जीतने के लिए यह काफी होगा

निश्चित रूप से विपक्षी दल इस कदम के पीछे छुपी कांग्रेस की मजबूरियां गिनाएंगे। सच भी है, पंजाब में दलित मुख्यमंत्री बनाने के पीछे कुछ तात्कालिक कारण भी काम कर रहे थे। एक बड़ा कारण तो यह था कि लंबे समय से कांग्रेस का नेतृत्व कर रहे कैप्टन अमरिंदर की जगह भरने के लिए ऐसे नेता की जरूरत थी, जो पार्टी के भीतर का शक्ति-संतुलन स्थिर रखे। नवजोत सिंह सिद्धू से खार खाए कैप्टन ने उनके खिलाफ ऐसा बयान दे दिया, जिससे विपक्ष को तिल मिल गया है। वह जब चाहे इसका ताड़ बना सकता है। जाटों के दो बड़े नेता सुखजिंदर सिंह रंधावा और सुनील जाखड़ के नाम पर सहमति न हो पाना भी एक कारण रहा, जिसकी वजह से अंत में चन्नी का नाम तय करना पड़ा। इन सबके बावजूद कांग्रेस का यह फैसला दूरगामी परिणाम ला सकता है। उत्तर प्रदेश में मायावती कांग्रेस पर निशाना साधती रही हैं। प्रतीकों की राजनीति के दौर में यह कदम अनदेखा नहीं रह सकता। यह भी ध्यान रखना होगा कि तमाम किंतु-परंतु के बावजूद यह सामाजिक प्रगति की ओर एक कदम है।

साहस और संवेदनशीलता के साथ भारत को नयी ऊँचाइयों पर पहुँचा रहे हैं प्रधानमंत्री मोदी

धरमलाल कौशिक

विकास का शायद ही कोई अभिकरण हो, जो प्रधानमंत्री के यशस्वी नेतृत्व से पोषित न हुआ हो। तीन दशक से अधिक समय के बाद राष्ट्रीय शिक्षा नीति लाकर शिक्षा व्यवस्था को समय के साथ संस्कार और कौशल विकास से युक्त किया गया है। 17 सितंबर को हम सभी ने देश के यशस्वी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी का 71वां जन्मदिन मनाया। इस अवसर पर हर देशवासी ने प्रधानमंत्री के स्वस्थ व दीर्घायु होने की मंगलकामनाएं की। देश और दुनिया में भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के पश्चात कई लोकप्रिय नेता हुए हैं। हर नेता की अपनी विशिष्ट कार्यशैली और क्षमता का होना स्वाभाविक है। लेकिन स्वतंत्रता आंदोलन के बाद जन्मे नेताओं में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने देश और विश्व समुदाय पर जिस प्रकार अपने नेतृत्व की छाप छोड़ी है, उसकी प्रेरक अनुगूंज आने वाली कई पीढ़ियों को प्रेरित करेगी। मानवीय स्वभाव अक्सर किसी एक व्यक्तित्व में अन्य श्रेष्ठ महात्म्य जनों की तलाश करता है। यही वजह है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी के चाहने वालों में वैश्विक नेता, समाज सुधारक, दार्शनिक और आध्यात्मिक आख्यानकर्ता तो हैं ही साथ ही मोदी जी के प्रशसंक अपने नेता को सर्वगुण संपन्न भी मानते हैं। विगत चार दशक से सार्वजनिक जीवन में होने के कारण गांव-शहर, विभिन्न जाति वर्ग, क्षेत्र और वहां के लोगों से संवाद करने का मुझे अवसर मिलता रहा है। अपने राजनीतिक जीवन में मैंने जैसी आत्मीयता जनमानस में नरेंद्र मोदी जी के प्रति देखी वह, अनिर्वचनीय है। प्रधानमंत्री मोदी की 20 वर्ष लंबी चुनावी राजनीतिक यात्रा भारतीयता और सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के साथ वैचारिक प्रतिबद्धता का अद्भुत संगम है। धारा 370 व 35-ए को समाप्त करने, सीमाओं की सुरक्षा, आतंकवाद उन्मूलन, नागरिकता संशोधन कानून समेत अनेक निर्णय पीएम की वैचारिक संकल्पबद्धता को पुष्ट करते हैं।

2014 में सेंट्रल हॉल में दिए गए भाषण में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा था कि उनकी सरकार गरीबों, वंचितों और शोषितों की सरकार होगी। यह सिर्फ भाषण के शब्द नहीं थे। श्रद्धेय मोदी जी के नेतृत्व में उनकी सरकार द्वारा लिए गए हर निर्णय में किसान, श्रमिक, दलित, महिलाएं और युवा अनिवार्य घटक हैं। 12 करोड़ किसानों को 6 हजार रुपये सम्मान निधि, 9 करोड़ से अधिक परिवारों में उज्ज्वला और 42 करोड़ जनधन खाते समाज के अंतिम छोर पर खड़े व्यक्ति के सशक्तिकरण के यज्ञ से निकले आंकड़े हैं।

विकास का शायद ही कोई अभिकरण हो, जो प्रधानमंत्री के यशस्वी नेतृत्व से पोषित न हुआ हो। तीन दशक से अधिक समय के बाद राष्ट्रीय शिक्षा नीति लाकर शिक्षा व्यवस्था को समय के साथ संस्कार और कौशल विकास से युक्त किया गया है। स्वभाषा के आधार पर राष्ट्र के विकास को नई दिशा दी जा रही है। आर्थिक सुधारों के इस क्रम में श्रम सुधारों के जरिए श्रमिकों को उनके अधिकार प्राप्त हों, यह व्यवस्था कारगर रूप से संचालित हो रही है। सामाजिक और आर्थिक सुरक्षा के विभिन्न कार्यक्रमों के जरिए हर भारतीय के जीवन स्तर को गुणवत्ता प्रदान करने का कार्य हो रहा है। गुजरात के मुख्यमंत्री से लेकर भारत के प्रधानमंत्री के रूप में नरेंद्र मोदी जी का दो दशक का कार्यकाल जनकल्याण व सुराज की दृष्टि से मील का पत्थर साबित हुआ है। गुजरात के मुख्यमंत्री के रूप में शासन संभालते ही सुशासन का सर्वस्पर्शी मॉडल उन्होंने प्रस्तुत किया, जिसे देशभर की राज्य सरकारों ने अलग-अलग रूपों में अपनाया है। भारत के प्रधानमंत्री के रूप में अब वह न्यूनतम सरकार और अधिकतम शासन के दर्शन से सुशासन को नया सोपान दे रहे हैं। देश के 130 करोड़ नागरिकों के प्रति उनकी सेवा भाव को इस बात से ही समझा जा सकता है कि वह स्वयं को प्रधान सेवक मानते हैं। छत्तीसगढ़ के प्रति पीएम मोदी का विशेष लगाव रहा है। नवंबर 2018 में बिलासपुर के साइंस कॉलेज मैदान में जनसभा को संबोधित करते हुए पीएम ने छत्तीसगढ़ महतारी के विकास प्रति अपनी प्रतिबद्धता दोहराई थी। इस अवसर पर राज्य के प्रति अपने भावनात्मक लगाव को दोहराते हुए उन्होंने कहा था कि जिस राज्य को हमने जन्म दिया, पाला-पोसा उसके विकास की जिम्मेदारी भी हमारी है। इसी क्रम में भारतीय जनता पार्टी नेतृत्व ने 17 सितंबर से 7 अक्टूबर तक बीस दिन सेवा और समर्पण अभियान के रूप में मनाने का निर्णय लिया है। आज देश विश्व की महाशक्ति बनने की राह पर है।

साहस और संवेदनशीलता के साथ भारत को नयी ऊँचाइयों पर पहुँचा रहे हैं प्रधानमंत्री मोदी

धरमलाल कौशिक

विकास का शायद ही कोई अभिकरण हो, जो प्रधानमंत्री के यशस्वी नेतृत्व से पोषित न हुआ हो। तीन दशक से अधिक समय के बाद राष्ट्रीय शिक्षा नीति लाकर शिक्षा व्यवस्था को समय के साथ संस्कार और कौशल विकास से युक्त किया गया है। 17 सितंबर को हम सभी ने देश के यशस्वी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी का 71वां जन्मदिन मनाया। इस अवसर पर हर देशवासी ने प्रधानमंत्री के स्वस्थ व दीर्घायु होने की मंगलकामनाएं की। देश और दुनिया में भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के पश्चात कई लोकप्रिय नेता हुए हैं। हर नेता की अपनी विशिष्ट कार्यशैली और क्षमता का होना स्वाभाविक है। लेकिन स्वतंत्रता आंदोलन के बाद जन्मे नेताओं में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने देश और विश्व समुदाय पर जिस प्रकार अपने नेतृत्व की छाप छोड़ी है, उसकी प्रेरक अनुगूंज आने वाली कई पीढ़ियों को प्रेरित करेगी। मानवीय स्वभाव अक्सर किसी एक व्यक्तित्व में अन्य श्रेष्ठ महात्म्य जनों की तलाश करता है। यही वजह है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी के चाहने वालों में वैश्विक नेता, समाज सुधारक, दार्शनिक और आध्यात्मिक आख्यानकर्ता तो हैं ही साथ ही मोदी जी के प्रशसंक अपने नेता को सर्वगुण संपन्न भी मानते हैं। विगत चार दशक से सार्वजनिक जीवन में होने के कारण गांव-शहर, विभिन्न जाति वर्ग, क्षेत्र और वहां के लोगों से संवाद करने का मुझे अवसर मिलता रहा है। अपने राजनीतिक जीवन में मैंने जैसी आत्मीयता जनमानस में नरेंद्र मोदी जी के प्रति देखी वह, अनिर्वचनीय है। प्रधानमंत्री मोदी की 20 वर्ष लंबी चुनावी राजनीतिक यात्रा भारतीयता और सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के साथ वैचारिक प्रतिबद्धता का अद्भुत संगम है। धारा 370 व 35-ए को समाप्त करने, सीमाओं की सुरक्षा, आतंकवाद उन्मूलन, नागरिकता संशोधन कानून समेत अनेक निर्णय पीएम की वैचारिक संकल्पबद्धता को पुष्ट करते हैं।

2014 में सेंट्रल हॉल में दिए गए भाषण में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा था कि उनकी सरकार गरीबों, वंचितों और शोषितों की सरकार होगी। यह सिर्फ भाषण के शब्द नहीं थे। श्रद्धेय मोदी जी के नेतृत्व में उनकी सरकार द्वारा लिए गए हर निर्णय में किसान, श्रमिक, दलित, महिलाएं और युवा अनिवार्य घटक हैं। 12 करोड़ किसानों को 6 हजार रुपये सम्मान निधि, 9 करोड़ से अधिक परिवारों में उज्ज्वला और 42 करोड़ जनधन खाते समाज के अंतिम छोर पर खड़े व्यक्ति के सशक्तिकरण के यज्ञ से निकले आंकड़े हैं।विकास का शायद ही कोई अभिकरण हो, जो प्रधानमंत्री के यशस्वी नेतृत्व से पोषित न हुआ हो। तीन दशक से अधिक समय के बाद राष्ट्रीय शिक्षा नीति लाकर शिक्षा व्यवस्था को समय के साथ संस्कार और कौशल विकास से युक्त किया गया है। स्वभाषा के आधार पर राष्ट्र के विकास को नई दिशा दी जा रही है। आर्थिक सुधारों के इस क्रम में श्रम सुधारों के जरिए श्रमिकों को उनके अधिकार प्राप्त हों, यह व्यवस्था कारगर रूप से संचालित हो रही है। सामाजिक और आर्थिक सुरक्षा के विभिन्न कार्यक्रमों के जरिए हर भारतीय के जीवन स्तर को गुणवत्ता प्रदान करने का कार्य हो रहा है। गुजरात के मुख्यमंत्री से लेकर भारत के प्रधानमंत्री के रूप में नरेंद्र मोदी जी का दो दशक का कार्यकाल जनकल्याण व सुराज की दृष्टि से मील का पत्थर साबित हुआ है। गुजरात के मुख्यमंत्री के रूप में शासन संभालते ही सुशासन का सर्वस्पर्शी मॉडल उन्होंने प्रस्तुत किया, जिसे देशभर की राज्य सरकारों ने अलग-अलग रूपों में अपनाया है।

शाही प्रतिहारः इतिहास की किताबों में भुला दिया गया भारत का गौरवशाली अध्याय

संजीव सिंह

ऐसे समय में जब सातवीं शताब्दी में मध्य एशिया और मध्य-पूर्व के क्षेत्र में अरब साम्राज्यवाद अपने चरम पर था तब अरब भारतीय उपमहाद्वीप में सिंध से आगे नहीं बढ़ सके। इस प्रतिरोध का कारण था भारत में उस समय स्थापित शाही प्रतिहार राजवंश का शासन, जिन्होंने इन लूटेरे इस्लामिक आक्रमणकारियों के विरुद्ध एक अभेद्य रक्षा कवच का कार्य किया और इस क्षेत्र को शान्ति और स्थिरता प्रदान की। उनके साम्राज्य ने उत्तरी भारत के सभी राजपूत वंशों को एकजुट किया। उनके सामंतों में मेवाड़ के गुहिलोत (बाद का प्रसिद्ध सिसोदिया वंश), शाकंभरी के चौहान, जेजाकभुक्ति के चंदेल, ग्वालियर के कछवाहा, दिल्ली के तोमर और गुजरात के सोलंकी सम्मिलित थे। फिर भी यह राजवंश हमारे इतिहास की किताबों में एक सम्मानजनक उल्लेख पाने में विफल रहा है। यह भारतीय इतिहास लेखन और पठन की सबसे बड़ी अनकही त्रासदियों में से एक है। वंशावलियों में प्रतिहारों ने स्वयं को भगवान राम के भाई लक्ष्मण से जोड़ा है। ऐतिहासिक रूप से बात की जाए तो सबसे पहले ज्ञात प्रतिहार शासक हरिश्चंद्र है। 861 ई. के घटियाला अभिलेख में उसे 'विप्र' (उच्च कोटि के विद्वान व्यक्ति) के रूप में संबोधित किया गया है। शाही प्रतिहारों की शाखा की स्थापना राजस्थान-गुजरात सीमा के पास भीनमाल (तत्कालीन का आबू क्षेत्र) के नागभट्ट प्रथम ने की थी। हमारी कुछ पाठ्यपुस्तकों में त्रुटिपूर्ण तरीके से प्रतिहारों को ड्डगुर्जर-प्रतिहार के रूप में बता दिया गया है, जबकि प्रसिद्ध इतिहासकार प्रो. एस.आर. शर्मा के अनुसार, शाही प्रतिहारों ने कभी भी स्वयं को 'गुर्जर प्रतिहारों ' के रूप में ऐतिहासिक रूप से सम्बोधित या संदर्भित नहीं किया है। यद्यपि इस राजवंश की स्थापना प्राचीन 'गुर्जरा' क्षेत्र (राजस्थान और गुजरात के कुछ हिस्सों) में हुई थी, परन्तु कालांतर में इस राजवंश ने मध्य प्रदेश के उज्जैन और उसके बाद उत्तरप्रदेश में कन्नौज (शर्मा, शांता रानी; 'राजस्थान के शाही प्रतिहारों की उत्पत्ति और उदय' पृष्ठ 30) से शासन किया। ऐतिहासिक रूप से, 'गुर्जर-प्रतिहार' वाक्यांश का प्रयोग मात्र एक बार हुआ है, परन्तु ध्यान देने योग्य बात यह है कि यह प्रयोग स्वयं मूल प्रतिहार वंश के किसी शासक द्वारा न किया जाकर उनके एक सामंत, राजोरगढ़ (अलवर, राजस्थान) के मंथनदेव द्वारा अपने लिए एक शिलालेख में किया गया है। प्रसिद्ध इंडोलॉजिस्ट एफ किलहॉर्न और बीडी चट्टोपाध्याय ने अलवर के इस वंश की पहचान बडगुजर राजपूतों के रूप में की (एपिग्राफिया इंडिका, घ्घ्घ्, नंबर 36; एफ किलहॉर्न द्वारा 'मंथनदेव वी.एस. 1016 का राजोर शिलालेख')। ।सिद्ध इतिहासकार और स्वतंत्रता सेनानी के.एम. मुंशी ने शाही प्रतिहारों के बारे में लिखा है, वे सभी गुर्जरदेश में 550 ईस्वी से 700 ईस्वी के बीच विभिन्न योद्धा कुलों से आए थे, जिसकी धुरी माउंट आबू का क्षेत्र था। उन्होंने आगे लिखा है , ड्डइनकी महानता का प्रमाण 550 ईस्वी में हरिश्चंद्र के अधीन 'गुर्जरदेश' साम्राज्य (आधुनिक मारवाड़) के उत्थान और तत्पश्चात उस आक्रामक शक्ति के रूप में , जो इन्होंने 725 ईस्वी में नागभट्ट प्रथम के काल में प्राप्त की जब उन्होंने अरबों को बाहर खदेड़ दिया, देखा जा सकता है।

इनके वंशज आज भी राजपूतों के नाम से जीवित हैं। वहीं 'गल्लका' शिलालेख (795 ईस्वी) बताता है कि नागभट्ट प्रथम (730-760 ईस्वी) ने भरूच के अजेय 'गुर्जर' शासकों को हराया (एपिग्राफिया इंडिर्का थ्घ्, पृष्ठ 49-57)। 'गुर्जर प्रदेश' की इस विजय के बाद, उसके समकालीन शासकों ने नागभट्ट प्रथम को 'गुर्जरेश्वर' अर्थात 'गुर्जर क्षेत्र के अधिपति' के रूप में सम्बोधित किया है । उसके वंशज वत्सराज प्रतिहार (780-800 ईस्वी) ने इस राजवंश की राजधानी को मालवा के उज्जैन में स्थानांतरित कर दिया। गल्लका शिलालेख भी नागभट्ट प्रथम और वत्सराज दोनों द्वारा अरब सेनाओं को पराजित करने की पुष्टि करता है (शांता रानी, पृष्ठ 69 और 82)। राष्ट्रकूट (राठौड़) और पालों के साथ त्रिपक्षीय संघर्ष के बाद प्रतिहारों ने कन्नौज को जीत लिया और इसे अपनी राजधानी बनाया।

भोज प्रथम या मिहिरभोज प्रतिहार (836-885 ईस्वी) के अधीन प्रतिहारों का यह साम्राज्य अपने चरम पर था और उत्तर में हिमालय की तलहटी से दक्षिण में नर्मदा नदी तक और उत्तर पश्चिम में सतलज नदी से पूर्व में बंगाल तक फैला हुआ था। 'बराह' ताम्र पत्र अभिलेख (836 ईस्वी) में भोज को ड्डपरम भगवती भक्तो महाराज भोजदेव कहा गया है। अरब इतिहासकार सुलेमान (851 ईस्वी) ने मिहिरभोज प्रतिहार का वर्णन करते हुए लिखा है, भारत के राजकुमारों में, इस्लाम का उससे बड़ा शत्रु कोई नहीं है। ग्वालियर के प्रसिद्ध 'तेली का मंदिर' का निर्माण भी मिहिरभोज प्रतिहार ने ही करवाया था। दो शताब्दियों से भी अधिक समय तक पश्चिम के इस्लामी आक्रमणों और उत्तर-पश्चिम में गजनवियों के आक्रमणों के विरुद्ध लड़ने के बाद अंततः इस वंश का पतन हुआ जिसके परिणामस्वरूप कई राजपूत राज्यों जैसे मंडोर के प्रतिहार, दिल्ली के तोमर, शाकंभरी के चौहान, पाटन के सोलंकी और चंदेलों आदि की स्वतंत्र स्थापना हुई। कन्नौज के प्रतिहार राजपूतों की आसपास के क्षेत्र में कई परवर्ती शाखाएं जैसे ग्वालियर-नरवर के परिहार, चंदेरी और 'नागोद -उंचेहरा' राजवंशों के रूप में कालान्तर में देखने को मिलती हैं । ग्वालियर पर परिहारों के शासन के प्रमाण रामदेव के 1150 ईस्वी के शिलालेख और लोहांग-देव के 119 4 ईस्वी के शिलालेख (एपिग्राफिया इंडिर्की. ॅञ्घ्घ् भाग घ्, पृष्ठ 134) में मिलते हैं। 1232 ई. में इल्तुतमिश के आक्रमण के बाद ग्वालियर के प्रतिहार वंश का अंत हो गया। गौर करने वाली बात है कि ग्वालियर किले के उत्तरी छोर पर स्थित जौहर कुंड, किसी भी राजपूत वंश द्वारा किया गया पहला वर्णित जौहर है। चंदेरी, मालवा के परिहार राजपूत शासकों के दो शिलालेख प्रतिहारों की दूसरी शाखा के साक्षी हैं। राणा सांगा के प्रसिद्ध सेनापति - मेदिनी राय जिन्होंने अपनी सेवाओं के बदले में चंदेरी का राज हासिल किया, को इस शाखा से माना जाता है (अरविंद कुमार सिंह, 'परवर्ती प्रतिहार शासक और उनके शिलालेख', इतिहास दर्पणंञ् (2) -2010, पृष्ठ। 60)। कन्नौज प्रतिहारों की एक तीसरी उप-शाखा ने महू (चरखारी) और महोबा के बीच खुद को स्थापित किया, बाद में उन्हें चंदेलों द्वारा पूर्व की ओर धकेल दिया गया। वीरराजदेव परिहार के अधीन इस शाखा ने 1344 में नागोद राज्य की स्थापना 'उंचेहरा' को राजधानी बना कर की। बघेलखंड में सतना जिले में यह परिहार (प्रतिहार के लिए अपभ्रंश) राज्य, 1947 तक प्रतिहार सत्ता का अंतिम अवशेष बना रहा (इतिहास, सतना जिला, शाही राजपत्र, पृष्ठ 300-301) शाही प्रतिहारों का शासन उस समय का स्वर्णिम काल था जिसे इतिहासकार 'राजपूत युग' कहते हैं। यह बहुत आश्चर्यजनक है कि एक वैभवशाली स्थिर हिंदू साम्राज्य इस्लामी आक्रमणों के सामने दो शताब्दियों से अधिक समय तक अस्तित्व में रहा परंतु फिर भी हमारे राजनेताओं और सरकारों ने वोट बैंक की राजनीति के कारण इतिहास के साथ छेड़छाड़ की है कि हमारी पाठ्यपुस्तकों में शाही प्रतिहारों की भूमिका की तो बात ही दिवास्वपन लगती है।

सिर्फ कोरोना से बचाव नहीं कर रहा टीका, मोदी सरकार के प्रति विश्वास भी बढ़ा रहा है

रमेश सर्राफ धमोरा

किसी भी एक देश में दिन में ढाई करोड़ से अधिक लोगों को वैक्सीन लगाना किसी आश्चर्य से कम नहीं है। यह हमारे देश के चिकित्साकर्मियों के जोश, मेहनत व जज्बे के कारण ही संभव हो पाया है। दुनिया में बहुत से देशों की तो आबादी ही ढाई करोड़ से कम है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के जन्मदिन के अवसर पर उन्हें देश-विदेश से छोटे-बड़े सभी राजनेताओं के बधाई संदेश मिल रहे थे। पार्टी कार्यकर्ता देश के विभिन्न भागों में कई तरह के कार्यक्रमों का आयोजन कर रहे थे। इसी दौरान प्रधानमंत्री मोदी के जन्मदिन के अवसर पर एक ऐसा कार्यक्रम भी संपन्न हो रहा था, जिससे दुनिया भर में भारत का सम्मान तो बढ़ा ही साथ ही देशवासियों की सुरक्षा की दृष्टि से एक मील का पत्थर स्थापित हुआ। भारत के चिकित्सा जगत से जुड़े लोगों ने प्रधानमंत्री के जन्मदिन के अवसर पर एक दिन में ही दो करोड़ पचास लाख से ज्यादा लोगों को कोरोना वैक्सीन की डोज लगाकर एक रिकॉर्ड कायम किया है। इसके लिए देश के सभी चिकित्साकर्मी व टीकाकरण से जुड़े लोग बधाई के पात्र हैं। किसी भी एक देश में दिन में ढाई करोड़ से अधिक लोगों को वैक्सीन लगाना किसी आश्चर्य से कम नहीं है। यह हमारे देश के चिकित्साकर्मियों के जोश, मेहनत व जज्बे के कारण ही संभव हो पाया है। दुनिया में बहुत से देशों की तो आबादी ही ढाई करोड़ से कम है। जबकि हमारे देश में एक दिन में ही ढाई करोड़ से अधिक कोरोना टीके की खुराक लगाई जा चुकी है। देश में कोरोना वैक्सीन का टीकाकरण बहुत तेजी से हो रहा है। देश में अब तक 18 वर्ष से अधिक आयु के 80 करोड़ से अधिक लोगों को कोरोना वैक्सीन की एक डोज लगाई जा चुकी है। जबकि करीबन 20 करोड़ लोगों को दोनों डोज लग चुकी है। देश में प्रतिमाह 20 से 25 करोड़ कोरोना वैक्सीन की डोज लगाई जा रही है। जिनका निर्माण हमारे देश में ही हो रहा है। आठ महीने के कम समय में देश में आधी से अधिक आबादी को कोरोना वैक्सीन की एक डोज लगने से देशवासियों का मनोबल बढ़ा है तथा खुद को कोरोना के संक्रमण से सुरक्षित समझने लगे हैं।

एक समय था जब देश में कोरोना वैक्सीन को लेकर बहुत मारा-मारी हो रही थी। वैक्सीन आवंटन को लेकर केन्द्र व राज्य सरकारों द्वारा एक दूसरे पर आरोप-प्रत्यारोप लगाए जा रहे थे। कोरोना वैक्सीन केंद्रों पर उमड़ रही भारी भीड़ की फोटो समाचार पत्रों की सुर्खियां बन रही थीं। केंद्र सरकार विरोधी दलों के निशाने पर थी। लोगों में टीकाकरण में होने वाली देरी को लेकर सरकार के प्रति रोष व्याप्त हो रहा था। इसके लिये केंद्र और राज्य सरकारें एक दूसरे को दोषी ठहरा रही थीं। मगर आज स्थिति पूरी तरह बदली हुई है। देश में तेजी से टीकाकरण हो रहा है। साथ ही टीकाकरण का पूरा खर्च केंद्र सरकार वहन कर रही है। पूर्व में कुछ समय तक 18 से 44 वर्ष की आयु वर्ग के लोगों के टीकाकरण की जिम्मेवारी केंद्र सरकार ने राज्यों पर डाल दी थी। जिसको लेकर केंद्र और राज्यों में टकराव की स्थिति उत्पन्न हो गई थी। इससे केंद्र सरकार की छवि खराब हो रही थी। हालांकि उस दौरान महाराष्ट्र, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, गुजरात सहित कई प्रदेश सरकारों ने अपने खर्चे से उक्त आयु वर्ग के लोगों का बड़ी संख्या में टीकाकरण भी करवाया था। फिर केंद्र व राज्य के मध्य इस बात पर सहमति बनी कि सभी को निःशुल्क टीकाकरण केंद्र द्वारा करवाया जाएगा। तब से केन्द्र टीका लगवा रहा है।

21 जून विश्व योग दिवस से केंद्र सरकार ने 18 वर्ष से अधिक उम्र के सभी लोगों को निःशुल्क टीका लगाने का कार्यक्रम शुरू करवाया था जो आज बहुत तेजी से चल रहा है। उसके बाद से टीकाकरण को लेकर केंद्र व राज्य सरकारों के मध्य व्याप्त आपसी खींचातानी व बयान बाजी भी नहीं सुनने को मिल रही है। केंद्र द्वारा चलाए जा रहे टीकाकरण कार्यक्रम में देश की सभी राज्य सरकारें पूरी सक्रियता से जुटी हुई हैं। उसी का परिणाम है कि भारत में एक दिन में ढाई करोड़ से अधिक टीकाकरण संभव हो पाया है। केंद्र सरकार का मानना है कि दिसम्बर 2021 तक देश के सभी व्यस्क 94 करोड़ आबादी को कोरोना वैक्सीन का टीका लगा दिया जाएगा। ताकि देश के लोग कोरोना जैसी वैश्विक महामारी से सुरक्षित हो सकें। हमारे देश में जिस तेजी से टीकाकरण का कार्यक्रम चलाया जा रहा है।

आईसीसी वनडे रैंकिंग में मिताली राज का जलवा बरकरार, झूलन गोस्वामी को एक स्थान का फायदा

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय महिला क्रिकेट टीम की कप्तान मिताली राज मंगलवार को जारी आईसीसी (इंटरनेशनल क्रिकेट काउंसिल) महिला वनडे रैंकिंग में टॉप स्थान पर बरकरार हैं, जबकि न्यूजीलैंड की एमी सैटरथवेट ने टॉप पांच में वापसी की। मिताली के नाम 762 रेटिंग प्वॉइंट्स हैं।

इस लिस्ट में टॉप 10 में स्मृति मंधाना भी शामिल हैं जो सातवें स्थान पर हैं। इंग्लैंड के खिलाफ पहले वनडे मैच में नाबाद 79 रन की पारी खेलने वाली सैटरथवेट ने टॉप पांच खिलाड़ियों में वापसी की। पिछली रैंकिंग लिस्ट में मिताली के साथ संयुक्त रूप से टॉप पर काबिज दक्षिण अफ्रीका की सलामी बल्लेबाज लिजेल ली लेटेस्ट रैंकिंग में दूसरे स्थान पर खिसक गई हैं। वेस्टइंडीज के खिलाफ आखिरी दो वनडे मैचों से बाहर रहने के कारण उनका एक रेटिंग प्वॉइंट घट गया। इंग्लैंड की कप्तान हीथर नाइट ने रैंकिंग में पांच स्थान का सुधार किया है।

न्यूजीलैंड के खिलाफ 107 गेंदों में 89 रनों की मैच जिताने वाली पारी के दम पर वे टॉप 10 खिलाड़ियों में जगह बनाने में सफल रहीं हैं।वे नताली साइवर और लौरा वोल्वार्ड्ट के साथ संयुक्त रूप से नौवें स्थान पर हैं।

पंजाब किंग्स पर अपना दबदबा बनाए रखने के लिए इस प्लेइंग के साथ उतर सकती है राजस्थान रॉयल्स

नई दिल्ली (एजेंसी)। आईपीएल 2021 के दूसरे हाफ में मंगलवार को पंजाब किंग्स के शेरों का सामना राजस्थान रॉयल्यस की टीम से होगा। यह मैच दुबई इंटरनेशनल क्रिकेट स्टेडियम में खेला जाएगा। दोनों टीमें अंकतालिका में बीच में खड़ी है। दूसरे चरण में दोनों टीमों का यह पहला मुकाबला है। केएल राहुल की कप्तानी वाली पंजाब किंग्स अंकतालिका में 7वें नंबर पर है, तो वहीं, संजू सैमसन की कप्तानी वाली राजस्थान रॉयल्स छठे नंबर पर है। तालिका में आगे चढ़ने के लिए राजस्थान और पंजाब के लिए इस सीजन का 32वां मैच काफी अहम होने वाला है। इस मैच में दोनों टीमें अपनी बेस्ट प्लेइंग इलेवनल के साथ मैदान पर उतरना चाहेगी ताकि वो यहां से दो अंक लेकर प्वाइंटस टेबल में अपनी स्थिति मजबूत कर सके।

इस समय दोनों टीमों के पास एक से एक विस्फोटक बल्लेबाज पड़े हैं। आईपीएल 2021 में सबसे ज्यादा छक्के लगाने वाली टॉप-3 टीमों में राजस्थान और पंजाब के बल्लेबाज शामिल हैं। ऐसे में दोनों टीमों को अपनी प्लेइंग इलेवन का चयन करने के लिए काफी माथापच्ची करनी होगी। पंजाब किंग्स के पास यूनिवर्सल बॉस के रूप में क्रिस गेल जैसा खतरनाक बल्लेबाज मौजूद है। हालांकि टीम को यह तय करना होगा कि वह कप्तान राहुल के साथ मयंक अग्रवाल और गेल में से किसे ओपनिंग करने के लिए भेजता है। पंजाब के डेविड मलान, झाय रिचर्डसन और रिले मेरेडिथ ने दूसरे चरण से अपना नाम वापस ले लिया था, लेकिन टीम को उनके रिप्लेसमेंट के तौर पर कुछ अच्छे खिलाड़ी मिले हैं। ऐसे में निकोलस पूरन, आदिल रशीद, नाथन एलिस के अलावा मार्क्रम और गेल में से वह किसी को भी प्लेइंग इलेवन में शामिल कर सकता है।

वहीं, राजस्थान रायल्स को दूसरे हाफ में तगड़ा झटका लगा है क्योंकि इंग्लैंड के जोस बटलर, बेन स्टोक्स और जोफ्रा आर्चर जैसे खिलाड़ी इस समय टीम का हिस्सा नहीं है। ऐसे में टीम इविन लुइस और आलराउंडर लियाम लिविंगस्टोन से ओपनिंग करवा सकती है। इसके अलावा यशस्वी जयसवाल भी इनिंग की शुरुआत कर सकते हैं। राहुल खुद भी पारी का आगाज कर सकते हैं। गेंदबाजों विभाग में क्रिस मौरिस तेज गेंदबाजी की अगुवाई कर सकते हैं। स्पिन विभाग में तबरेज शम्सी के आने से टीम को काफी मजबूती मिलेगी।

पंजाब किंग्सः केएल राहुल (कप्तान/विकेटकीपर), मयंक अग्रवाल, क्रिस गेल, दीपक हुडा, निकोलस पूरन, शाहरुख खान, फेबियन एलेन/राशिद खान, रवि बिश्नोई, अर्शदीप सिंह, नैथन एलिस, मोहम्मद शमी।

राजस्थान रॉयल्सः एविन लुईस, यशस्वी जायसवाल, संजू सैमसन (कप्तान/विकेटकीपर), लियाम लिविंगस्टोन, रियान पराग, शिवम दुबे, क्रिस मॉरिस, राहुल तेवतिया, कार्तिक त्यागी, मुस्तफिजुर रहमान, चेतन सकारिया/जयदेव उनादकट।

कोविड-19 के कारण भारत में जूनियर पुरुष हॉकी डब्लूसी से बाहर हुआ ऑस्ट्रेलिया

सिडनी (एजेंसी)। ऑस्ट्रेलिया ने कोविड-19 से जुड़े सरकारी यात्रा प्रतिबंधों के कारण शुक्रवार को एफआईएच (अंतरराष्ट्रीय हॉकी महासंघ) के कई टूर्नामेंटों से हटने की घोषणा की जिसमें इस वर्ष के आखिर में भारत में होने वाला जूनियर पुरुष हॉकी विश्व कप भी शामिल है। जूनियर पुरुष विश्व कप इस साल नवंबर-दिसंबर में खेला जाएगा।

इसके मैच स्थल की अभी पुष्टि नहीं की गयी है। हॉकी आस्ट्रेलिया ने इसके साथ घोषणा की कि तोक्यो ओलंपिक में रजत पदक जीतने वाली उनकी टीम और उनका ट्रांस तस्मान प्रतिद्वंद्वी न्यूजीलैंड अगले महीने से शुरू होने वाले प्रो लीग के तीसरे सत्र में भी भाग नहीं लेंगे। हॉकी आस्ट्रेलिया ने बयान में कहा, "आस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड दोनों देशों में कोविड संबंधित सरकारी यात्रा प्रतिबंध और अनिश्चितता को देखते हुए एफआईएच प्रो लीग (अक्टूबर 2021 में शुरू होने वाली) के तीसरे सत्र में हिस्सा नहीं लेंगे।" आस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड में कोविड-19 पृथकवास से जुड़े कड़े नियम हैं जिससे उनके लिये अन्य टीमों की मेजबानी करना बेहद मुश्किल बन गया है। हॉकी आस्ट्रेलिया के सीईओ माइकल जॉनस्टन ने कहा, "जोखिम का आकलन करने और और आस्ट्रेलियाई सरकार की स्वास्थ्य सलाह के आधार पर हॉकी आस्ट्रेलिया इस समय हॉकी से संबंधित विदेशी यात्राओं पर विचार नहीं कर रहा है। " भारत में होने वाले टूर्नामेंट और प्रो लीग के अलावा आस्ट्रेलिया इस साल के आखिर में दक्षिण अफ्रीका में होने वाले जूनियर महिला विश्व कप, बेल्जियम में इंडोर विश्व कप और 2022 में अमेरिका में होने वाले मास्टर्स इंडोर विश्व कप में भी भाग नहीं लेगा।

ईसीबी के भी दौरा रद्द करने पर भड़के पीसीबी अध्यक्ष रमीज राजा, बोले-

अब तक भारत हमारे निशाने पर था, लेकिन अब न्यूजीलैंड और इंग्लैंड भी होंगे

नई दिल्ली (एजेंसी)। पाकिस्तान क्रिकेट के लिए पिछला कुछ समय बिल्कुल अच्छा नहीं रहा है। पहले न्यूजीलैंड ने वनडे सीरीज शुरू होने से कुछ समय पहले अचानक दौरा रद्द कर दिया और अब इंग्लैंड एंड वेल्स क्रिकेट बोर्ड (ईसीबी) ने भी पाकिस्तान का अपना दौरा रद्द कर दिया है। इंग्लैंड की महिला और पुरुष टीम को अगले महीने अक्टूबर में पाकिस्तान का दौरा करना था, लेकिन ईसीबी ने अब अपनी दोनों टीमों को पाकिस्तान नहीं भेजने का फैसला लिया है। ईसीबी का यह फैसला पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड के नए अध्यक्ष रमीज राजा को बिल्कुल नागवार गुजरा और उन्होंने अब इंग्लैंड और न्यूजीलैंड टीम को धमकी दी है। 'क्रिकबज' ने रमीज राजा के हवाले से कहा, 'अब तक टी-20 वर्ल्ड कप में हमारे निशाने पर सिर्फ भारत था, लेकिन अब हमारे निशाने पर दो और टीम हो गई हैं।न्यूजीलैंड और इंग्लैंड ने दौरा रद्द करके अच्छा नहीं किया है और हम इसका बदला मैदान पर लेंगे। यह हमारे लिए एक सबक है, क्योंकि जब हम इन देशों की यात्रा करते हैं, तो हमें सख्त क्वारंटाइन से गुजरना पड़ता है और हम उनकी नसीहतों को बर्दाश्त करते हैं। लेकिन इसमें एक सबक है।'

बता दें कि इंग्लैंड की महिला और पुरुष टीम को पाकिस्तान की टीम के साथ रावलपिंडी में 13 और 14 अक्टूबर को दो टी-20 इंटरनेशनल मैच खेलने थे। इंग्लिश महिला टीम को साथ ही 17, 19 और 21 अक्टूबर को तीन मैचों की वनडे सीरीज भी खेलनी थी। ईसीबी ने कहा कि 2022 में मेन्स फ्यूचर टूअर्स प्रोग्राम के हिस्से के रूप में पाकिस्तान का दौरा करने के लिए उसकी लंबी प्रतिबद्धता थी, क्योंकि उसने अक्टूबर में दो अतिरिक्त टी-20 वर्ल्ड कप वॉर्मअप गेम खेलने के लिए सहमति व्यक्त की थी, जिसमें डबल हेडर के साथ पुरुष टीम के अलावा महिला टीम का भी दौरा शामिल था।

अफगानिस्तान में नहीं दिखाए जाएंगे आईपीएल 2021 के मैच, वजह है महिला दर्शकों की मौजूदगी

नई दिल्ली (एजेंसी)। तालिबान ने अफगानिस्तान में इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) के मैच ब्रॉडकास्ट करने पर रोक लगा दी है। तालिबान ने इसके लिए पहले ही अफगान मीडिया को चेतावनी दी थी कि आईपीएल में महिला दर्शक होती हैं और इस वजह से मैचों को अफगानिस्तान में ब्रॉडकास्ट ना किया जाए। तालिबान ने जब से अफगानिस्तान पर कब्जा किया है, तब से इस देश में क्रिकेट के भविष्य पर भी सवालिया निशान लग गए हैं। अफगानिस्तान के न्यूज चैनल ऊध्ध्ध् के सीनियर जर्नलिस्ट फवाद अमन ने ट्विटर के जरिए इसकी जानकारी देते हुए, इसके बहुत ही बेहूदा कदम बताया है। उन्होंने ट्विटर पर लिखा, 'बेहूदाः तालिबान ने अफगानिस्तान में इंडियन प्रीमियर लीग के ब्रॉडकास्ट पर रोक लगा दी है। तालिबान ने अफगान मीडिया आउटलेट्स को इसको लेकर वॉर्निंग दी थी कि आईपीएल के दौरान महिलाएं नाचती हैं और स्टेडियम में मैच देखने भी जाती हैं।' इससे पहले अफगानिस्तान क्रिकेट बोर्ड (एसीबी) में भी एक बड़ा बदलाव देखने को मिला। तालिबान ने अफगानिस्तान क्रिकेट बोर्ड (एसीबी) के एक्जिक्यूटिव डायरेक्टर हामिद शिनवरी को पद से हटा दिया है। शेनवारी ने अपने आधिकारिक फेसबुक पेज पर सोमवार को इसकी जानकारी देते हुए कहा कि अनस हक्कानी ने उन्हें उनके पद से हटा दिया है। हामिद ने बताया कि उन्हें पद से हटाने की कोई वजह नहीं बताई गई है, लेकिन बताया कि उन्हें कहा गया है कि नसीबुल्लाह हक्कानी उनकी जगह लेगा।

श्राद्ध-पूर्वजों के प्रति होता है सम्मान का भाव

अखंड भारत संदेश

भदोही। श्राद्ध का अर्थ है श्रद्धा, श्रद्धा सिर्फ भावना नहीं, प्राण-ऊर्जा से भी जुड़ा है श्राद्ध। अक्सर भावनाओं के स्तर पर जुड़ाव को प्रेम कहा जाता है और इस प्रेम का प्रदर्शन अपने पूर्वजों के प्रति पितृपक्ष में विशेष रूप से किया जाता है। ऐसी मान्यता है कि मृत्यु उपरांत मृत आत्मा को वायु घटित शरीर प्राप्त होता है और पितृपक्ष का अर्थ होता है, पितरों की उपासना का पक्ष। यजुर्वेद में कहा गया है कि शरीर छोड़ने के पश्चात जिन्होंने सत्कर्म,जप-तप, ध्यान किया होता है, उन्हें ब्रह्मलोक प्राप्त होता है। अर्थात वह ब्रह्मलीन हो जाते हैं। वह स्वर्ग की प्राप्ति कर लेते हैं, स्वर्ग की प्राप्ति का तात्पर्य देव तत्व की प्राप्ति से किया गया है। राक्षसी कर्म करने वाले कुछ प्रेत योनि में अनंत काल तक भटकते रहते हैं, और कुछ पुनः धरती पर जन्म ले लेते हैं। जन्म लेने वालों में यह जरूरी नहीं है कि वह मनुष्य योनि में ही जन्म ले। इसके पूर्व वह सभी पितृ लोक में रहते हैं। उक्त सभी हमारे पितर होते हैं। इस प्रकार हम जिन्हें जानते हैं और जिन्हें नहीं भी जानते हैं, सभी के लिए पितृपक्ष में अन्न-जल को अग्नि को दान करते हैं। अग्नि अन्न-जल को हमारे पितरों तक पहुंचाकर उन्हें तृप्त करती हैं। पितृ, पितामह और प्रपितामह। ऐसी मान्यता है कि मंत्र शक्ति वह सतकर्मों के आधार पर पितरों तक वंशजों की यह प्रार्थना पहुंच जाती है। शास्त्रों के नियमों के अनुसार श्राद्ध के लिए अधिकार केवल पुत्र को ही है। पुत्र के अभाव में पुत्री का पुत्र नाती को भी श्राद्ध के लिए योग्य माना गया है इस प्रकार पुत्री

के अभाव में भाई भी श्राद्ध कर सकता है। पितृपक्ष एक ऐसा समय जब हमारे मन में अपने प्रियजनों की याद ताजा हो जाती है और उनके साथ व्यतीत पल-पल फिर से हमारे दिलों-दिमाग में छा जाते हैं। इस पक्ष में हिंदू धर्म के लोग मन, कर्म, वचन के साथ आहार-विहार में संयमित जीवन जीतें हैं। पितरों को स्मरण कर जल अर्पित करते हैं, निर्धन एवं ब्राह्मणों को दान देने के साथ ही सत्कर्म करते हैं। हमारे धर्म ग्रंथों के अनुसार मनुष्य पर तीन प्रकार के ऋण प्रमुख माने गए हैं। पितृ ऋण, देव ऋण और ऋषि ऋण में पितृ ऋण सर्वोपरि है। उसमें पिता के साथ ही माता व सभी अन्य बुजुर्ग भी सम्मिलित होते हैं जिन्होंने हमें अपना मनुष्य जीवन धारण करने तथा उसका विकास करने में सहयोग दिया। जन्मदाता माता-पिता व अन्य बुजुर्गों को लोग मृत्यु उपरांत विस्मित ना कर दे इसलिए भी श्राद्ध का विशेष विधान बताया गया है। ब्रह्मा पुराण के अनुसार पितृपक्ष में विधि-विधान से तर्पण करने से पूर्वजों को मुक्ति मिलती है। यह भी कहा गया है कि पितृपक्ष में जो भी अर्पण किया जाता है वह पितरों को सीधे प्राप्त होता है। पितर अपना भाग यथा संभव पाकर प्रसन्न होते और अपने वंशजों को खुशहाली, समृद्धि का आशीर्वाद देते हैं। लेकिन यह तभी संभव है जब मनुष्य अपने संपूर्ण जीवन-पर्यंत सत्कर्म, दया, धर्म आदि नेक कार्य करता है। प्राणी मात्र सुख की प्राप्ति और दुख का आभाव चाहता है जो कर्म प्राणी करता है वह उसके फल को प्राप्त करता है।

सारे संसार में पूर्वजों की स्मृति को अक्षण्य रखने का यह एक धार्मिक साधन है। पूर्वजों की महानता का आदर करना यह एक मानवोचित कर्तव्य हैं। पितर देवताओं के समान आदरणीय और समर्थवान होतें हैं। यह श्राद्ध-तर्पण हमारे पूर्वजों, माता-पिता और आचार्यों के प्रति सम्मान का भाव है।

बिना अनुमति किया प्रचार प्रसार तो होगी कार्यवाही

नगरपालिका ने शुरु किया अभियान, तीन दर्जन लोगों को दिया नोटिस

अखंड भारत संदेश

गोपीगंज। नगर पालिका परिषद सरकारी दिवार व पिलर पर प्रचार प्रसार करने वालों पर अभियान चला कर कार्रवाई शुरु कर दी है। पिलर और दिवार पर अंकित प्रचार पर पुताई करा कर तीन दर्जन लोगों को नोटिस पकड़ा दिया है। बिना अनुमति प्रचार प्रसार पर अपने अधिकार का नगर पालिका परिषद अब कड़ाई से पालन सुनिश्चित कर दिया है। सार्वजनिक स्थानों पर लगाए गये होर्डिंग बैनर पोस्टर हटाने के साथ सरकारी दिवार व पिलर पर प्रचार प्रसार कराने वालों को नोटिस जारी करते हुए उसकी पेंटिंग कराने का निर्देश दिया गया। नगर पालिका परिषद ने खुद कर्मचारी लगा कर ऐसे स्थानों को चिन्हित कर कार्रवाई शुरु कर दी है। अधिशासी अधिकारी अमिता सिंह ने बताया कि प्रचार प्रसार कराने वालों को चिन्हित कर नोटिस जारी कर दिया गया है। ऐसे चिन्हित स्थानों को पालिका के कर्मचारी लगाकर उसकी पुताई कराई जा रही है। इसके साथ ही सार्वजनिक स्थल पर लगे होर्डिंग बैनर पोस्टर भी हटाए जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि प्रचार प्रसार करने वालों को नगर पालिका से अनुमति लेने के साथ शुल्क भी जमा करना होगा। बिना अनुमति प्रचार प्रसार करने वालों के खिलाफ विधिक कार्यवाही की जाएगी।

निष्प्रयोज्य विद्यालय से लोहे की खिड़कियां निकाल लें गए अराजकतत्व

अखंड भारत संदेश

भदोही। नगर के रामरायपुर के लोगों द्वारा सोमवार को तहसील पहुंचकर उपजिलाधिकारी को पत्र सौंपा। जिसमें प्राथमिक विद्यालय भवन को अराजकतत्वों द्वारा पूरी तरह से समाप्त करने की किए जाने का रहे कोशिश की शिकायत करते हुए कार्रवाई करने की मांग की गई। इस दौरान प्रशांत राय, सूरज राय, आदर्श राय, रोहित राय व लवकेश राय ने एसडीएम को दिए गए शिकायती पत्र में कहा कि रामरायपुर के पश्चिम-उत्तर कोने पर विद्यालय का पुराना निष्प्रयोज्य भवन स्थित है। जिसमें लोहे की दो खिड़कियां लगी हुई थी। जिसे कुछ कतिपय अराजकतत्वों द्वारा तोड़फोड़ कर निकाल लिया गया।

सिक्स लेन हाईवेः मुआवजे के लिए भटक रहे दर्जनों लोग

एनएचएआई और लेखपाल की मनमानी से अपात्रों को बांट दिया गया मुआवजा

अखंड भारत संदेश

ज्ञानपुर। राजातालाब-हंडिया सिक्स लेन निर्माण परियोजना, नेशनल हाईवे अथारिटी आफ इंडिया और राजस्व विभाग के अफसरों के लिए दुधारू गाय साबित हुई। जिले के 30 किमी परिक्षेत्र में अधिग्रहित जमीन के मुआवजा वितरण में खेल कर दिया गया। जिनके घर गिरे, वह दो साल से भटक रहे हैं, जबकि जिनका नुकसान नहीं हुआ, उन्हें 30 से 50 लाख तक मुआवजा मिल गया। परिवहन व्यवस्था दुरुस्त करने के लिए केंद्र सरकार ने तीन साल पूर्व राजमार्ग-20 को सिक्सलेन में परिवर्तित करने का निर्णय लिया गया। हंडिया से राजातालाब तक करीब 72 किमी खंड में 30 किमी का क्षेत्र भदोही के ऊंज से बाबूसराय तक आया। सिक्सलेन निर्माण में सडकों के किनारे कई लोगों की दुकान घर खेती लायक जमीन भी चली गई। एनएचएआई ने राजस्व विभाग के माध्यम से सर्वे कराकर मुआवजा वितरण शुरू किया। हालांकि इस दौरान राजस्व के अफसरों संग एनएचएआई के सर्वेयर लेखपाल आदि ने मनमानी की। औराई के जयरामपुर निवासी राकेश कोठारी, मो. सादिर, परवेज अहमद, जावेद अली, जमशेद, अख्तर, राजिद, अख्तर, इश्तियाक, इंसान अली ने मंगलवार को डीएम और एनएचएआई के परियोजना निदेशक को पत्र लिखकर मुआवजा वितरण की जांच कराने की मांग की। पत्रक में कहा कि उनके घर, दुकानें सिक्सलेन निर्माण में चली गई। तालमेल न बनने पर सर्वेयर ने वैल्युवेशन नहीं बनाया। जिससे उनको आज तक मुआवजा नहीं मिला। कुछ ऐसे लोग हैं जिन्हें कोई प्रभाव नहीं पड़ा उन्हें 49 लाख 55 लाख मुआवजा दे दिया गया। यह तो एक बानगी भर है। ऐसे कई काश्तकार भूमि अध्याप्ति विभाग के दफ्तर से लेकर एनएचएआई कार्यालय का चक्कर लगा रहे हैं। जयरामपुर ही नहीं नवधन गिराईं गोधना में भी कई काश्तकार मुआवजे के लिए भटक रहे हैं। जिलाधिकारी से मांग किया कि दोबारा अधिग्रहीत जमीन का मूल्यांकन कराया जाए।

सिक्सलेन निर्माण के शुरू होने से पूर्व जमीन का अधिग्रहण कर दो चरणों में 50 करोड़ मुआवजा राशि प्रशासन को मुहैया कराई गई। अगर बिना नुकसान किसी को मुआवजा मिला है तो यह तहसील स्तर से गड़बड़ी हुई है। गड़बड़ी करने वालों के खिलाफ पत्र लिखा जाएगा। **- एके राय, पीडी, एनएचएआई।**

'काल' के डर घरों में कैद हैं भानूपुर के बच्चे

जलनिकासी बाधित किए जाने से पूरा गांव पानी से घिरा, कई एकड़ खेती जलमग्न

अखंड भारत संदेश

मोढ/भदोही। जनपद का भानूपुर गांव पूरी तरह से पानी से घिरा हुआ है। जलनिकासी के लिए बनाई गई पुलिया दबंगों ने बंद कर रखी है। लोगों ने नीचे से लेकर ऊपर तक के अफसरों से शिकायत की, पर अब तक कोई इंतजाम नहीं किया जा सका। चौतरफा पानी भरा होने से गांव के लोग भयभीत है। कब किसका घर गिर जाए, कोई भरोसा नहीं। भय की वजह से लोग अपने बच्चों को घर से बाहर नहीं जाने दे रहे हैं। कई एकड़ खेती जलमग्न हो गई है। घरों में सीलन बढ़ रही है। धीरे-धीरे मकानों के गिरने का खतरा भी बढ़ता जा रहा है। यदि यही

चौतरफा पानी भरा होने से बाहर नहीं निकल पा रहे बच्चे, शिकायत भी बेअसर

हालात बने रहे तो यहां कभी भी गंभीर हादसा हो सकता है और इसकी सारी जिम्मेदारी यहां के प्रशासनिक अफसरों की होगी।

विकास खंड सुरियावां के ग्राम भानूपुर में जलनिकासी के लिए एक नाली बनवाई गई है। जिसे कुछ दबंग किस्म के लोगों ने बाधित कर रखा है। गांव के श्रीराम मिश्र द्वारा मुख्यमंत्री को प्रेषित प्रार्थनापत्र में बताया गया है कि जलनिकासी न होने के कारण पूरा गांव पानी से घिरा हुआ है। बीस एकड़ भूमि पूरी तरह से जलमग्न है। ऐसी स्थिति में न तो गांव के लोग बाहर निकल पा रहे हैं और न ही उनके पशु। भय के कारण के कारण बच्चों को भी बाहर निकलने से रोका जा रहा है। प्रार्थनापत्र में बताया गया है कि जिस पुलिया से पानी निकलता था, उसे कुछ लोगों ने बंद कर रखा है। इस मामले की शिकायत तहसील दिवस पर जिलाधिकारी और उप जिलाधिकारी को भी दिया गया। 18 सितंबर को उक्त प्रार्थनापत्र को खंड विकास अधिकारी के यहां भेज दिया गया है। बीडीओ ने मामले को गांव के पंचायत सचिव केहवाले कर दिया गया।

इसकेबाद स्थिति से जस की तस बनी हुई है। जबकि जलनिकासी न होने के कारण यहां की स्थिति दिन प्रतिदिन बिगड़ती जा रही है। यदि जलनिकासी का इंतजाम नहीं हुआ तो लोग पलायन को मजबूर होंगे।

महिलाओं को अगले साल एनडीए में मिलेगी एंट्री

मई तक आ जाएगा नोटिफिकेशन, केंद्र ने एससी को बताया

नई दिल्ली (एजेंसी)। एनडीए में जाने की इच्छुक महिला उम्मीदवारों के लिए खुशखबरी है। जल्द ही वह भी एनडीए के एंट्रेंस एग्जाम में बैठ सकेंगी। डिफेंस मिनिस्ट्री ने सुप्रीम कोर्ट को में जानकारी देते हुए बताया कि इसके लिए अगले साल मई तक नोटिफिकेशन जारी हो जाएगा। समय सीमा को ध्यान में रखते हुए तैयारी और प्लानिंग चल रही है। ताकि महिला उम्मीदवारों को बेहतर ट्रेनिंग दी जा सके। शीर्ष कोर्ट को दिए एक हलफनामे में रक्षा मंत्रालय ने कहा कि सरकार इसको लेकर पूरी तरह से प्रतिबद्ध है। महिला उम्मीदवारों को एनडीए के जरिए तीनों रक्षा सेवाओं में प्रवेश देने की प्रक्रिया जारी है। एनडीए एंट्रेंस एग्जाम साल में दो बार आयोजित होते हैं। मंत्रालय

ने बताया कि सरकार इस कोशिश में जुटी है मई 2022 में यूपीएससी द्वारा इसका नोटिफिकेशन जारी होने तक जरूरी व्यवस्था बना ली जाए।

रक्षा सेवाओं द्वारा विशेषज्ञों का एक स्टडी ग्रुप भी बनाया गया है। यह ग्रुप यह तय करेगा कि महिला कैडेट के लिए एनडीए में क्या करिकुलम लागू होगा। मंत्रालय के हलफनामे में इस बात की भी जानकारी दी गई है। साथ ही अफसरों का एक बोर्ड भी बुलाया गया है जो इन कैडेट्स के भविष्य के संपूर्ण ट्रेनिंग प्रोग्राम की जानकारी देगा। परीक्षा में बैठने के लिए उम्मीदवारों को जरूरी अर्हता पूरी करनी होगी। इसमें उनका वजन और लंबाई भी शामिल है। पुरुष उम्मीदवारों के लिए मेडिकल स्टैंडर्ड तय हैं, महिला उम्मीदवारों के लिए भी इसे तैयार किया जा रहा है। एकेडमी ज्वॉइन करने से पहले उन्हें इसे पास करना होगा।

महाराष्ट्रः शिवसेना के मंत्री ने बीजेपी नेता किरीट सोमैया पर ठोका 100 करोड़ का मानहानि का मुकदमा

मुंबई (एजेंसी)। महाराष्ट्र के मंत्री अनिल परब ने मंगलवार को बीजेपी नेता किरीट सोमैया के खिलाफ बॉम्बे हाई कोर्ट में 100 करोड़ रुपए का मानहानि का मुकदमा दायर किया है। अनिल परब की ओर से किरीट सोमैया के खिलाफ यह मुकदमा उनके खिलाफ दिए गए बयानों को लेकर दायर किया गया है। मानहानि का मुकदाम दायर करने से पहले परब ने सोमैया को नोटिस भेजकर लिखित में माफी मांगने, आगे ऐसे आरोप नहीं लगाने और उनके खिलाफ आरोप लगाने वाले सभी ट्वीट्स को हटाने की मांग की थी। परब ने कहा था कि अगर सोमैया माफी नहीं मांगते हैं तो वो 100 करोड़ रुपए का मानहानि का मुकदाम दायर करेंगे। हाई कोर्ट में दायर मुकदमे में महाराष्ट्र के परिवहन मंत्री अनिल परब ने सोमैया के खिलाफ भविष्य में उनके खिलाफ ऐसा कोई बयान देने या प्रकाशित करने पर स्थायी रोक लगाने की भी मांग की है।

योगी आदित्यनाथ का प्रमोशन कर बनाया जाए प्रधानमंत्री : राकेश टिकैत

लखनऊ (एजेंसी)। भारतीय किसान यूनियन (भाकियू) के राष्ट्रीय प्रवक्ता राकेश टिकैत ने मंगलवार को सत्तारूढ़ भारतीय जनता पार्टी को सलाह दी कि उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ का प्रमोशन कर उन्हें प्रधानमंत्री बना दिया जाए। साथ ही उन्होंने यह दावा किया कि भाजपा को उत्तर प्रदेश के आगामी विधानसभा चुनाव में 140 से ज्यादा सीटें नहीं मिलेंगी। मंगलवार को एक मंथन कार्यक्रम में सवालों का जवाब देते हुए टिकैत ने जहां भाजपा भाजपा को चुनाव में 140 से ज्यादा सीटें नहीं मिलने का दावा किया, वहीं यह भी कहा कि भाजपा का हारा हुआ उम्मीदवार भी जीत का प्रमाण पत्र लेकर जाएगा क्योंकि मुझे ईवीएम पर भरोसा नहीं है। तीन नये कृषि कानूनों को लेकर किसानों के आंदोलन के एक प्रमुख नेता टिकैत ने इस बात को जोर देकर कहा कि हम कोई चुनाव नहीं लड़ेंगे। टिकैत ने पूर्व में भूमि अधिग्रहण कानून के विरूद्ध मुहिम चलाने के लिए कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी की सराहना भी की।

एक प्रश्न के उत्तर में किसान नेता ने दावा किया कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी बीच में ही अपने पद से हट जाएंगे और वह राष्ट्रपति बनेंगे। उन्होंने यह भी कहा कि योगी आदित्यनाथ जी का प्रमोशन होना चाहिए वह पीएम बन जाएं। उल्लेखनीय है कि अगले वर्ष की शुरुआत में उत्तर प्रदेश में विधानसभा के चुनाव होने हैं। वर्ष 2017 के विधानसभा चुनाव में उत्तर प्रदेश की 403 सीटों में से भाजपा को 312 और उसे सहयोगी दलों को कुल 13 सीटें मिली थीं। टिकैत ने एआईएमआईएम प्रमुख असदुद्दीन ओवैसी पर विपक्ष के वोटों में बिखराव का आरोप लगाते हुए कहा कि ओवैसी पैकेज पर हैं और उत्तर प्रदेश में विपक्ष के वोटों में बिखराव करने आए हैं। गौरतलब है कि मुजफ्फरनगर के राजकीय इंटर कॉलेज में छह सितंबर को संयुक्त किसान मोर्चा द्वारा आयोजित किसान महापंचायत में टिकैत ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह और उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री आदित्यनाथ को दंगा कराने वाला और बाहरी नेता बताया और किसानों का आह्वान किया था कि इस सरकार (भाजपा) को वोट की चोट दो।

विधायक संगीत सोम का विवादित बयान, जहां-जहां मंदिर तोड़कर बनाई मस्जिद, वहां बीजेपी फिर बनाएगी मंदिर

नई दिल्ली (एजेंसी)। मेरठ की सरधना से बीजेपी विधायक संगीत सोम अपने बयानों को लेकर हमेशा चर्चा में रहते हैं। एक बार फिर संगीत सोम ने विवादित बयान दिया है। संगीत सोम ने मंगलवार को प्रेस कॉन्फ्रेंस के दौरान कहा कि प्रदेश में जहां-जहां पर मंदिर तोड़कर मस्जिद बनाई गई, वहां पर बीजेपी दोबारा मंदिर बनवाएगी। संगीत सोम ने सपा सुप्रीमो अखिलेश यादव पर निशाना साधते हुए कहा उन्हें सीजनल हिंदू कहा। बोले, अपनी सरकार में संतों पर लाठीचार्ज करवाने वाले अब हरिद्वार जाकर संतों से माफी मांग रहे हैं। प्रदेश में सरकार के साढ़े चार साल पूरे होने पर सभी 403 विधानसभाओं में विधायकों ने सरकार की उपलब्धियां गिनवाई। मेरठ के सरधना सीट के बीजेपी विधायक संगीत सोम ने भी डेढ़ सौ पन्नों का चिट्ठा लेकर प्रेस कॉन्फ्रेंस की। इस दौरान तमाम उपलब्धियां गिनाते हुए विवादित बयान देने के साथ ही समाजवादी पार्टी की अध्यक्ष अखिलेश यादव पर जमकर निशाना साधा। उन्होंने कहा कि चुनाव आते ही बहुत से लोग सीजनल हिंदू बन गए हैं और सपा सुप्रीमो अखिलेश यादव तो भगवान विश्वकर्मा का मंदिर भी बनवाने का एलान कर बैठे हैं। संगीत सोम ने कहा कि बीजेपी ने लोगों को रहने लायक माहौल दिया है। लोग सुरक्षा के भरोसे के साथ अपना काम कर रहे हैं।

सीएम बनने के बाद पहली ही फ्लाइट पर घिरे चरणजीत सिंह चन्नी, अकाली दल बोला- प्राइवेट जेट से नहीं चलते आम आदमी

नई दिल्ली (एजेंसी)। पंजाब के नये मुख्यमंत्री चरणजीत सिंह चन्नी अपने पहले ही फ्लाइट को लेकर घिर गये हैं। दरअसल चरणजीत सिंह जन्नी कांग्रेस नेताओं से मुलाकात के लिए दिल्ली पहुंचे हैं। उनके साथ पंजाब प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष नवजोत सिंह सिद्धू और डिप्टी चीफ मीनिस्टर भी पहुंचे हैं। कांग्रेस आलाकमान से मिलने के लिए यह सभी एक प्राइवेट जेट से दिल्ली पहुंचे। इनके प्राइवेट जेट से दिल्ली पहुंचने के बाद अब शिरोमणि अकाली दल ने नए मुख्यमंत्री को यह कह कर घेरा है कि आम जनता प्राइवेट जेट से नहीं चलती है। बताया जा रहा है कि दिल्ली में चरणजीत सिंह और अन्य नेता कांग्रेस के नेताओं से मुलाकात कर 18-सूत्री एजेंडे पर चर्चा करेंगे और साथ ही साथ नए कैबिनेट को लेकर भी इस मीटिंग में चर्चा होने वाली है। दिल्ली के लिए उड़ान भरने से पहले नवजोत सिंह सिद्धू ने एक तस्वीर अपने ट्विटर हैंडल से शेयर की है जिसमें वो मुख्यमंत्री के साथ प्राइवेट जेट के बाहर खड़े नजर आ रहे हैं।

इस तस्वीर को देखने के बाद अकाली दल ने इसपर प्रतिक्रिया देते हुए अपने आधिकारिक ट्विटर हैंडल पर लिखा कि, 'आम आदमी के साथ खड़े होने की बात कहने के बाद कांग्रेस के नेता चंडीगढ़ से दिल्ली महज 250 किलोमीटर जाने के लिए प्राइवेट जेट का इस्तेमाल करते हैं। क्या कोई साधारण विमान या कारें नहीं हैं, जिनका वो इस्तेमाल कर सकें यहां गांधी परिवार के दिल्ली दरबार संस्कृति का नमूना है।' यहां आपको याद दिला दें कि मुख्यमंत्री बनने के बाद चरणजीत सिंह चन्नी ने कहा था कि मैं आदमी हूं...यह आम आदमी की सरकार है।

सूत्रों ने बताया कि यह पंजाब से आई यह टीम दिल्ली में कांग्रेस महासचिव हरीश रावत के साथ मुलाकात करेगी। रावत कांग्रेस के पंजाब मामलों के प्रभारी हैं। चन्नी, रंधावा और एक अन्य उपमुख्यमंत्री ओ पी सोनी ने सोमवार को पद और गोपनीयता की शपथ ली थी । इससे दो दिन पहले शनिवार को पंजाब के तत्कालीन मुख्यमंत्री कैप्टन अमरिंदर सिंह ने त्यागपत्र दे दिया था । प्रदेश में करीब साढे चार महीने बाद विधानसभा चुनाव होने वाले हैं। बेहद विचार विमर्श एवं सलाह के बाद कांग्रेस ने चन्नी को पंजाब में विधायक दल का नेता चुना था । इसके साथ ही रंधावा और सोनी को उपमुख्यमंत्री पद के लिये चुना गया । दोनों क्रमशः जट सिख एवं हिंदू हैं । सूत्रों ने बताया कि मंत्रिमंडल में नये चेहरों को शामिल किया जा सकता है, दिल्ली की बैठक में इन उम्मीदवारों के नामों पर चर्चा होगी । इस बात के संकेत हैं कि कैप्टन के साथ सत्ता संघर्ष में सिद्धू के साथ खड़े होने वाले नेताओं को मंत्रिमंडल में जगह मिल सकती है। मंत्रिमंडल में शामिल किये जाने वालों में अमरिंदर सिंह राजा वारिंग , मदन लाल जलालपुर, इंदरबीर सिंह बोलारिया, गुरकीरत सिंह कोटली, परगट सिंह और संगत सिंह गिल्जियां का नाम चर्चा में है। परगट सिंह को सिद्धू का करीबी माना जा रहा है जो अभी पंजाब कांग्रेस के महासचिव हैं और गिल्जियां पार्टी की प्रदेश इकाई के कार्यकारी अध्यक्ष हैं ।

स्वामी चिन्मयानंद बोले

विधानसभा चुनाव से पहले महंत नरेंद्र गिरि की मौत बड़ी साजिश, सीबीआई करे जांच

शाहजहांपुर (एजेंसी)। पूर्व केंद्रीय गृह राज्यमंत्री स्वामी चिन्मयानंद ने अखिल भारतीय अखाड़ा परिषद के अध्यक्ष महंत नरेंद्र गिरि की संदिग्ध मौत के मामले की सीबीआई से जांच कराने की मांग की है। स्वामी चिन्मयानंद ने मंगलवार को संवाददाताओं से कहा कि उत्तर प्रदेश में विधानसभा चुनाव से पहले महंत नरेंद्र गिरि की हत्या एक राजनीतिक सोच है और उनकी सुरक्षा न कर पाने की खबर को मुख्यमंत्री के खिलाफ इस्तेमाल किया जा सकता है क्योंकि कुछ राजनीतिक लोग योगी आदित्यनाथ को बदनाम करना चाहते हैं। स्वामी चिन्मयानंद ने दावा किया कि नरेंद्र गिरि बड़े ही जीवट वाले व्यक्ति थे और वह आत्महत्या नहीं कर सकते थे। उन्होंने दावा किया कि नरेंद्र गिरि एक राजनीतिक दल के लोगों से संपर्क में रहे और वे लोग गिरि के काफी नजदीक थे। नरेंद्र गिरि ने बाघंबरी अखाड़े की कुछ संपत्ति बेची थी और उनके शिष्य आनंद गिरि ने पैसों के लेन-देन पर सवाल भी खड़े किए थे।

पूर्व गृह राज्य मंत्री ने कहा कि

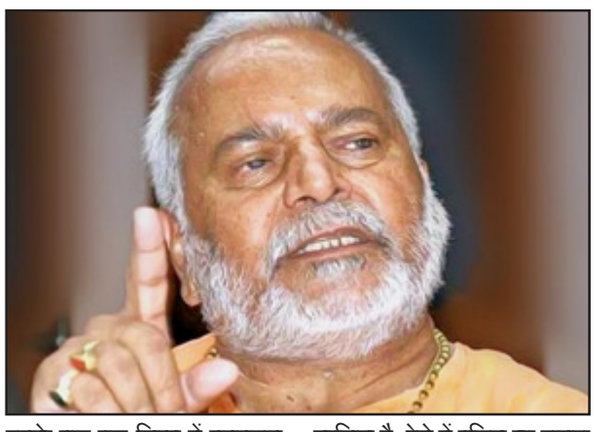

इसके बाद गुरु-शिष्य में मनमुटाव हो गया। जिनके पास नरेंद्र गिरि का पैसा था, यह उन्हीं की रची साजिश है। उन्होंने कहा कि नरेंद्र गिरि के पास से जो 'सुसाइड नोट' मिला है, उसे वह नहीं तैयार कर सकते हैं, यह उन्हीं लोगों की साजिश है, ऐसे में पुलिस का दायरा सीमित है और जहां-जहां कुंभ हुए हैं, वहां भी जांच होनी चाहिए। इसलिए इस पूरे प्रकरण की जांच सीबीआई से कराई जानी चाहिए, तभी स्थिति साफ हो पाएगी। स्वामी चिन्मयानंद ने दावा किया कि मैं स्वयं साक्षी हूं और मेरे साथ जो 'षड्यंत्र' हुआ वह भी योगी आदित्यनाथ को बदनाम करने के लिए ही हुआ। साधु-संत योगी के राज में सुरक्षित नहीं हैं, यही दिखाने के लिए यह सब घटनाएं हो रही है। गौरतलब है कि स्वामी चिन्मयानंद पर उन्हीं के लॉ कालेज की एक छात्रा ने 2019 में यौन उत्पीड़न का आरोप लगाया था। इसके बाद इस मामले की जांच एसआईटी ने की थी जिसमें स्वामी चिन्मयानंद को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया था। वहीं स्वामी चिन्मयानंद के अधिवक्ता ने चिन्मयानंद की ओर से पीड़ित छात्रा पर पांच करोड़ रुपये की रंगदारी मांगने का मामला दर्ज कराया था। दोनों मामलों में इलाहाबाद उच्च न्यायालय की लखनऊ खंडपीठ ने आरोपियों को बरी कर दिया था।

गोरखपुर में 11 साल की बच्ची से गैंगरेप,दरिंदों ने धमकाया-मुंह खोला तो मार डालेंगे

गोरखपुर (एजेंसी)। गोरखपुर के गुलरिहा इलाके में 11 साल की बच्ची के साथ सामूहिक दुष्कर्म का मामला प्रकाश में आया। आरोप है कि किसी को ना बताने की धमकी भी दी गई थी। सोमवार को पीड़ित बच्ची के पिता ने गुलरिहा थाने में तहरीर दी है। पुलिस ने दोनों आरोपियों दीनदयाल और गोविंद के खिलाफ गैंग रेप का केस दर्ज किया है।पिता ने तहरीर में लिखा है कि वह चेन्नई में पेंट पालिश का कम करता है। पत्नी की मौत हो चुकी है। घर में दो बेटियों के अलावा बुजुर्ग माता-पिता रहते हैं। 12 सितंबर की रात में मां-बाप घर के बाहर सोए थे। बेटियां दूसरी मंजिल पर थी। सीढ़ी के रास्ते गांव के ही दो युवक वहां पर पहुंच गए। छोटी बेटी की नींद खुली तो एक ने दुपट्टों से उसका मुंह दबा दिया और दूसरा बड़ी बेटी के साथ दुष्कर्म करने लगा। मुंह दबाए युवक ने छोटी बेटी से कहा कि अगर शोर मचाई तो छत से नीचे फेंकर हत्या कर दूंगा।

केरल में 'लव जिहाद' पर बीजेपी की मांग, शादी के नाम पर धर्मांतरण रोकने को बने कानून

तिरुवनंतपुरम (एजेंसी)। केरल में भाजपा ने मंगलवार को वाम सरकार से विवाह के नाम पर धर्म परिवर्तन को रोकने के लिए एक कानून लाने का आग्रह किया। बीजेपी का आरोप है कि धर्मांतरण के नाम पर आतंकवादी गतिविधियों के लिए भर्ती की जा रही है। वरिष्ठ नेता और पार्टी के राज्य महासचिव जॉर्ज कुरियन ने कहा कि भाजपा प्रेम विवाह के खिलाफ नहीं है, बल्कि धर्मांतरण के लिए प्रेम संबंधों का विरोध कर रही है। उन्होंने आरोप लगाया कि राज्य की लड़कियों को प्यार का ढोंग करके अफगानिस्तान और सीरिया में आतंकवाद के लिए धर्मांतरण कराया गया था। उन्होंने आरोप लगाया कि इस तरह के धर्मांतरण इस्लाम के लिए नहीं बल्कि विनाश के लिए थे।

कुरियन ने एक संवाददाता सम्मेलन में कहा, ठएक मजबूत कानून के जरिए ही लव जिहाद को जड़ से खत्म किया जा सकता है। इसलिए राज्य सरकार को विवाह के नाम पर धर्मांतरण रोकने के लिए एक कानून लाना चाहिए ताकि उन्हें आतंकवादी गतिविधियों के लिए भर्ती करने से रोका जा सके। बीजेपी नेता ने दावा किया कि जो लोग कहते हैं कि 'लव जिहाद' शब्द को परिभाषित नहीं किया गया है, उन्हें इस तथ्य को नहीं भूलना चाहिए कि संविधान में 'धर्म' की भी व्याख्या नहीं की गई है। उन्होंने आगे कहा कि लव जिहाद की कथित प्रथा को रोकने के लिए केरल में कर्नाटक और उत्तर प्रदेश जैसे राज्यों ने जो कानून लाया था, उसके समान एक कानून बनाया जाना चाहिए। उसके बाद ही धार्मिक समुदायों के बीच की दूरी को पाटा जा सकता है, अन्यथा, इस संबंध में सभी चर्चा सतही होगी।

उन्होंने कहा कि अन्य सभी राज्य ड्रग माफिया के खिलाफ कड़ा रुख अपना रहे हैं वहीं, केरल सरकार इस खतरे को रोकने के लिए कोई प्रभावी हस्तक्षेप नहीं कर रही है। बीजेपी नेता ने कहा कि आतंकवादी देश विरोधी गतिविधियों के लिए नशीली दवाओं के व्यापार के माध्यम से अर्जित धन का उपयोग कर रहे थे।

भस्मासुर बना तालिबान, अपने ही सुप्रीम लीडर अखुंदजादा का कत्ल, मुल्ला बरादर को बना लिया बंधक : रिपोर्ट

लंदन (एजेंसी)। अफगानिस्तान में सत्ता पाने के बाद आपस में खूनी संघर्ष ने तालिबान को बड़ा झटका दिया है। ब्रिटेन की एक मैगजीन ने दावा किया है कि कुर्सी की इस लड़ाई में तालिबान के सर्वेसर्वा हिबतुल्लाह अखुंदजादा की मौत हो गई है और उप प्रधानमंत्री मुल्ला बरादर को बंधक बनाकर रखा गया है। सत्ता के लिए यह संघर्ष तालिबान के ही दो धड़ों के बीच हुआ था। मैगजीन ने यह भी बताया कि हक्कानी धड़े के साथ इस झगड़े में सबसे ज्यादा नुकसान मुल्लाह बरादर को ही पहुंचा है। ब्रिटेन की मैगजीन ने अपनी रिपोर्ट में बताया है कि सितंबर माह में तालिबान के दोनों धड़ों की बैठक हुई थी। इस दौरान एक मौका ऐसा भी आया जब हक्कानी नेता खलील-उल रहमान हक्कानी अपनी कुर्सी से उठा और उसने बरादर पर मुक्के बरसाने शुरू कर दिए। बरादर लगातार तालिबान सरकार के कैबिनेट में गैर-तालिबानियों और अल्पसंख्यकों को भी जगह देने का दबाव बना रहा था ताकि दुनिया के अन्य देश तालिबान सरकार को मान्यता दें।

इस झड़प के बाद बरादर कुछ दिनों के लिए लापता था और अब एक बार फिर से उसे कंधार में देखा गया है। रिपोर्ट के मुताबिक, बरादर ने आदिवासी नेताओं से मुलाकात की है, जिनका समर्थन भी उसे मिला है। हालांकि, बरादर पर दबाव बनाकर उससे वीडियो संदेश जारी किया। मैगजीन ने दावा किया कि इस वीडियो से ऐसे संकेत मिल रहे हैं कि बरादर को बंधक बना लिया गया है।अखुंदजादा को लेकर रिपोर्ट में कहा गया है कि अभी तक यह पता नहीं लग सका है कि वह कहां है। वह काफी समय से न तो दिखा है और न ही उसका कोई संदेश ही जारी किा गया है। ऐसे में यह कयास लगाए जा रहे हैं कि अखुंदजादा की मौत हो गई है। तालिबान में इससे पहले सत्ता को लेकर ऐसा संघर्ष नहीं देखा गया था। तालिबान और हक्कानी नेटवर्क 2016 में एक हो गए थे। बरादर की कोशिश थी कि वह तालिबान की एक अलग छवि पेश करे ताकि दुनिया उसे मान्यता दे।

अंखड भारत संदेश के लिए स्वामी श्री योगी सत्यम क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान संस्थान झूंसी, प्रयागराज 211019 से प्रकाशित एवं रामा प्रिंटिग प्रेस 53/25/1ए बेली रोड नया कटरा प्रयागराज से मुद्रित।

मुद्रक/प्रकाशक

स्वामी श्री योगी सत्यम पी.आर.बी. एक्ट के अन्तर्गत समाचारों के चयन के लिए उत्तरदायी। इस समाचार पत्र में प्रकाशित समस्त समाचारों से संबंधित विवादों का न्याय क्षेत्र प्रयागराज होगा। आरएनआई नं.

UPHIN 2001/9025

दुनियाभर के नेताओं से यूएन प्रमुख बोले- विश्व कभी भी इतना विभाजित नहीं था, हम रसातल के कगार पर हैं

संयुक्त राष्ट्र (एजेंसी)। संयुक्त राष्ट्र महासचिव एंतोनियो गुतारेस ने मंगलवार को विश्व नेताओं से कहा कि विश्व कभी भी इतना अधिक विभाजित नहीं हुआ था या इतना अधिक संकट से नही गुजरा था। उन्होंने कोविड -19 महामारी, जलवायु संकट और अफगानिस्तान और अन्य देशों में शांति को प्रभावित करने वाले उथल-पुथल का जिक्र करते हुए आगाह किया कि विश्व गंभीर संकट का सामना कर रहा है। गुतारेस ने संयुक्त राष्ट्र महासभा के 76वें सत्र की आम बहस की शुरुआत के अवसर पर अपने संबोधन में कहा कि मानवाधिकार निशाने पर है, विज्ञान पर हमले हो रहे हैं और सबसे कमजोर लोगों के लिए आर्थिक उम्मीद बहुत कम तथा बहुत देर से आ रही है। इसके लिए कार्रवाई में एकजुटता नहीं है जबकि दुनिया को इसकी सबसे ज्यादा जरूरत है।

उन्होंने कहा कि मैं यहां आगाह कर रहा हूं, विश्व को जगना चाहिए। हम रसातल के कगार पर हैं और गलत दिशा में आगे बढ़ रहे हैं। हमारी दुनिया के लिए कभी भी इतना अधिक संकट नहीं था। या इतनी अधिक विभाजित नहीं थी। हम अपने जीवन काल में सबसे बड़े संकटों का सामना कर रहे हैं। पिछले साल कोविड -19 महामारी के कारण वार्षिक उच्चस्तरीय सप्ताह भर की बैठक डिजिटल तरीके से की गई थी। लेकिन इस बार यह 'हाइब्रिड' प्रारूप में लौट आया है जिसमें 100 से अधिक राष्ट्राध्यक्षों और शासनाध्यक्षों के साथ ही विदेश मंत्रियों और राजनयिकों को प्रतिष्ठित महासभा कक्ष में उपस्थित होकर संबोधित करने का कार्यक्रम है। दुनिया के सामने मौजूद संकटों का जिक्र करते हुए गुतारेस ने कहा कि कोविड-19 महामारी ने भयावह असमानताओं को बढा दिया है, वहीं जलवायु संकट ग्रह को परेशान कर रहा है, अफगानिस्तान से इथियोपिया से यमन और अन्य स्थानों पर उथल-पुथल ने शांति को बाधित कर दिया है और दुष्प्रचार लोगों का ध्रुवीकरण कर रही है और समाज को पंगु बना रही है। उन्होंने कहा कि कोविड-19 महामारी से 46 लाख से अधिक लोगों की मौत हो गई और वैश्विक स्तर पर 22.8 करोड़ से अधिक लोग संक्रमित हुए। इस बीमारी के टीके ने पहुंच और सामर्थ्य को लेकर विभिन्न देशों के बीच स्पष्ट असमानताओं को पर्दाफाश कर दिया है।